मदन सीरीज का अनोखा विशेषांक

बदीन का बाग़ी

उपन्यासकार :
जयकुमार 'मायावी'

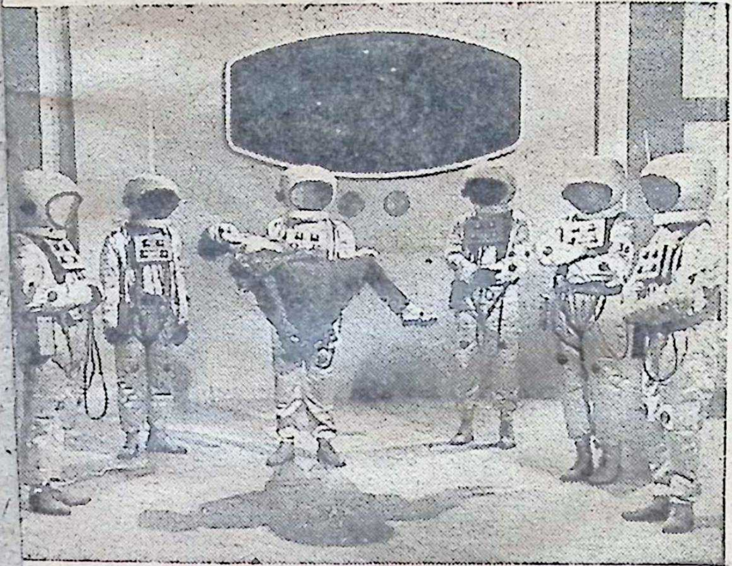

लंका के उस होटल में चीनी सुन्दरी लूसी को [illegible] साथ [illegible] की तरह चिपका दिया [illegible] मैं भी उससे ऐसा चिपका जैसे [illegible], मदन ने कहा और वह खिलखिला कर हँस दिया......

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन है ।

आगामी अंक

में

घुसपैठिया

ले०—जयकुमार 'मायावी'

- जी हाँ घुसपैठिया—मगर पाकिस्तानी नहीं— भारतीय।
- चार घुसपैठिये — दो ठग और दो जासूस
- मुनीर को न जाने क्या सूझी कि मदन की महबूबा को उठा ले गया और चैलेंज दे गया कि अगर मर्द हो तो.........।
- दो ठगों ने घुसपैठ की—मदन और आर्म स्ट्रोंग ने। एक नया पात्र आर्मस्ट्रोंग जिसे मदन अपना इंगलिश एडिशन कहता था।
- घुसपैठ की दो जासूसों ने — कर्नल राज और कैप्टेन हीरासिंह ने
- शत्रु के देश में चारों मिले तो मुनीर की हालत बिगड़ गई।
- मदन अपनी महबूबा सोनानायके को तो निकाल ही लाया मगर साथ ही निकाल लाया.......
- हास्य व्यंग, रहस्य—रोमांच और अनोखे दाव पेचों से ओत-प्रोत उपन्यास जो आपको सदा याद रहेगा – उसके पात्र आपको सदा याद रहेंगे।
- 'वतन का बागी' की आकर्षक कहानी का शेष भाग है घुसपैठिया
- कई अन्य आकर्षण भी सुन्दर आकर्षक मुख पृष्ठ – बढ़िया छपाई पाकेट बुक साइज

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय 93159

न्यूयार्क का शानदार नाइट क्लब ब्लैक बर्ड।

मगर रोशनी में ऐसा नहाया हुआ था कि उसे ब्लैक बर्ड की बजाय व्हाइट बर्ड कहा जाता तो अधिक उपयुक्त होता। वहां हर चीज व्हाइट थी।

हसीन चेहरे, गदराये जवां जिस्म अपने मित्रों और अपने चाहने वालों के साथ पीने पिलाने में व्यस्त थे। बीच बीच में उनके सुरीले कंठों से कहकहे भी फूट पड़ते थे जिनसे हाल के वातावरण मे संगीत सा घुल जाता था। इस पर आरकस्ट्रा की मधुर स्वर लहरी सोने में सुगन्ध का काम कर रही थी।

वह हाल उस समय भौतिकवादी अमेरिकनों की जन्नत बना हुवा था।

अन्तर्राष्ट्रीय ठग मदत एक मेज पर दो हसीन लड़कियों से घिरा हुवा बैठा था। उस वक्त उससे कोई पूछता तो वह जरूर अपनी शैली में उत्तर देता कि भई हाई वोल्टेज वाले जनरेटरों के बीच में बैठा हूं।

मय थी-मैकशी चल रही थी।

उसके ठीक सामने की कुर्सी खाली पड़ी थी। पीने पिलाने से जब भी उसे कुछ फुर्सत मिल जाती तो वह हसरत भरी नजरों से उस कुर्सी को देख लेता फिर उसकी निगाहें हाल के दरवाजे की तरफ उठ जातीं मगर निराश होकर लौट आतीं।

एक युवती ने पूछ लिया 'किसी का इन्तजार है क्या डीयर व्हाइट ?'

'है क्यों नहीं डीयर—वर्ना दो खिलौनों से क्या मैं अकेला खेलूंगा ?'

बेचारी शर्मा गई।

तभी एक तगड़े से व्यक्ति ने हाल में प्रवेश किया।

कुछ देर वहीं रुक कर उसने हाल में बैठे व्यक्तियों पर नजरें दौड़ाईं। वह जान लेना चाहता था कि उसका साथी किस मेज पर बैठा है। एक मेज पर से एक हाथ उठा और उसे मेज पर आने का इशारा किया। वह उधर ही बढ़ गया।

मुस्कुराता हुवा वह मेज की तरफ बढ़ गया, उसने अपने मित्र को पहचान भी लिया मगर उसके पास दो युवतियों को बैठे देखकर उसे कुछ आश्चर्य हुवा। न उसने औपचारिकता निभाई और न दुआ सलाम की, बस कुर्सी खींची और अपने मित्र के ठीक सामने बैठ गया। दोनों हाथ मेज पर टिका दिये।

सामने बैठा मदन बोला मिस्टर मजबूत हाथ ! याने मि० आर्म स्ट्रांग !'

'यस बास !' उसने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

बास गया साला तेल लेने—पहले यह बताओ कि तुम लेट क्यों आये ?'

'लेट आया नहीं भाई—लेट होगया।' उसने सफाई दी।

'मगर सवाल यह है कि क्यों ? क्यों लेट हो गये ? हम यहाँ इन्तजार में घिस घिस के हाथी हुए जा रहे है सो।'

'गाड़ी में कुछ गड़बड़ थी डीयर' आर्म स्ट्रांग ने ब्योरा देना शुरू किया दर असल स्पार्क प्लग ठीक से काम नहीं कर रहा था। नया लाकर लगाना पड़ा तब कहीं जाकर पहुँच पाया हूँ वर्ना...

'वर्ना मैं तुम्हारा स्पार्क प्लग तोड़कर रख देता—समझे ?'

'समझ गया बाबा समझ गया।' इस प्रसंग को समाप्त करने के लिये आर्म स्ट्रांग ने हथियार डाल देना ही उचित समझा ताकि मूड न बिगड़ने पाये।

दोनों युवतियां न तो हिन्दी जानती थीं और न समझती थीं इस लिये इन दोनों की शक्लें ही देखती रहीं। बीच बीच में एकाध घूंट भी भर लेती थीं।

'मि० मदन !' आर्मस्ट्रांग ने बात छेड़ी।

'यस मि० मजबूत हाथ'

'हम यहां अधिक देर नहीं ठहर सकेंगे दोस्त !''

क्यों भाई ? क्या तकलीफ है आपको ? पाखाने की हाजत लगी है क्या ?'

इस बार आर्मस्ट्रांग भी कुछ गरम हुआ 'यार तुम एक दम ढींच हो।'

मगर मदन पर भला क्या असर होता। अपनी गिलास खाली करके रखते हुए उसने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया 'भले आदमी ! कभी तो नई बात कहा कर।'

वैसे आर्मस्ट्रांग जानता था कि मदन से बहस करने में, या बातों में जीतना उसके बस का नहीं है फिर भी उसने कई बार कोशिश की थीं कि इस मदन नाम के पशु की खोपड़ी में फिट की गई मशीन की जांच करे उसका मेकर मालूम कर ले मगर इसमे उसे सफलता आज तक नहीं मिल पाई थी।

आर्मस्ट्रांग ने अपना गिलास खाली करके रखा और उधर से निकलते हुए बेयरे को अपने पास बुलाया। बेयरा पास आकर जरा सा झुका और बोला 'यस सर !'

बिल ले आओ जल्दी' आर्मस्ट्रांग ने आर्डर दिया।

उसके जाने के बाद मदन ने उससे कहा 'बिल की तलब क्यों है प्यारे, बिल में घुसने की इच्छा हो रही है क्या ?'

खीजकर उसने उत्तर दिया—नहीं बाहर निकलने की फिकर है।

बिल आगया तो आर्मस्ट्रांग ने पेमेंट किया, टिप भी दिया और दो दो डालर दोनों लड़कियों की मुट्ठी में ठूंसे और उठ खड़ा हुवा।

मदन के पास आकर उसने उसे भी बांह पकड़ कर उठाया और दरवाजे की तरफ चल दिया।

गाड़ी में बराबर की सीट पर मदन को बिठा कर उसने गाड़ी स्टार्ट करदी। जब गाड़ी मेन रोड पर आगई तब मदन ने पूछा 'हे महल मूर्ख व्यक्ति ! आखिर कुछ बता तो सही कि माजरा क्या है ? खुदाई फोजदार की तरह मुझे स्वर्ग से निकाल कर ले कहां जा रहा है ? जल्दी से बको वर्ना मैं गाड़ी से कूद पड़ूंगा।'

'हम शापिंग को चल रहे हैं डीयर' आर्म ने सही बता दी।

'लानत है मजबून हाथ तुझ पर, भगवान करे तेरे सिर में, तेरे कपड़ों में जुऐं पड़ जायें और तुम रात दिन खुजाते रहो।' मदन ने भड़क कर उसे दुआ दे डाली और फिर झिड़कने लगा' यह शापिंग भी ऐसा भारी काम है जिसे तुम अकेले न कर सके और मुझे जन्नत में से घसीट लाये ?'

'यह साधारण शापिंग नहीं है डीयर'

'तो इसमें असाधारण क्या है ?'

'असाधारण यह है कि मुझे कल तवेरे ही सफर पर जाना है।'

'कहां ? कहां का सफर करना है ?' मदन ने चौंक कर पूछा।

'करांची जाने के आर्डर मिले हैं मदन।'

'किस खुशी में प्यारे ?' मदन ने भी बात में दिलचस्पी लेते हुए पूछा।

'फैक्ट्री में जो राडार यन्त्र बन रहा था वह तो तुम जानते ही हो कि पूरा हो चुका है। इस खुशी में हम चार रोज की छुट्टी मनाते रहे और उसे पैक कर दिया गया और जहाज पर भी चढ़ा दिया गया है सारा लदान चेक करके आ रहा हूं। सुबह उसी जहाज से माल के साथ जाना पड़ेगा।'

मदन सोच में पड़ गया।

इस सोच में नहीं कि यह भारी यन्त्र करांची क्यों जा रहा है बल्कि

इस लिये कि उसका यार आर्य स्ट्रांग जा रहा है इस लिये। इसके साथ खूब अच्छी गुजर रही थी मगर भाग्य चक्र को यह पसन्द नहीं था कि मदन शान्त रहे और एक जगह जम कर बैठे।

'एक दम करांची जाओगे ?' मदन ने पूछ लिया।

पेकिंग केसेज पर तो लिखा है' बदीन वाया करांची' पाकिस्तान 'मगर मुझे नहीं मालूम कि यह बदीन क्या बला है ?'

'होगा यार कुछ। तुम सुबह जहाज से जाओगे ना ?'

'हाँ'

'दोपहर तक मैं भी कहीं न कहीं चल दूंगा तब तो। 'मदन ने निर्णय दिया।

'कहां जाओगे ?'

'अभी कुछ नहीं कह सकता आर्म—सोचूंगा। फिलहाल यह तो पक्का ही समझो कि यहां से कोलम्बो तो जाऊंगा ही। रास्ते में ही प्रोग्राम बनाऊंगा। अगर कहीं का प्रोग्राम नहीं बना तो अलंकार द्वीप चला जाऊंगा।'

'वहां कौन है ?'

'वहां यारों के यार लोग हैं प्यारे ! जो पलकों पर बिठाते हैं दिलों में जगह देते हैं।' अलकार और वहां बैठे प्रियजनों की याद में आंखें बन्द करके झूमते हुए उसने कहा 'उन लोगों से किसी प्रकार का नाता रिश्ता नहीं है मगर फिर भी एक अदृश्य बंधन से बंध गया हूं उन लोगों के साथ। बस-आर्म-सीधा वहीं जाऊंगा।'

दोनों मित्रों ने शापिंग की। अपनी अपनी जरूरत की चीजें खरीदीं और घर आकर अपने आगामी सफर की तैयारी में जुट गये।

दिल्ली रमण रेवती
कल्याणी रेवती स्मारक

२

अलंकार का शेष दुनिया से सम्बन्ध कोलम्बो होकर ही था ।

बाहर से जो भी संदेश अलकार के लिये आते या अलंकार से बाहर वालों के लिये जाते सब वहीं से होकर जाया करते थे । लंका सरकार को किसी प्रकार का सन्देह न हो इसलिये यह सूचना केन्द्र लंका के डाक तार विभाग के आधीन रखा गया था । इसका निर्माण किया अलंकार ने, कर्मचारी रखे गये लंका के और उनके वेतन आदि का भार उठाता था अलकार । लाग लपेट और धोखा धड़ी क कोई बात नहीं थीं इस लिये ये सम्बन्ध मधुरतम होते गये और दोनों सरकारों की घनिष्ठता यहां तक बढ़ गई कि लंका सरकार ने अपने बंदरगाह और अपने एयरोड्रोम भी अलंकार वालों के लिये खोल दिये । अलबत्ता पूर्व सूचना देकर औपचारिक अनुमति प्राप्त करना आवश्यक नियम रखा गया ताकि कागजों में खानापूर्ति होती रहे ।

मदन ने कोलंम्बो पहुँचते ही मि० सुदर्शन के नाम एक मैसेज दिया जिसमें उसने इच्छा प्रकट की कि कुछ दिन के लिये वह अलकार में रहना चाहता है । घण्टे भर में ही उधर से उत्तर मिल गया 'इजाजत भी है और स्वागत भी । हमारा प्लेन तुम्हें लेने के लिये पहुँच रहा है ।...लोचन'

गद्‌गद् हो गया मदन ।

एक दो कप चाय पीकर, सिगरेटें पी-पी कर उसने घण्टा भर गुजारा ।

ठीक दो बजे, जब वह ऐयरो ड्रोम के वेटिंग रूम में एक बेंच पर पैर फैलाये पड़ा पड़ा सिगरेट फूंक रहा था वायरलैस आफिस के एक बाबू ने आकर उसे टोका ।

'आपका ही नाम है ना मि० मदन ?

'जी हां—हैं तो सही ।' उसने सीधे बैठते हुए स्वीकार किया ।

'अलंकार से प्लेन आगया है जनाब, आप तैयार हो जाइये और

मैदान में पहुंच जाइये ।' उसने इतना ही कहा और अपने आफिस की तरफ चला गया ।

विशेष सामान ही क्या था उसके पास ? बस अपना सूटकेस उठाया और वेटिंग रूम से निकल कर मैदान में चला आया । उसे आश्चर्य इस बात का हो रहा था कि प्लेन आया तो उसे आवाज क्यों नहीं सुनाई दी ।

आवाज अब भी नहीं आ रही थी ।

आकाश की तरफ नजरें उठाईं ।

एक हल्का काला सा धब्बा धीरे-धीरे चील का आकार धारण करता जा रहा था । न आगे बढ़ रहा था और न ही चक्कर लगा रहा था बल्कि एक दम सीधा नीचे उतरता चला आ रहा था जैसे आसमान से कोई उल्का पिंड टूट कर सीधा धरती पर आ रहा हो या जैसे गिद्ध पंख फैला कर धरती पर उतर रहा हो ।

काफी नीचे उतर आने पर मदन ने देखा कि हल्के आसमानी रंग का सुन्दर सा छोटा हवाई जहाज है । आखिर प्लेन नीचे आता आता धरती पर आ टिका ।

शॉक अब्सोर्वेशन के लिये पहियों पर लगी मजबूत गोल गोल स्प्रिगों पर वह एक दो मिनट लचकता रहा और फिर स्थिर हो गया ।

फाटक खोल कर युवक चालक बाहर निकल आया । उसने उतरते ही वेटिंग रूम की तरफ देखा और उधर ही बढ़ा भी मगर ज्यों ही उसने मदन को देखा वह मुस्कराया और वंदना की मुद्रा में हाथ जोड़ कर अभिवादन करता हुवा उसी की तरफ आगया । पास आकर उसने कहा 'नमस्कार मदन महाशय !'

मदन को आश्चर्य हुवा कि चालक को नाम तो मालूम हो सकता है मगर इसने मुझे पहचान कैसे लिया ? 'नमस्कार बंधु !' चालक के अभिवादन का उत्तर देते हुए उसने पूछ ही लिया 'तुमने यह कैसे अनुमान लगा लिया कि मैं ही मदन हूं ?'

बड़ा शानदार जवाब दिया चालक ने । वह नम्रता से बोला

'महाशय ! मैं आपको पहचानता हूं क्योंकि मैं महर्षि सुदर्शन के देश से आया हूं ।'

'ठीक है भाई ठीक है ।' मदन को माकूल जवाब मिल गया । उसे याद आ गया कि जहाँ मि० सुदर्शन हों वहाँ ऐसी चमत्कारिक बातों का होना साधारण बात है । अधिक पूछ ताछ उसने बेकार समझी ।

चालक ने नम्रतापूर्वक कहा 'सिर्फ पाँच मिनट के लिये क्षमा चाहूँगा आपसे, कण्ट्रोल रूम में जाकर अपनी आमद नोट करा दूँ और रवानगी भी । ठीक पाँच मिनट बाद हम रवाना हो सकते हैं अगर आपको कोई काम न हो तो ?'

'बेफिकर रहो—मुझे कोई काम नहीं है ।' मदन ने उत्तर दिया ।

चालक हँसता हुवा कण्ट्रोल रूम की तरफ चला गया और मदन प्लेन की ओर बढ़ गया । अपना सूट केस उस सुन्दर और मजबूत दिखाई देने वाले यान के पंखे के नीचे रख दिया और वहीं खड़े खड़े यान का निरीक्षण करने लगा ।

पाँच सात मिनिट बाद ही चालक लौट आया ।

उसने मदन का सूट केस अन्दर रखा, मदन को भी चढ़ाया और इंजन स्टार्ट कर दिया । हल्की हल्की घर घराहट सुनाई दी और प्लेन धीरे धीरे ऊपर उठने लगा ।

करीब दो सौ फीट ऊँचाई ग्रहण करने के बाद यान एक हल्के से झटके के साथ आगे बढ़ने लगा । इसमें कुछ दो तीन मिनिट ही लगे ।

चौथे मिनिट में यान ने और अधिक ऊचाई ग्रहण की और उसने गति भी पकड़ी और देखते ही देखते वह तीन हजार फीट की ऊंचाई पर तीन सौ मील प्रति घण्टा की रफ्तार से उड़ने लगा । मदन उस छोटे और हल्के विमान की कार्य क्षमता पर आश्चर्य चकित और खामोशी से उसका संचालन देख रहा था ।

'मिस्टर पायलट !' मदन ने मौन भंग करके चालक का ध्यान आकर्षित और पूछा 'तुमने अपने बारे में कुछ नहीं बताया ।'

'बताने जैसी कोई बात हो तब ही बताऊँ ना ?' बालक ने नम्रता पूर्वक कहा।

'फिर भी परिचय तो मिलना ही चाहिये।'

'मेरा नाम शेखर है और मैं बी० ए० का छात्र हूँ।'

मदन की समझ में ये दो विरोधी बातें नहीं आईं कि यह लड़का कोलेज का विद्यार्थी है तो फिर पायलेट कैसे हो सकता है ?

यान को एक हल्का सा झटका लगा जैसे पीछे से पकड़कर रोका हो। मदन ने चौंक कर इधर उधर देखा तो शेखर ने बताया 'हम इस समय हिन्द महासागर और बंगाल सागर की सीमा रेखा पर हैं श्रीमान् और मैंने प्लेन की गति कम कर दी है इस लिये आपने झटका महसूस किया है।

'चाल कम क्यों कर दी ?'

'क्यों कि हम पहुंच रहे हैं।'

मदन ने खिड़की स बाहर झांका।

दूर दूर तक फैला महासागर और उसके बीच में प्लेन से कुछ बांये अलकार द्वीपे, ऊचे ऊचे बनाच्छादित पहाड़ और नारियल के पेड़ो से ढका समुद्र तट। समुद्र में तैरती छोटी छोटी नावें। पहाड़ों की घनी वनस्पति में रजत धार सी चमकती अलंकार की नादयां। बड़ा मनोरम दृश्य था।

यान जरा सा बांये मुड़ा गति कम हुई और धीरे धीरे वह नीचे उतरने लगा। ज्यों ज्यो ऊंचाई कम होता गई नीचे की छोटी छोटी चीजें स्पष्ट और दीर्घाकार होती चली गई। द्वीप के उत्तरी किनारे पर ही था ऐयरोड्रोम सो प्लेन उधर सी बढ़ रहा था। ऊंचाई काफी कम हो चुकी थी। जब ऊंचाई करीब सौ फीट के रह गई तो यान का आगे बढ़ना रुक गया और वह सीधा उतरने लगा।

मदन के पेट में जोरदार गुदगुदी सी उठने लगी।

आखिर प्लेन ने धरती को छू लिया और स्प्रिंगों पर ऊपर नीचे लचकने लगा शेखर ने जब इंजिन बंद कर दिया तब कहीं एक दो मिनट बाद यान का लचकना रुका और उसे बाहर झाकने का अवसर मिल।

वेटिंग रूम से निकल कर स्वयं महामहिम लोचन को उसने यान की तरफ आते देखा। तभी शेखर ने फाटक खोलकर सीढ़ी लगा दी और महामाहिम को प्रणाम कर एक ओर खड़ा हो गया।

मदन उतर पड़ा—अलंकार की धरती पर उसके पांव टिके।

शासनाध्यक्ष महामहिम ने आगे बढ़ कर उसे अपनी बहों में भर लिया। उपस्थित व्यक्तियों ने सोचा कि जिस व्यक्ति के स्वागतार्थ स्वयँ महामहिम आये हैं, जिसे बांहें पसार कर गले से लगाया है वह व्यक्ति भी कोई महान ही होगा, आदरणीय होगा अतः सम्मान पूर्वक सबने मदन को प्रणाम किया।

मदन को ऐसा लगा जैसे विदेश से अपने घर आ गया हो।

महामहिम की निजी मोटर में, उनके साथ बैठकर राज भवन पहुंचा तो वहाँ भी उसका शानदार स्वागत किया गया। उसे इतना अधिक सम्मान मिला, प्यार मिला कि मदन तड़फ उठा। उसे ऐसा अनुभव होने लगा कि उसकी सांस रुक जायगी। एकांत में ले जाकर महामहिम से कहा 'लोचन ! मुझे तुमसे सख्त शिकायत हैं।'

लोचन मुस्कुराये. बोले, 'लेकिन मुझे तुम से कोई शिकायत नहीं हैं मदन—फिर भी मैं तुमसे यह जानना चाहूंगा कि तुम्हे मुझ से क्या शिकायत हैं और क्यों हैं ?'

'शिकायत यही हैं कि यह सब दिखावा क्यों किया गया हैं–सुन भाई मैं ठहरा किलबिलाटे में रहने वाला जीव–मुझे अपने इस राज भवन में कैद मत करो।'

'तुम इसे कैद समझते हो ?'

'बराबर समझता हूं' मदन ने दृढ़ता पूर्वक कहा और ऐसा समझने का कारण भी बताया 'जब तक यहाँ रहूंगा दुनिया भर की औपचारिकता निभानी पड़ेगी और अपनी जिन्दगी में मुझे बनावट कतई पसन्द नहीं हैं।'

'तो क्या चाहते हो ?'

'आजादी—ऐसी जगह जहाँ मैं अपने ढंग से रह सकूं।'

'मगर तुम अलंकार द्वीप के महमान हो।'

'ऐसी तैसी साले महमान की भड़क उठा मदन 'न मैं महमान हूं न तुम ही मेजबान हो। सीधा सपाट बात हैं कि हम दो यार हैं एक दम फक्कड़ टाइप। अपने याराने में यह दिखावा कतई नहीं घुसना चाहिये।'

'अच्छा बाबा—जिसमें तुम खुश उसमें मैं भी खुश।' मानना ही पड़ा लोचन का।'

हाँऽऽऽ—यह हुई कुछ बात। अच्छा यह बताओ कि चचा कहाँ हैं ?'

'सुदर्शन के लिये पूछ रहे हो ना ? वे अपनी प्रयोग शाला में घुसे बैठे होंगे' महामहिम ने बताया और फिर गभीरता पूर्वक बोले 'मदन ! मैं सुदर्शन की तरफ से बहुत चिंतित हुं दोस्त—समझ में नहीं आता कि क्या करूं ?'

'क्यों—क्यों—क्यों ?क्या हो गया है उन को ? उसने आश्चर्य से पूछा।

'काम—उन्हें काम रोग हो गया हैं।'

'काम रोग ? कोई नई बीमारी चली है क्या ?'

'नहीं उन्हें हर समय काम करते रहने का रोग लग गया है। हर समय बस काम करते ही रहते है—आराम जरा भी नहीं करते। मैं उनके स्वास्थ्य के लिये बहुत चिंतित हूँ। भगवान न करे उन्हें कुछ हो गया तो यक़ीन मानो मदन—यह अलंकार अनाथ हो जायेगा। हम लोगों का सपना अधूरा रह जायेगा। उन्हें तुम आराम करने के लिये मजबूर करो अगर इस समय राज भी यहाँ आ जाये तो सुदर्शन को आराम करने के लिये आसानी से मजबूर किया जा सकता है। यार लोगों का अहसान मुझे सदा याद रहेगा।'

'अरे अहसान गया साला पाक़िस्तान—तुम देखो तो सही चचा भतीजे की झपट। अगर पूरे चार दिन और चार रात आराम न करा दूं तो मेरा नाम मदन से मैदान कर देना। तुम अभी फिट फिट मंगाओ

मैं चचा के पास जा रहा हूं ।'

'पहले दोनों यार चाय पी लें—फिर जाना ।'

प्रोग्राम बता कर लोचन मुस्कुराते हुए बाहर चले गये ।

३

जिस समय मदन वयोवृद्ध वैज्ञानिक सुदर्शन की प्रयोग शाला में पहुंचा वे लान में इजी चेयर पर बैठे उसी की प्रतिक्षा कर रहे थे । वैसे तो मदन के बारे में उन्हे पूरी जानकारी थी । कि वह अलकार आ चुका है मगर कुछ ही देर पहले लोचन उन्हें सूचित कर चुके थे कि वह राज भवन से प्रयोग शाला के लिए रवाना हो चुका है ।

उस शैतान लड़के के प्रति स्नेह उमड आया और वे अपने को कार्य व्यस्त न रख सके । बाहर लान में कुर्सियां डलवा कर वही आ बैठे और प्रतिक्षा करने लगे ।

ज्यों ही राजकीय गाड़ी प्रयोग शाला के गेट में घुमी वे उठे और होठों हर सौम्य मुस्कुराहट बिखेरते हुए उसी तरफ बढ़ गये । उधर गाडी के रुकते ही मदन उतर पड़ा और उसने वहीं से हांक लगाई 'चचा जिन्दाबाद !'

एक तरफ से बुढ़ापा वात्सल्य बरसाता बढ़ा और दूसरी तरफ से आनन्द मग्न अल्हड़ जवानी । बुढ़ापे ने जवानी को बाहों में भर कर सीने से लगा लिया । प्यार और आत्मीयता पानी बन कर आंखो में छलक पड़ी ।

सुदर्शन ने मदन की पीठ थपथपा कर स्नेह व्यक्त किया तो उसने प्रसन्न होकर पूछा 'कैसे हो चचा ? कैसी गुजर रही हैं ?'

'सब ठीक ही चल रहा हैं मदन—तुम कहां कहां रहे-कैसे रहे ?'

वह बतलाने लगा 'जानते ही हो कि पैरों में चक्कर है सो नारद जी की तरह एक लोक से दूसरे लोक में घूमता ही रहता हूं और हातिम ताई की तरह नेकी करके कूएं में डाल देता हूं। कोई प्रशंसा करे या गाली दे यह दूसरी बात है। आप तों अलंकार मे ही रहे ना ?
'अलंकार ने मुझे बांध सा लिया है रे—इसे संवारने में लगा हूं।' सुदर्शन बोले।

'यह बड़ी अच्छी बात हैं कि यहा बंध गये हो वर्ना हमारीं तरफ लंडूरा रहने में कोई फायदा नहीं मिलता। उल्टा आप लोगो को परेशान करते फिरते।'

'तो तुम मानने लगे हो ना कि लंडूरा लाइफ़ बेकार चीज हैं।'

'एक दम मानता हूं।'

'तो तू इस लाइफ को क्यों नहीं छोड़ देता भाई ?'

'होश्त ! यह फंसाने वंसाने की बात एक दम नहीं चलेगी' मदन ने बातों के चक्कर से बचने के लिये एक दम स्पष्ट वादिता से काम लेते हुए कहा 'मैं जैसा हूं वैसा ही ठीक हूं। जरा सोचो तो सही चचा कि बहता पानी रमता जोगी कहीं रुका है ?'

'बहता पानी रोका जा सकता है—बांध बड़ी से बड़ी जलधारा को अपनी बांहों में समेट लेता है मदन और फिर वह चंचल धारा मर्यादा में बंध कर मानव कल्याण करगे लगती है।'

वह समझ गया कि बात चीत इसी लाइन पर चलती रही तों मि० सुदर्शन उसे कही न कही घेर ही लेंगे और वह घिरना नही चाहता था अतः प्रंसग़ बदलना उसे आवश्यक लगा। फौरन ही बात पलट कर बोला चचा ! मेरे पास आपकी एक जबर दस्त शिकायत आई है।

'जानता हुं भई जानता हूं। लोचन ने जरूर चुगली की होगी कि बुढ्ढा आराम नही करता, हर समय कुछ न कुछ करता ही रहता है। मगर मदन ! जबतक यह अलंकार सब तरह से आत्म निर्भर न हो जाये तब तक मैं कैसे आराम करने लगू '

'मैं अलंकार में पूरे चार साल बाद आया हूँ मगर इतने कम समय में आपने तो इसकी काया ही पलट दी है। रास्ते में मैंने यहाँ की विशाल एयर क्राफ्ट फैक्टरी देखी है— हैवी इलेक्ट्रीकल्स के सामने से गुजरा हूं स्टील प्लांट, रिफायनरी, आर्डिनेंस फैक्ट्री न जाने आपने क्या क्या कर डाल है इस द्वीप में।'

हंसे मि० सुदर्शन, बोले 'इसे आत्म निर्भर जो बनाना है।'

'दूसरे शब्दों में यूं कहिये ना कि युद्ध की योजना बद्ध तैयारियां हो रही हैं।'

'नहीं रे पगले। सोचने समझने के बाद कोई भी व्यक्ति युद्ध नहीं छेड़ता। युद्ध हमेशा ना समझी के कारण ही छिड़ता है और जब एक बार यह आग भड़क उठती हैं तो इसमे दोनों ही पक्ष जलते भी है-आक्रमण कारी भीं आक्रान्ता भी। यह आग किसी एक पक्ष को पूर्ण तय नष्ट करके ही शांत होती हैं और बचता क्या है विनाश, भुखमरी, बेरोज गारी, बीमारी और दिवालियापन।'

'तो फिर अलंकार में युद्ध की तैयारिया क्यों ? युद्ध सामग्री का यह उत्पादन क्यों किया जा रहा हैं ?' मदन ने लान पड़ी कुर्सी पर बैठते हुए पूछा।

'एक बात बताओ' उत्तर देने की बजाय सुदर्शन ने गंभीरता पूर्वक प्रश्न पूछा 'यदि तुम्हारी आजादी छीनकर कोई तुम्हें कैद करना चाहे तो !'

तमक कर मदन ने अपनी भाषा में जावाब दिया 'मैं तो उल्लू के पट्ठे की जान ले लूंगा। ऐसा सबक सिखाऊंगा कि उसके बेटे पोते भी पढ़े लिखे ही पैदा हों।'

'तो मदन ! आजादी की रक्षा के लिए हर मनुष्य' हर देश अपनी जान की बाजी लगा दिया करता है। आजादी को खतरे में डालने वाला आक्रमण कारी कहा जाता हैं और उससे निपटने के लिये युद्ध करना ही पड़ता है। चाहे कोई देश शाँति वादी हो या तटस्थ हो उसे शत्रु के

खिलाफ हथियार उठाने ही पड़ते है और अगर वह देश पहले से ही इस विकट परिस्थिति के लिए तैयार न हो तों ?

सुदर्शन ने स्वयं ही अपने प्रश्न का उत्तर देना शुरू किया 'तो उसे पिटना पड़ेगा परजित होना पड़ेगा अपमानित होना पड़ेगा और दूसरों के सामने या तो रक्षा के लिये गिड़ गिड़ाना पड़ेगाया हथियारों के लिये भीख मांगती पड़ेगी। ऐसा ही मौका तुम्हें याद हो तो भारत के सामने उस वक्त आया था जब चीन ने नेफा में हमला किया था। कितना अपमान सहना पड़ता भारत के वीर सैनिकों को ? नेताओं को ?'

'हाँ मि० सुदर्शन,' स्वीकार करना पड़ा मदन को 'उस समय तो वाकई हमारे देश का भारी अपमान हुवा था।'

'फिर भी घाटा नहीं रहा। भारत अपमान का वह कड़वा घूंट पीकर चैतन्य हो गया। अपनी फैक्ट्रियों की उत्पादन क्षमता को उसने एक दम बढ़ा दिया। उसने गोले बनाये तोपें बनाई। हवाई जहाज जुटाये और बम भी बना लिये। किसी हद तक वह आत्म निर्भर तो बन गया ना ? अपनी आजादी की अपनी सीमाओं की रक्षा तो कर सकेगा ना ? देख लेना इसी आत्म निरभंता के कारण भारत अमरीका और ब्रिटेन का अनुचित दबाव भी नहीं मानेगा किसी दिन।'

एक बात बताओ चचा !' मदन ने जरा आगे झुककर पूछा यदि समय आ ही पड़े तो क्या अलंकार भारत को शस्त्र दे सकता है ?,

हंस पड़े वृद्ध वैज्ञानिक बोले ऐसा अवसर नहीं आयगा मदन। मैं वहां के वैज्ञानिकों की आविष्कारक शक्ति से भली भांति परिचित हूं वे ऐसे भयानक और विनाश कारी शस्त्रों का भी निर्माण कर सकते हैं जो इस्पात की नौ इंच मोटी दीवार की भी धज्जियाँ उड़ा सकें।'

भारत के दोनों ही पड़ौसी चीन और पाकिस्तान पाजी हैं। इनसे हमेशा देश को खतरा बना ही रहता है।

इसी लिये तो कहता हूं ना कि भारत भाग्य शाली देश है जिसकी सीमा पर दो दो दुश्मन मौजूद हैं।' सुदर्शन ने विचित्र सी बात कही।

मदन का चौंकना स्वाभविक था अतः उसने चौंक कर पूछा' सोमावर्ती देश का शत्रु होना आप सौभाग्य की बात समझते हैं ?,

भई अराजकता वादी हूं ना ! इस लिये मेरे विचार और मेरी मान्यताऐं भी कुछ विचित्र ही टाइप की हैं । देखो जब तक भारत को चीन और पाकिस्तान का खतरा बना रहेगा तब तक वह बराबर अपनी शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न करता रहेगा जिसका परिणाम एक दिन यह होगा कि वह एशिया का सबसे अधिक शक्ति शाली मगर शांति प्रिय प्रजातंत्र राष्ट्र बन जायेगा । जानते हो फिर क्या होगा ? एक दिन आयेगा जब भारत निर्भीक होकर अमेरिका ब्रिटेन और पच्छिमी देशों के दबाव को एक दम ठुकरा देगा । अफ्रीका और एशिया महाद्वीप में शाती बनाये रखने की जिम्मेदारी उस पर ही रहेगी । भारत एक नये राष्ट्र संघ का निर्माण करेगा और एक बार फिर वह जगद गुरू बन कर रहेगा । यह मेरी भविष्य वाणी समझो ।,

चचा ! तुम्हारी बातों में मजा आ गया ' मदन ने खुश होकर कहा और

फिर प्रसंग बदल कर पूछा आज कल किस आविष्कार पर कार्य चल रहा है ?'

आओ अब अन्दर चलें ' कुर्सी से उठते हुए सुदर्शन बताने लगे 'यहाँ का ऐयरोड्रोम भौगोलिक दशा के अनुसार काफी सुरक्षित है मगर इन दिनों मैं यहाँ की राडार व्यवस्था को सुधारने में लगा हूँ । चाहता हूं कि इसे एक अत्यंत शक्ति शाली राडार से सुसज्जित कर दूं ताकि किसी प्रकार का खटका ही न रहे ।'

दोनों प्रयोग शाला में आकर बैठक में सोफों पर बैठ गये ।

यह राडार क्या मुसीबत है ? मैंने यह नाम न्यूयार्क में भी दो तीन बार सुना था अपने एक मित्र से मगर मैंने कोई ध्यान नहीं दिया ।'

'क्या सुना तुमने ?'

'अपना एक यार है अमेरिका में मि० आर्म स्ट्रांग । साथ पढ़े हुए

थे इस लिये अच्छी पटी उससे और कुछ दिन उसी के साथ रहा था। वह किसी फैक्ट्री में इंजीनियर था जहां राडार बनाया गया था। कंपनी ने उसे राडार फिट करने के लिये पाकिस्तान भेज दिया तो वह करांची चला गया और मैंने जो ऊँचा मुंह किया तो सीधा यहां चला आये।'

'कुछ याद हैं वह राडार कहां फिट किया जाने वाला है ?' सुदर्शन ने पूछा।

'राम जाने कहां लगना है मगर आर्मस्ट्रांग ने बताया था कि पैकिंग केसों पर बदीन वाया करांची लिखा हुवा था।' मदन ने बता दिया।

'तो समझ लो मदन कि तुम्हारा दोस्त भारत का बेड़ा गर्क करने गया है !'

'क्या मतलब ?' चौंक कर पूछा उसने।

'मतलब यहा किअमरीकी सहायता से बदीन में नवीन तम रैडार व्यवस्था कायम की जायगी जो भारतीय जहाजों की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखने के लिये होगी और दूसरे शब्दों में यूं समझ लो कि करांची पर भारतीय हवाई सेना हमला न करने पाये इसका इन्तजाम किया जा रहा है।'

'यह बदीन है कहां पर ?'

'करांची से रेल द्वारा (जो पहले एन. डब्लू. आर एल वाई थी) अगर उत्तर की तरफ यात्रा
की जाय तो एक स्टेशन पड़ता है कोटड़ी। वहां से हैदरा बाद के लिये गाड़ी मिलती हैं। सिंधु नदी के एक तरफ कोटड़ी और दूसरी तरफ हैदरा बाद पड़ता है। हैदरा बाद से एक लाइन तों रेगिस्तानी इलाके को पार करके सीधीमारवाड़ के लूनी जंकशन तक चली जाती है और हैदरा बाद से ही एक ब्रांच लाइन बदीन तक जाती है।'

'अगर वह रैडार काफी शक्ति शाली हो नो भारतीय क्षेत्र को कहां तक कवर कर सकेगा मि० सुदर्शन ?' मदन वे उत्सुकता से पूछा।

'कम से कम कच्छ भुज का क्षेत्र, जोधपुर का ऐयरोड्रोम, जाम नगर आदि सब इसके क्षेत्र में आ सकते हैं। अस्थाई तौर पर अगर भारत ने जोधपुर और पाकिस्तान के बीच में कोई हवाई अड्डा बनाया होगा तो वह भी कवर हो जायगा।'

'याने यह रैडार स्टेशन भारत का बेड़ा गर्क करके रहेगा।'

'सोलहों आने'

मदन गहरे सोच विचार में पड़ गया।

शैतान का दिमाग शैतानी का सृजन करने में व्यस्त हो गया।

४

मदन यहां आया तो इस इरादे से था कि कुछ दिन आराम करेगा मगर महामहिम लोचन से मिलने के बाद उसका प्रोग्राम यह बना कि निरन्तर कार्यरत महान वैज्ञानिक सुदर्शन को आराम करायेगा मगर जब सुदर्शन से बात चीत हुई तो उसका प्रोग्राम यह बन गया कि वह उनके साथ कंधे से कन्धा मिला कर काम करेगा ' चौबीसों घन्टे। न जाने उसे रैडार में दिल चस्पी क्यों पैदा हो गई और वह उसकी पूरी जान कारी प्राप्त करने के लिये बेचैन हो उठा।

भोजनों परान्त भी वह सुदर्शन के साथ इसी सम्बन्ध में बात चीत करता रहा।

स्वय भी अच्छा खासा इंजीनीयर था। हर बात बड़ी आसानी से समझता चला गया। सुदर्शन ने जो रैडार की थ्योरी स्थूल रूप से समझाई वह इस प्रकार थी—

'रैडार प्रतिध्वनि के सिद्धान्त पर ही काम करता है।' मि सुदर्शन

ने अपनी इसबात को और अधिक स्पष्ट करने के लिये उदाहरण दिया' मान लो कि तुम किसी पहाड़ी याऊँची इमारत से आधे मील के फासले पर खड़े हो। वहाँ से तुम एक बड़े घन्टे या गोंग पर चोट करते हो तो आवाज पैंदा होगी वह वायु में तैरती हुई जायगी, पहाड़ी या इमारत से टकरा कर प्रतिध्वनित होगी औरलौट आयगी। अगर आवाज पैंदा होने उसके प्रतिध्वनि होने के समय को हम ठीक ठीक नाप सकें। तो उस समय को ध्वनि की गति से गुणा करने पर उस पहाड़ी की दूरी आसानी से निकल आयगी।'

'रैडार सैंट में एक रेडियो स्टेशन की तरह एक ट्रांसमीटर और एक रिसीवर होता है। रिसीवर लौटकर आने वाली रेडियो तरंगों को ग्रहण करके चित्र में ठीक उसी तरह बदल देता है जैसे टेली विजन सैंट।'

'रैडार का ट्रांसमीटर रेडियो वेव्ज [रेडियो तरंगें] प्रसारित करता है। यह प्रसारण स्फोटों के रूप में होता है और एक सैंकिड के कुछ हजारवें भाग के अंतर से ये स्फोट निरंतर होते रहते हैं। जब तक सैंट चालू रहता है यही क्रम चलता ही रहता है। अंत में ये तरंगें एकत्रित होकर वेव बीम का रूप धारण कर लेती हैं।'

'अंधेरी रात, घने काले बादल या वर्षा, कोई इन तरंगों के मार्ग में रुकावट नहीं डाल सकती। वे तरंगे उस समय तक सीधी चलती ही जायेंगी जब तक कि कोई ठोस पदार्थ उनका मार्ग न रोके जैसे मकान पहाड़ी या हवाई जहाज। जिस ठोस चीज से भी ये लहरें टकराये वहीं से लौट पड़ेंगी और रैडार सैंट का रिसीवर उन्हें ग्रहण कर लेगा। ये रेडियो तरंगे भिन्न-भिन्न यंत्रों में से गुजर कर स्क्रीन तक पहुँचेगी और जिस चीज से टकरा कर आई हैं उसी का चित्र स्क्रीन पर उभर आयेगा। यह चित्र बनता है केथोड़ रे ट्यूब के द्रव्य पट या स्क्रीन पर।

मिस्टर सुदर्शन ने आगे बताया 'यह रैडार व्यवस्था बम मारी करने वाले हवाई जहाजों में भी होती है और सैनिक हवाई अड्डों पर भी। हवाई अड्डे का रैडार ओपरेटर आकाश में उड़ते यान का पता भी

लगा सकता है, उसकी दूरी भी जान सकता है और वायर लैस द्वारा उससे संबंध स्थापित करके आवश्य आदेश भी दे सकता है। अगर शत्रु के जहाजों को देखा जाता है तो शीघ्राति शीघ्र अपने प्लेनों को भी सूचित कर देता है वे शत्रु के विमानों से भिड़ने के लिये फौरन उड़ान भर लेते हैं।'

थ्योरी समझने के बाद वह प्रैक्टीकल में जुट गया।

उसने हर पुर्ज़े की जान कारी हासिल की। सुदर्शन ने भी बड़े चाव से हर बात उसे समझाई और साथ बिठा कर संचालन भी सिखाया।

तीन चार दिन तक उसने नियम पूर्वक रैडार केन्द्र पर ड्यूटी भी दीं और दैनिक अभ्यास के लिये उड़ने वाले विमानों को आदेश भी दिये।

पांचवे दिन सुबह जल्दी ही सुदर्शन वहाँ आगये। उनके थोड़ी देर बाद ही मदन भी पहुँच गया क्यों कि उस दिन भी उसे सुबह की ड्यूटी देनी थी। सुदर्शन को वहाँ देखकर उसे आश्चर्य हुवा तो पूछा 'आप?'

'हां भई' वे बताने लगे 'आज इस आंख में कुछ सुधार करना है इसलिये जल्दी आगया हूँ और इसीलिये आज की अधिकांश उड़ाने रद्द कर दी हैं।'

'चचा! यह रैडार तो वैसे ही सुपर फाइन है इसमें क्या सुधार करना है?'

'इसमें अभी एक दोष है मदन-बैठो बैठो तुम्हें समझाता हूँ।'

दोनों कुर्सियाँ खींच कर बैठ गये मगर मदन दूसरे ही क्षण उठ खड़ा हुवा जैसे कि उसे कुर्सी में उसे खटमल नजर आगया हो पूछा 'ठंडा चलेगा या गर्म?'

'नहीं भई कुछ नहीं चलेगा-मैं घर से——।'

बात काट दी मदन ने 'तैयार होकर चला हूं यही कहना हैना?'

'हाँ-कहना क्या है-बात है भी यही।'

'मगर यह हाँ भी नहीं चलेगी।-चाय काफी, सोडा लेमन-कोको

कोज्ञा-जजो जोला-यथो योला काला घोड़ा सफेद परी नीला देव गर्ज यह कि — — 'एक ही सांस में वह बक गया और जजो जोला यथो योला आदि अनोखे नामों पर सुदर्शन खिल खिलाकर हंस पड़े। उनकी हंसी सुनकर सभी आस पास के व्यक्ति चौंक पड़े।

सुदर्शन का इस तरह खुल कर हंसना यहाँ वालों के लिये नई बात थी। पिछले कई दिनों से यहाँ के युवक युवतियों ने उन्हें स्नेह मयी मधुर मुस्कान बिखेरते तो देखा था मगर जब से वे रैंडार व्यवस्था को उन्नत बनाने के काम में लगे थे तब से शायद हंसना और मुस्कुराना दोनों ही भूल गये थे।

अलंकार के प्रिय व्यक्ति सुनर्शन सदा कुछ न कुछ सोचते ही रहते थे।

जब भी समय मिल जाता और जहाँ भी मिल जाता कागज पेंसिल लेकर बैठ जाते। युवक युवतियाँ सोचने लगती कि उनके भीष्म पिता-मह उनके इतने पास ही रहकर भी उनसे कोसों दूर हैं। अब न उन्हें पितामह का आशीर्वाद मिल पाता है और न ही स्नेह सिक्त शब्दों में प्रेरणा' लोचन तो जैसे पंगु ही हो गये।

सभी सिमट आये कमरे में।

सुदर्शन का जेसे बचपना कई रूपों में मुखरित हो उठा।

अपनी हंसी रोक कर उन्होंने उपस्थित कार्य कर्त्ताओं को संबोधित करके कहना शुरू किया, अरे सुना तुम लोगों ने ?' उन्हें फिर हंसी छूट आई।

सभी के मुस्कुराते चेहरे' जिज्ञासा भरी नजरें उन पर टिक गई।

सुदर्शन अपनी हंसी रोक कर कहने लगे 'यह शैतान लड़का क्या कहता है ?

वे फिर हंस पड़े और सबकी नजरें मदन पर आ टिकी। हर नजर में कृतज्ञता थी, जिज्ञासा थी। हर नजर पूछ रही थी 'आपने क्या कह दिया पितामह को ?'

जबाव देना जरूरी था इस लिये मदन ने कुशल मजमा लगाने वालों की तरह दोनों हाथ उठा कर सबको शांत रहने का संकेत किया और फिर कहने लगा 'मित्रो और प्यारी बहनों ! जब से यहाँ आया हूँ मैं देख रहा हुं कि आपके पितामह और मेरे चचा महा ज्ञानी होते हुए भीं बच्चे से कम भुलक्कड़ नहीं है। आज मैंने उन्हें भूली हुई बात याद दिला दी हैं या यू समझ लीजिये कि उन्हें खुद ही याद आ गई है और यह एक खुशी की बात हैं।' उसने चारो ओर घूम कर देखा सभी दत्त चित्त होकर उसकी बातें सुन रहे थे। कोई नहीं बोला तो मदन को ही कहना पड़ा 'अरे ! फूटे मुंह से इतना तो कहो कि हां हैं।'

फिर सभी ने एक स्वर में कहां 'हां हैं।'

तभी सुदर्शन उठे। अपनी छड़ी उसकी गर्दन में फांसते हुए पुछने लगे 'अबे शैतान ! बता तो मैं क्या भूला था ?'

'चचा' गले से छड़ी निकालते हुए उसने बताया 'तुम हंसना ही भूल गये थे इन दिनों में।'

सुदर्शन पर फिर हँसी का दौरा सा पड़ गया।

सभी हंसे—खूब मुक्त हास्य कमरे में गूंज उठा।

वातावरण का भारी पन जाता रहा।

नव जीवन का संचार हो गया।

'शेखर !' मदन ने ऊंची आवाज में एक युवक को पुकार कर कहाँ 'आज हमारी तरफ से सबको यही चाय पिलाई जाय'।

शेखर फौरन कैंटीन की तरफ लपका तो मदन एक युवती को काटने दौड़ा जो पाया लट की नीली यूनि फार्म पहने खड़ी-खड़ी हंस रही थी 'आ हा हाँ ! आप खड़ी मुंह फाड़ रही है यहा। अरे भई जाओ जरा उस गरीब का हाथ बटाओ।'

सिट पिटा कर लड़की सिर पर पाँव रख कर भागी। मदन जानता था कि शेखर और उस लड़की आनंद में कुछ यूं यूं चल रही है।

चाय बिस्कुट वहीं आये

सब एक संयुक्त परिवार के सदस्यों की तरह एक जगह बैठ कर पीने लगे । कोई भेद भाव नहीं कोई ऊंच नीच नहीं किसी तरह का राग द्वेष नही ।

तभी द्वार पर एक गाड़ी आकर रुकी और द्वार के पास ही बैठे एक युवक ने धीरे से कहां 'महा महिम !

लोग सभलते तब तक वे कमरे में आगये और सभी उनके सम्मान में उठ खड़े हुए ।. मगर महा महिम ने सब को बैठने को कहाँ 'बैठिये बैठिये' और स्वयं सुदर्शन के पास वाली कुर्सी पर आ बैठे । सुदर्शन से ही उन्होंने पूछा 'आज यह चाय पार्टी किस खुशी में हो रही साहब ?

'यह पार्टी आज मदन की तरफ से हो रही है ।'

महामहिम ने मदन से ही पूछा 'तो हमें याद भी नही किया गया ?'

'इस लिये कि प्रोग्राम अचानक ही बन गया था वर्ना.........

तो हम भी अचानक आ गये । कहाँ है हमारी चाय ?

मदन ने वहीं से हाक लगाई 'शेखर !

महामहिम के लिये भी चाय आ गई । परिवार के वयोवृद्ध व्यक्ति उपस्थित थे देश के कर्णधार थे । युवकों और युवतियों को उनके सानिध्य से बड़ी प्रसन्नता हुई' उनमें अपनत्व की भावना दृढ़ होती चली गई । सभी सोचने लगे कि ये हमारे है, हमारे अपने, हमारे राष्ट्र के कर्णधार, मार्ग प्रदर्शक और निर्माता ।

सद्भावना पूर्ण वाता वरण में पार्टी खत्म हुई तो काम शुरू हुआ ।

सुदर्शन ने युवकों को संबोधित करते हुए कहा 'सुनो भई बच्चों ! बाहर ट्रक में कुछ सामान लदा है उसे सावधानी से उतार कर कट्रोल रूम में पहुंचा दो मगर जरा सावधानी रखना सामान नाजुक है ।'

चींटियों की अनुशासित फौज बाहर चल दी श्री सुदर्शन महाशय मदन और लोचन के साथ कट्रोल रूम में पहुंच गये ।

सामान भी पहुंच गया जिसे खोल खोल कर मदन और शेखर ने पितामह के कहे अनुसार फिट कर दिया । तार भी जोड़ दिये गये ।

स्वयं सुदर्शन निर्देशन करने लगे और मदन रैडार संचालन करने बैठा सुदर्शन ने दीवार में लगा एक माउथ फोन उतार लिया और उसके नीचे लगा बटन आन करके अनाउंस करने लगे 'बेटी आनंद।, तारा और दुर्गा अपने अपने प्लेन पर पहुंच जायें और कंट्रोल रूम से संबंध स्थापित करें।'

आदेश का पालन तत्काल किया गया।

पांच मिन्ट बाद ही रैडार सैट पर आवाज आई 'हलो कंट्रोल रूम हलो अलंकार कंट्रोल–दुर्गा कालिंग'

मदन ने जवाब दिया 'हलो हलो दुर्गा। अलंकार कंट्रोल हीयर।' उत्तर निर्देशन के लिये उसने सुदर्शन की ओर देखा तो उन्होंने कह दिया 'स्टार्ट'। मदन ने आदेश दिया 'हलो दुर्गा ! स्टार्ट।

बाहर मेघ गर्जना का सा भयानक गर्जन हुवा कंट्रोल रूम की ग्लास विंडो से मदन ने देखा कि एक यान एक दो बार अपनी स्प्रिंगों पर लचका फिर फुर्र से हवा में उठ गया जैसे चिड़िया उड़ गई हो।

इसके बाद आनंद और उसके बाद तारा, अलंकार की साहसी बेटियां आसमान छुने लगीं। यानों का हल्का हल्का गर्जन अब भी सुनाई दे रहा था। प्लेन निरंतर ऊंचाइ ग्रहण करते जा रहे थे।

'साइलेंसर आन' सुदर्शन ने आदेश दिया और मदन ने दोहरा दिया मेघ गर्जना बन्द हो गई जैसे कहीं कुछ हो ही नहीं।

'साउथ वैस्ट' स्पीड एट हंडरेट' टाइम ट्वन्टी मिनट्स' आदेश दिया गया और तीनों यान उसी रफ्तार से दक्षिण पश्चिम में झपट पड़े। उन्हें इसी रफ्तार से आगे बढ़ना था अतः कन्ट्रोल रूम वालों को फुर्सत थी। सुदर्शन ने मदन को समझाना शुरू किया। 'ठीक बीस मिनट बाद उन्हें लौटना है। उन्हें हम स्क्रीन पर चैक करेंगे। दस मिनट की वापिसी के बाद प्रत्येक यान को ऊंचाई कम करनी है स्पीड कम करनी है और एयर फील्ड एरिया में सौ फीट की और हो सके तो इससे भी कम ऊंचाई से प्रवेश करना है। रैडार में हमें सिर्फ यही देखना है कि

कम से कम ऊँचाई पर आता प्लेन भी देखा जा सकता है या नहीं।'

'ओ० के० चचा' मदन ने घड़ी देखते हुए कहा।

अभी पूरे दस मिनट बाकी थे अतः मदन ने अपने मित्र लोचन से कहा 'उस्ताद ! तुम्हारे हुक्म की तामील मैंने कर दी है।'

'क्या मतलब ? क्या तीर मारा है आपने ?'

'लो यार हद्द हो गई। अरे बाबा ! मैंने चचा की उम्र तीन साल पीछे खिसका दी है याने मौजूदा उम्र माइनस तीन'

'याने भगवान के कारखाने में भी ठगी।'

'अमां आहिस्ता बोल बाबा कहीं नीली छतरी वाला बुढ्ढा सुन लेगा तो मेरी उम्र में से तीस साल माइनस कर देगा।'

और इस बार सुदर्शन तो हँसे सो हँसे ही मगर लोचन भी लोट पोट हो गये। मदन बातें तो इनसे कर रहा था मगर ध्यान उसका बराबर घड़ी पर था। ज्यों ही बीस मिनट पूरे हुए वह अपने काम में जुट गया। उसने यान चालकों को काल किया 'हलो दुर्गा, हलो तारा, हलो आनंद ! तुम सुन रही होना एक साथ तीन आवाजें आई हम सुन रही है। आवाजें हैड फोन में इतनी तीखीं सुनाई पड़ीं कि उसे सिर झटकना पड़ा और हैड फोन फिसल कर उसकी गोद में आ गिरा और वह माउथ पीस में चीखा 'मार डाला नालायकों तुमने। हैड फोन वापिस लगा कर कहने लगा 'ऐ दुर्गा की बच्ची ! इतना जोर से क्यों चीखती है ? यहां कानों के पर्दे फटे जा रहे हैं।'

'तो मदन भैया तुमने तीनों को एक साथ क्यों पुकारा।' यह दुर्गा का जवाब था मगर साथ ही तारा और आनंद की खिलखिलाहट भी उसके साथ ही आ रही थी।

'हीं हीं हीं-याने आप हँस रही हैं—बेशरम कहीं की। वापिस मुड़ो।'

तीनों प्लेन वापिस लौट पड़े।

'दुर्गा ! तुम आगे रहो, तुम से पीछे तारा और फिर आनंद रहे।'

यान इसी ढंग से चलने लगे।

सभी रेडार स्क्रीन पर स्पष्ट दिखाई देते रहे।

आधा सफर पूरा हो गया।

'दुर्गा ! डाइव ?' मदन ने आदेश दिया।

आगे वाला प्लेन आगे से नीचे की ओर झुका और तेजी से अपनी ऊँचाई करता हुवा टूटे हुए तारे की तरह पृथ्वी की ओर चला।

'फोलो आन' मदन ने दूसरों को आदेश दिया।

तारा और आनंद के जहाज जैसे बाज की तरह दुर्गा के प्लेन पर झपटे।

'दुर्गा !'

'यस भैया'

'पोर्ठ एरिया में सौ फीठ की ऊँचाई से प्रवेश करन है तुम्हें।'

'ओ० के०'

स्क्रीन पर तीनों की नजरें टिकी थी—ऊँचाई प्रति क्षण कम होती जा रही थी। एक हजार से आठसौ, फिर छः सौ, चार सौ, दो सौ और फिर सौ। दुर्गा ने फील्ड पर सौ फीट की ऊँचाई पर रह कर दो राउंड लिये।

'वैरी गुड, वैरी गुड—' सुदर्शन बच्चो की तरह तालियाँ बजा उठे।

दुर्गा के बाद तारा और फिर आनंद भी सफलता पूर्वक उतर आई। अपनी होनहार और बहादुर बेटियों के स्वा तार्थ सुदर्शन ग्राउंड में भाग निकले। तीनो को गले से लगा लिया 'शाबाश ! मेरी बच्चियों—बहुत अच्छे। हमारा परीक्षण एक दम सफल रहा।'

तीनों विमान चालिकाओं ने महामहिम को फौजी सलाम किया।

मदन के पास से गुजरते समय दुर्गा ने आँखें भेंगी करली, तारा ने मुँह बिचका दिया और आनंद ने तो एक आँख ही बंद कर ली।

५

अलंकार के रैडार यंत्र का सफल परीक्षण हो ही चुका था।

मदन की जिज्ञासा भी समाप्त हो चुकी थी और वह एक दम खाली था।

एक तो मनुष्य का खाली दिमाग वैसे ही शैतान का घर कहलाता है और फिर मदन जैसे व्यक्ति कर दिमाग खाली रहे तो उसमें शैतानी पैदा होना उचित ही तो है। वैसे भी उसका है कहना कि उसके पैर में चक्र का निशान है जो उसे एक जगह नहीं टिकने देता और उसे नारद की तरह घूमते रहने पर मजबूर करता है।

भला चंगा राज भवन में लोचन के सामने बैठा चाय पी रहा था, गपशप भी चल रही थी कि एकाएक उसके दिमाग में खयाल पैदा हुवा कि कहीं चलना चाहिये। बस उसकी बहक शुरू हो गई। फौरन ही अपना विचार महामहिम लोचन को भी कह डाला 'माई डीयर उस्ताद ! अब हम जायेंगे।

चौंक पड़े लोचन, पूछा 'यह क्या सूझी ? कहाँ जाने का इरादा है ?'

'बस कहीं भी—हमें कोलंबो तक पहुँचा दो।'

'तो तुम अलंकार छोड़ कर जा रहे हो ?

'यार हद हो गई !' उसने माथा ठोंक कर उत्तर दिया 'तुम क्या समझ रहे हो कि मैं यहीं पड़ा रहूँ—घर गृहस्थी बसा लूं ?'

हंसे लोचन और बोले 'खयाल तो बुरा नहीं है।'

'दोस्त ! लानत है ऐसे खयाल पर जो बच्चे पैदा करने की फैक्ट्री खड़ी करूँ। सुनो प्यारे ! न गृहस्थी बसानी है और न कभी बसाऊँगा। जीवन का एक ही है उद्देश्य कि महर्षि नारद की तरह एक लोक से दूसरे लोक में, दूसरे से तीसरे लोक में घूमना और मानव कल्याण करना।

इस लिये मैं अब जाना चाहता हूं।'

'कहां जाने का प्रोग्राम है ?'

'न अभी प्रोग्राम बना है और न अभी योजना बनी है—बस अभी तो सिर्फ इतना ही करना है कोलंबो पहुंचना है। वहां से जिधर ढलान मिलेगी उधर ही लुढ़क पड़ूंगा। देखना है किस्मत इस बार कहां ले जाती है ?'

लोचन जानते थे कि दिमाग़ में जब आवारा गर्दी का कीड़ा जाग उठा है और कुल बुलाने लगा है तो यह प्राणी यहां रुकेगा तो नहीं—यह तो जायगा ही। अतः उसे रुकने के लिये कहना सुनना बेकार है। पूछा 'सुदर्शन से मिल लिये हो ?'

'अरे बाबा मिलना क्या है ? यही कहेंगे कि मत जा। फिर जनाब उपदेश मिक्सचर पिलायेंगे कि मदन ! शरीफ आदमी बन, अपने आप को पहचान तू समाज के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अब तुम्हीं बताओ कि क्या मैं शरीफ आदमी नहीं हूं ? क्या मैं अपने आपको नहीं पहचानता ?'

'पहचानते हो भाई अच्छी तरह पहचानते हो मगर सुदर्शन का कहना यह है कि यह ठगी वगी छोड़ छाड़कर कोई काम धंधा कर लो वर्ना कभी न कभी फंस जाओगे और लेने के देने पड़ जायेंगे।'

'आ हा हा !' मदन ने लड़ाकू औरत की तरह हाथ नचाये और बोला यह तुम कह रहे हो ? अरे वाह ! खुद गुरूजी बेंगन खायें और चेले को ज्ञान बतायें—याने सौ सौ चूहे खाय के बिलाई चली को हज ?'

हंस कर उत्तर दिया लोचन ने 'आखिर हज को चली तो है। तेरी तरह....'

'देखो जादूगर महाशय !' मदन ने चेतावनी देने के से लहजे में कहा 'यह सब घिस घिस बेकार है। अपने को जाना है सो जायेंगे।'

उसने अब अपना अंतिम निर्णय ही सुना डाला, एक दम स्पष्ट ने कहा और फिर आगे आगे चलती लड़की तरफ इरफ इशारा करके

शब्दों में ।

'अच्छी बात है बाबा जाओ' लोचन ने उठते हुए कहा 'मगर सुदर्शन से तो मिल लेते जाने से पहले ।'

'मैं टेलीफोन कर देता हूं यहीं से ।'

'नही—इससे तो अच्छा है कि सैट पर ही चलो ।'

सुदर्शन उसे लेकर अपने निजी आफिस में पहुँच गये। एक अलमारी खोल डाली जिसमें बजाय खण्ड होने के एक धुंधला सा काँच जड़ा हुवा था। एक बटन दबाते ही स्क्रीन पर हल्का हल्का प्रकाश फैल गया—एक धुंधलासा चित्र उभर आया जो धीरे धीरे स्पष्ट होता चला गया। मदन ने उस स्थान को पहचान लिया। यह सुदर्शन की प्रयोग-शाला का चित्र था। कुछ ही देर में सुदर्शन का हंसता मुस्कुराता चेहरा स्क्रीन पर उभर आया जो हाथ में फोन लिये कह रहे थे 'क्या बात है लोचन ?'

पास ही रखा फ़ोन उठाकर लोचन जवाब देने लगे 'कुछ नहीं मि॰ सुदर्शन यह मदन अब जाना चाहता है ?'

'जरा फोन उसे दो तो'

फोन मदन को थमा कर लोचन पर्दे के सामने से हट गये और उनकी जगह मदन खड़ा होगया। अब वह सुदर्शन को स्पष्ट देख पा रहा था उधर सुदर्शन भी उसे देख रहे थे। एक रहस्यपूर्ण मुस्कान उनके होठों पर आई और बोले 'मदन !'

'यस मि० सुदर्शन' मदन ने उत्तर दिया।

'जाना चाहते हो ?'

'एक दम'

'कारण ?'

'हद होगई शराफत की, चचा जाने का भी भला कोई कारण हुवा करता है ? तुम तो कल को सांस लेने का भी कारण पूछने लगोगे तो भला क्या बताऊंगा ।'

हंस पड़े वैज्ञानिक महाशय ! पूछा' कब जाना चाहते हो ?'

'कब का तो कतई प्रश्न नहीं उठता—मैं ऐरोड्रोम पहुंच रहा हूं।'

'अच्छी बात है आ जाओ—मैं इन्तजाम किये देता हूं।'

और यूं थोड़ी सी विदाई वगैरह लेने की घिस घिस हुई और आखिर वैज्ञानिक सुदर्शन का चहेता 'शैतान लड़का' और लोचन का अतरंग मित्र अलंकार से चल ही पड़ा। इस बार उसे कोलंबो तक छोड़ने के लिये प्लेन लेकर दुर्गा आई थी। वह चालक कक्ष में दुर्गा के पास ही बैठा। उसने देखा कि प्लेन का नाम भी 'दुर्गा' ही रखा गया है और उसमें अलंकार के राज्याध्यक्ष द्वारा प्रदान की गई सनद भी लगी हुई है जिस पर पितामह सुदर्शन के भी हस्ताक्षर मौजूद थे।

इस सर्टिफिकेट से ही मदन जान पाया कि यह 'दुर्गा' नामक प्लेन बाम्बर भी है और फाइटर भी और शांति काल में सफरी गाड़ी भी। इसकी चालक दुर्गा कालरा है जो विमान उड़ाने की परीक्षा में फर्स्ट क्लास फर्स्ट रही थी।

'लड़की !' मदन ने दुर्गा को पुकारा मगर उसकी तरफ देखा नहीं।

'क्या है भैया ?' उत्तर मिला।

'तेरा सिर' यह था प्रत्युत्तर।

'सो तो है ही।'

'तूने अब तक मुझे बताया भी नहीं किंतु...'

'बताने जैसी बात ही क्या है जो बताती ?'

'और फिर भी मिस्टर मदन बहुत ग्लैड है तुझसे। बोल क्या इनाम दूं तुझे ?'

'अरे जाओ, जाओ भैया—तुम क्या इनाम दोगे ?'

'हांय ! याने मैं इनाम ही नहीं दे सकता ?'

'नहीं दे सकते'

'छोरी—थारो कांई माथो फिरग्यो है ?

'दुर्गा मदन की यह मारवाड़ी बोली सुनकर चौंकी, उसके लिये नई

चीज जो थी उसने प्रश्न सूचक दृष्टि से मदन की तरफ देखा तो मदन ने बंबइया भाषा में कहा 'तेरा भेजा फिरेला है क्या ?'

इस प्रश्न के शब्द भी शायद कुछ अटपटे थे अतः दुर्गा के पल्ले नहीं पड़े। उसे समझाने के लिये मदन को हिन्दी बोलनी पड़ी 'तुम्हारा दिमाग तो ठीक हैं ना ?'

'हाँ हैं'

'तो फिर तूने कैसे कह दिया कि मैं इनाम नहीं दे सकता ?'

'इस लिये कि तुम नहीं दोगे'

'अच्छा माँग कर देख !'

और दुर्गा ने अपनी अजीबो गरीब माँग पेश की 'मुझे भाभी चाहियें'

साँड़ को जैसे लाल झण्डा दिखा दिया गया हो। ठग महाशय एक दम हलक फाड़ कर चीखे जैसे जंगली फिल्म में शम्मी कपूर चीखा था 'या''हू' मगर दुर्गा भी अपने नाम की एक ही निकली। अपने कान ढंक कर उसने साइड विंडो खोल दी और जहाज का साइलेंसर आफ कर दिया। जहाज उस समय समुद्र पर ही था। भयानक गड़गड़ाहट से ठग महाशय के कान फटने लगे तो उन्होंने फुर्ती से दोनों हाथों से अपने दोनों कानो को ढांप लिया। एक मिनट बाद उसने पुनः साइलेन्सर आन कर दिया तब कहीं जाकर मदन ढंग से बैठ पाया। वह बड़बड़ाया प्लेन है या मुसीबत है।'

दुर्गा मुस्कुराती रही,

अन्ततः प्लेन कोलम्बो के हवाई अड्डे के एक कोने में उधर से उतर पड़ा। मदन उतरा और आवश्यक कागजी कार्यवाही के लिये दुर्गा भीसाथ ही उत्तरी। बीस पचीस मिनट मदन को दुर्गा के साथ चाय पीने और विदा होने में लगे। इसके बाद वह शहर की तरफ चल दिया और दुर्गा प्लेन लेकर अलंकार लौट गई।

६

मदन इस बार सर्दर्न स्टार होटल में ठहरा।

बहुत शानदार होटल था और इसमें विशेषता यह थी कि सर्विस के लिये इसमें अधिकतर लड़कियां ही रहती थीं। रिशेप्सनिस्ट से लेकर वेयरे तक का काम लड़कियाँ ही करती थीं और यही यात्रियों के आकर्षण का मुख्य कारण भी था। दूसरा मुख्य कारण यह था कि समुद्र के किनारे खुली जगह पर था और होटल से ही जंगल का सिलसिला शुरू हो जाता था जो हाथियों के लिये प्रख्यात था। इसी जंगल में लंका सरकार का हाथी पकड़ने का एक मात्र केन्द्र था। इस अनोखे कार्य की जब कभी भी शहर वालों को या होटल वालों को खबर लग जाती थी तो कई साहसी व्यक्ति जंगल में पहुँच जाते थे। दर्शकों को एक नियमित स्थान से आगे नहीं जाने दिया जाता था। एक ऊंची सी पहाड़ी पर सरकार ने साधारण सा रेस्ट हाउस बनवा रखा था और दर्शक यहीं से बरामदे में खड़े होकर सामने के मैदान में होने वाले हाथी पकड़ने के काम को देख सकते थे।

कई लोग रोमांचक क्षणों के चित्र लेते थे तो कई पूरी फिल्म ही तैयार कर लेने की कोशिश करते थे। कई सिर्फ देख कर ही खुश हो लेते थे।

यह भी एक सँयोग की ही बात थी कि जिस दिन मदन इस होटल में आकर ठहरा ऐसा मौका पड़ गया। वैसे भी उसके पास कोई खास काम नहीं था बेकार ही पढ़ा था और ऐसा सुन्दर अवसर हाथ आ रहा था भला कैसे हाथ से जाने देता? सुबह जल्दी ही निपटा और चाय नाश्ते से निपट कर तैयार हो गया मगर जब नीचे हाल में आया तो उसके सामने प्रश्न आया कि जाये किसके साथ इस समस्या को हल करने के लिये काउण्टर पर पहुंचा। रिसेप्शन गर्ल अपने काम में लगी

हुई थी अतः उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये उसने उंगली से मेज पर खटखट की और लड़की ने उसकी तरफ देखा तो वह बोला 'सुनिये मिस···मिस सीलोन ! मेरी थोड़ी सी सहायता कीजिये।'

विचित्र सम्बोधन मिस सीलोन पर वह मुस्कुराई और उसने पूछा 'कहिये जनाब ! मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूं ?'

'देखिये बात यह है कि आज पास वाले जंगल में हाथी पकड़ने का आयोजन हो रहा है, शायद आपने भी सुना होगा—मैं वहाँ तक जाना चाहता हूँ मगर रास्ता नहीं जानता। क्या कोई साथ चलने वाला मिल सकता है जो रास्ता भी मुझे दिखा दे और साथ ही दिल बहलाव भी होता रहे।'

'जरूर ऐसा साथी मिल सकता है मगर मेरा खयाल है कि आपको इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अभी थोड़ी देर बाद बहुत से लोग होटल के पिछवाड़े की तरफ से जायेंगे आप भी साथ हो जाइये उनके।'

'बात तो आपने वाक़ई अकल की कही है मगर फिर भी एक साथी तो तलाश कर ही दीजिये। बच्चा हूँ ऐसा न हो कि कहीं जंगल में खो जाऊं।'

उसके चेहरे पर हंसी की लहर दौड़ गई। मुस्कुराते हुए उसने कहा तो, मिस्टर बच्चे ! गाइड के लिये पन्द्रह रुपये अलग से देने होंगे।'

'लीजिये—एडवांस ले लीजिये' उसने पर्स निकालते हुए स्वीकार किया।

'नहीं नहीं एडवांस नहीं—गाइड को ही दे दीजिये।'

लड़की ने फोन उठा कर कहीं के नम्बर डायल किये और किसी से बात करने 'हलो—मैं जूथिका बोल रही हुं—सोना है ?'

कुछ देर प्रतीक्षा की उसने। उसने शायद सोना को बुलाया गया होगा फोन पर। ज्यों ही इच्छित व्यक्ति फोन पर आया, यूथिका ने पुनः अपना परिचय दिया और उसे फौरन होटल पहुंचने को कह कर फोन रख दिया और मदन से बोली टैन मिनट्स ओनली (सिर्फ दस मिनट)

आपको इंतजार करनी पड़ेगी मिस्टर बच्चा ।'

'करेगा बाबा करेगा'

और ठीक दस मिनट बाद उसकी गाइड मिस सोना आगई और मदन उसके साथ चल भी पड़ा । लोगों का आना जाना शुरू हो चुका था । कई मोटरें और टैक्सियां होटल के बगल वाले छोटे से मैदान में आ आ कर रुकने लगी थी । यहीं से पैदल चलना पड़ता था । रास्ता बल्कि उसे पगडंडी कहना उचित रहेगा अधिक चौड़ी न थी उस पर एक साथ सिर्फ दो आदमी अगल बगल चल सकते थे और शेष के लिये आगे पीछे चलने के अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय न था । मिस सोना का हाथ थामे मदन पगडंडी पर बढ़ रहा था । उससे दस पांच कदम आगे एक अल्हड़ युवती और चल रही थी । स्कर्ट पहने हुए थी, ऊंची एड़ी के जूते भी थे पैरों में और बॉब कट बाल बिना आस्तीन का मैच करते रंग का ब्लाउज पहने । मदन को सिर्फ उसकी पीठ ही दिखाई दे रही थी या स्कर्ट में मटकते हुए कूल्हे ।

'मिस सोना ! याने मिस गोल्ड !' मदन ने बात छेड़ी ।

'मेरा नाम सोना नायके हैं जनाब ।'

'ठीक है भई चार पांच गज लम्बा नाम अपने राम को सुहाता नहीं इस लिये शोर्ट नाम ही पसंद है । सो···ना···ना···य···के··· बाप रे । सिर्फ सोना अच्छा रहेगा ।'

मुस्कुराकर उसने स्वीकार कर लिया और साथ ही प्रश्न भी किया आपको शोर्ट नाम पसन्द है तो फिर अपना खुद का नाम भी आपने बहुत शोर्ट रखा होगा ?'

'शोर्ट भी और सपाट भी—मदन । शोर्ट तो है ही मगर एक भी मात्रा नहीं क्यों हुवा न सपाट ? हिन्दी पढ़ी हो ना ?'

'जी हां पढ़ी है । प्रभाकर पास किया है मैंने ।' मि० सोना ने बताया ।

'तब तो समझदार हो—अच्छा मैं तुम्हारा टैस्ट लेता हूं ।' मदन ने

कहा और फिर आगे आगे चलती लड़की की तरफ इशारा करके पूछा 'जरा इसे देख कर बताओ कि यह किस खेत में उगी होगी ?'

'यह चीन की पैदावार है।' उसने निर्णयात्मक उत्तर दिया।

आश्चर्य हुवा मदन को सोना की बुद्धि पर—पूछा 'कैसे कह सकती हो ?'

'रंग लंका वालों से गोरा है मगर पीलापन लिये हुए है इस लिये साफ ही जाहिर है कि यह चीनी है।'

'साली कूल्हे मटका के क्यों चल रही है ?'

'इसकी चाल बता रही है कि स्वभाव से अभिमानी है। इसके पिता किसी ऊंचे ओहदे पर होने चाहियें।'—या धनवान होने चाहियें'

सोना की विलक्षरण बुद्धि पर मदन को आश्चर्य होने लगा—पूछा 'इसके पिता क्यों ? पति क्यों नहीं ?'

'अभी इसने विवाह नहीं किया ?'

'तुम्हें कैसे मालूम ?'

'उसकी पिंडलियों की बनावट से ऐसा ही लगता है। पिंडली की मांस पेशी देख रहे हैं ना आप, यह घुटने से लेकर टखने तक की लम्बाई के आधे भाग से कुछ ऊपर है। कवारी लड़कियों में ऐसा ही पाया जाता है। शादी के बाद यह मांस पेशी आधे भाग से नीचे आ जायगी।'

मदन कुछ और भी पूछने वाला था कि एक अनोखी घटना घटी। आगे आगे चलती युवती एकदम चीखी और अपना वैनिटी बैग पटक कर पीछे मुड़कर भागी। मदन सोना का हाथ छोड़कर उसकी सहायता को आगे बढ़ा मगर तब तक तो लड़की एकदम उसके आ चिपटी।

उसके चेहरे पर भय के स्पष्ट भाव थे।

मदन ने उसे अपने से अलग करते हुए पूछा 'क्या बात है मिस...'

सांप...सांप...बउत बड़ा, एक दम काला।' उसने एक हाथ से पगडंडी की तरफ इशारा कर दिया।

मदन ने आगे बढ़कर देखा तो वाकई एक नाग बीच पगडंडी में बैठा

था अपना फन उठाये और उसके करीब से दूसरा सांप जो शायद उसकी मादा रही होंगी झूमती इठलाती गुजर रही थी पगडंडी के आर पार। जब नागिन पगडंडी पार करके दूसरी तरफ निकल गई तो साँप भी उसके पीछे पीछे चल दिया।

'धन्यवाद' उसने चीनी लहजे में शुक्रिया अदा किया।

'रेलवे स्टेशन का नाम है मिस—मेरा नाम यह नही है' मदन ने उत्तर दिया और सोना के साथ साथ आने का संकेत करके उसके साथ आगे बढ गया। आगे बढ़ कर उसका बैग उठा कर चीनी युवती को थमा दिया।

'धनवाद' उसने फिर धन्यवाद दिया।

'ओह—मिस···मिस···।'

'मिस लूशी—मेरा नाम लूशी है मिस्टर। तुम कोउन है ?'

मदन को सोना की बातों में सत्यता नजर आने लगी। उसने अनुभव किया कि कमबख्त आप की बजाय सीधी तुम पर ही आगई है। उसे भी शरारत सूझी तो झट से अपने बारे में बता दिया 'हम इंडियन एयर फोर्स में स्क्वाड्रन लीडर है मिस पूसी।'

'बउत अच्चा' बउत अच्चा—अम को खुशी हुवा।' चहक पड़ी वह चीनी युवती और मदन का हाथ अपने हाथ में लेकर बड़ी गर्म जोशी से हाथ मिलाया।

चार पांच कदम चल कर उसने पूछा 'तुम बी आथी देकने जाता है ?'

'नहीं मिस लूसी—हम हथनी देखने जाता है।'

'ए क्या ओता है ?'

'हाथी का वाइफ होता हैं।'

लूसी खिलखिला कर हंस पड़ी और फिर ऐसी गोंददानी हुई कि लौटते वक्त तक चिपकी रहीं और होटल आते आते तक मदन से वादा करा लिया कि वह कल सुबह की चाय उसके यहां पीयेगी। उसने यह भी कहा कि वह सुबह ही उसे लेने भी आयेगी।

मदन ने उसे टरका कर सोना को होटल में ला बिठाया, आग्रह

पूर्वक खाना भी खिलाया और फिर उसे पहुंचाने उसके घर तक भी गया उसने अनुभव किया कि वह सोना की तरफ खिचता चला जा रहा हैं।

घर पर उसकी बीमार मां से भी मिला, घर की पतली हालत भी देखी और आते वक्त पूरे चार सौ के नोट उसकी मुठ्ठी में ठूंस आया की मां का इलाज कराये और खुद भी तकलीफ न पाये।

दूसरे दिन मिलने का वादा लेकर मदन होटल लौट आया।

खाना खाकर सोया तो काउंटर पर आदेश देता गया कि उसे साढ़े छः बजे जगा भी दिया जाय और कॉफी भी पहुंचा दी जाय।

आदेश का अक्षरक्षः पालन किया गया।

काफी पीकर सिगरेट जलाई ही थी कि मिस लूसी आ धमकी।

वेधड़क कमरे में घुस आई–किवाड़ बन्द करके चिटकनी चढ़ाई और उसके पास पलंग पर आ बैंठी और कम बख्त बैठी भी इस ढंग से कि एक पांव मदन के सिरहाने की तरफ दूसरा फर्श पर और जरा सी मदन की तरफ घूम कर। मदन भी तो अपने नाम का मदन ही था। न आव भगत की और न खुद ही उठा। पड़ा रहा। उसे लूसी की गोंरी गोरी जांघे और अंडर वीयर वगैरह साफ दिखाई दे रहे थे–बस पड़ा पड़ा घलवे देखता रहा और लूसी मन ही मन खुश होती रही कि जादू असर कर रहा है।

उठो मिस्टर !' लूसी ने उसके बालों में उंगलियां फेरते हुए कहा अम तुम को लेने आया है और तुम अबी पड़ा है।'

'उठता है मिस पूसी' उठता है हम जरा धीरे-धीरे उठता है।'

क्यों ?'

'एक दम उठने से बाल सफेद हो जाते हैं हमारे यहां ऐसा मानते हैं।'

'नानसेंनस—अबीं उठो तुम''

मदन ने दोनों हाथ फैला कर पहले अंगड़ाई ली और फिर धीरे धीरे उठकर पलंग पर बैठ गया और बोला 'लो मिस पूसी उठ गया।'

डा. दिल्ली ...
कल्याणी देवी स्मारक
पुस्तकालय
कल्याणी देवी स्मारक
पुस्तकालय
9315

अबी चलो–लेट होता है। उधर पप्पा वेट करता है।'

'अच्छा चलो–मगर तुम पहले बाहर जाओ'

'क्यों क्यों ?'

'अम कपड़े पेनेगा' मदन ने उसी के लहजे में उतर दिया।

'ऐसा ही पहनों'

फिर भला क्या शरम करता वह। उठा और कपड़े पहनने लगा तो लूसी ने टोका तुम बाथ रुम नई जायेगा ?'

'अम छैः बजे से तैयार पड़ा है मिस लूसी'

बन ठन कर तैयार हुवा तो लूशी ने उसके गले में अपनी मरमरी बाहें डाल दीं और होठों से होठ सटा दिये और फिर होटल से ले उड़ी। चीनी दूतावास की गाड़ी में—हसीन लूसी की बगल में बैठ कर ठग महाशय उसके बगले में पहुंच गये। शानदार कमरे में लूशी ने उसकी भेंट चीनी राजदूत से कराई। तीनों एक ही मेज पर चाय पीने बैठे तो राजदूत मिस्टर चिन ने ही बातचीत शुरू की और कहा 'तुमने अमारी लूशी का जान बचाया—उसका बउत बउत धनवाद मिस्टर।'

थैंक्यू सर' मदन ने भी मुस्कुरा कर धन्यवाद स्वीकार कर लिया।

आँखें नचाते हुए चिन ने पूछा 'क्या नाम है ?'

'जी—मेरा नाम मंसूर है। इंडियन एयर फोर्स में स्क्वाड्रन लीडर था,' मदन ने वही परिचय दिया जो लूशी को बताया था। इसी परिचय से वह उस पर चारों हाथों पावों से फिदा होगई थी मगर अब वह जानना चाहता था कि इस परिचय का मि० चिन पर क्या प्रभाव पड़ता है। मि० चिन और लूशी मदन के पेट में घुसने की कोशिश कर रहे थे और ठग महाशय उन दोनों की मशीनरी चैक करने की फिकर में थे।

बउत अच्चा, बउत अच्चा।' परिचव पाकर मि० चिन भी चहक पड़े। बात आगे बढ़ाने के लिये उन्होंने पूछा 'इदर सीलोन कैसा आया ?'

मदन ने रगड़ा लगाया— इधर उधर देखकर कि कोई सुन तो नहीं रहा है वह थोड़ा सा आगे झुका और फुसफुसाया 'भाग आया हूं मिस्टर चिन।'

बउत अच्छा-बउत अच्छा' मि० चिन भी गदगद होगये—पूछा 'क्यों बागना पड़ा उदर से—अमको बोलो अमको बोलो।'

'बात यह है सर' हिच किचाने का ढौंग करते हुए मदन बताने लगा और उसे उत्साहित करने के लिये चिन बीच में ही बोल पड़ा 'बोलो बोलो— अमको बोलो। ईन्दी चीनी बाई बाई। अम तुमारा मदद करेगा—बोलो बोलो।'

मदन ने गर्दन झुका ली ताकि चिन की हरकतें देखकर कहीं हंसी न आ जाये और दिखावा यह किया कि जैसे शर्म से पानी हुवा जा रहा हो।

वह बात को खींच रहा था और चिन तथा लूशी सुनने को बेचैन हो रहे थे। कनखियों से उसने लूशी की तरफ देखा तो ज़ालिम ने आँख मार दी, बोली 'कओ कओ।'

मदन अटकते हुए बताने लगा 'बात यह है मि० चिन···कि···मैं मुसलमान हूं ना—इस लिये कोई मेरा भरोसा नहीं करता। ऐयर फोर्स से हटा कर मुझे रैडार पर लगा दिया गया—वहाँ काम किया। अब चूंकि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की लड़ाई छिड़ने वाली है ना—इस लिये मुझे वहां से भी हटा दिया गया है।'

'बउत बुरा बात है मंसूर—बउत बुरा पालिसी है।'

'मुझसे तोहीन बर्दाश्त नहीं हुई सो मैं इधर भाग आया।'

'अच्छा किया-अच्छा किया' चिन उत्तर सुनकर एकदम खुश हो गये और पूछा 'अब क्या करने का है इदर?'

'इधर लंका सरकार में नौकरी कर लेगा।'

'नईं नईं' मि० चिन एक दम बिदक कर खड़े होगये और दोनों हाथ कमर के पीछे बांध कर कमरे में इधर से उधर चक्कर लगाने लगे

जैसे किसी भारी समस्या पर गंभीरता पूर्वक विचार कर रहे हों। उधर मदन उसे मन ही मन में गालियां दे रहा था कि साले कह क्यों नहीं देता पाकिस्तान जाने के लिये—मेरा तो पिंड छूटे—मगर प्रकट में वह भी गंभीर बना बैठा रहा।

एकाएक ही चिन की गाड़ी लाइन पर आ गई। वह मदन के पास आकर रुका और उसके कंधे पर हाथ रख कर पूछा 'एक तरकीब है—मानेगा?'

'पेट रोटी मांगता है मि० चिन! मानना ही पड़ेगा।'

'तुम पाकिस्तान जाओ–उदर सर्विस करो।'

'उधर भी तो कोन्फीडेंस रहेगा मि० चिन। सब लोग कहेंगे दुश्मन का जासूस है।'

'नईं नईं—ऐसा नईं बोलेगा कोई—अम बेजेगा तुमको उदर।'

'नहीं नहीं मि• चिन—' ठग महाशय अड़ते हुए कहने लगे 'वार टाइम है कोई भीं मेरा भरोसा नहीं करेगा—हां अपने किसी खास खास आदमी के साथ भेज सको तो...'

'अम लूसी का साथ बेजेगा तुमको—कल हीं बेज देगा।'

'धन्यवाद मि० चिन—आपका अहसान मानूंगा।'

'नईं नईं आसान बासान कुच नईं मगर एक बात बोलता है।'

'क्या?'

तुमारा कार्ड किदर है?'

पूर्ण विश्वासपूर्वक ठसने कह दिया 'होटल में है-कल लाकर दिखा दूंगा।'

'बउत अच्चा, बउत अच्चा—बूलना नईं।'

'नहीं नहीं—भूल कैसे जाऊंगा।'

'बउत अच्चा, बउत अच्चा—लूशी! मंसूर को ओटल बेजो।'

आदेश पाते ही लूशी उठ खड़ी हुई और उसके साथ ही मदन भी। दोनों होटल के लिये चल पड़े।

७

एक ही समस्या थीं उसके सामने ।

अपने आपको स्क्वाड्रन लीडर कैसे सिद्ध करे ?

यूँ तो साधारण सी बात थी मगर उस समय तो यही उसे पहाड़ जैसी लग रही थी क्योंकि समय बहुत कम था—सिर्फ कल तक का । वैसे वहाँ के प्रसिद्ध वैज्ञानिक मि० नंदन से भी सहायता ले सकता था मगर उसे बात कुछ जंची नहीं ।

आज तक तो उसने परिस्थितियों से हार नहीं मानी थी तो भला आज कैसे हार मान लेता ? बैठ कर समस्या का हल खोजने लगा कि स्क्वाड्रन लीडर बनने के लिये बैज व कार्ड वगैरह उसे कहाँ से मिल सकते हैं ? फौरन ही उसके दिमाग ने उत्तर सुझाया कि स्क्वाड्रन लीडर जैसा हवाई जीव सिर्फ ऐयरोड्रोम पर ही मिल सकता है वहीं का चक्कर लगा कर देखो शायद काम बन जाये ।

टैक्सी पकड़ी और उसी समय चल पड़ा ।

जिस समय एयर पोर्ट पहुँचा—बाहर सड़क पर ही काफी भीड़ देखी और पुलिस का प्रबन्ध भी देखा । सड़क के दोनों तरफ सिपाही खड़े थे और लोगों को सड़क पर उतरने से रोके हुए थे । उसकी टैक्सी को भी आगे नहीं जाने दिया गया बल्कि एक साइड वाली सड़क पर मुड़वा दिया गया ।

वहीं उसने टैक्सी वाले को दफा किया और भीड़ में जा मिला ।

इतना तो वह समझ ही चुका था कि यह सारा प्रबन्ध किसी बड़े आदमी के आने के कारण किया जा रहा है याने आदमी को आदमी से दूर रखा जा रहा है । पास खड़े एक आदमी से पूछा तो उसे पता चला कि पता नहीं कौन आ रहा है मगर कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति आने वाला है और सारा प्रबंध उसी के लिये किया गया है । मगर प्रश्न यह था आ कौन रहा है ? भीड़ में लोगों से पूछा तो एक ने बताया कि

भारत के विदेश मन्त्री आ रहे हैं। मदन को तो सुनते ही जैसे मुंह मांगी मुराद मिली। आखिर इस खबर की पुष्टि के लिये उसने एक पुलिस मैन से भी पूछ लिया 'क्यों भई ! कौन आ रहे हैं ?'

'भारत के विदेश मंत्री ' सिपाही ने छोटा सा उत्तर दिया और भीड़ को नियंत्रित करने में लग गया जो कि फुट पाथ से सड़क पर उतरने लग गई थी।

मदन वहाँ से हट गया और एक खम्बे से लग कर खड़ा हो गया और अपनी योजना बनाने लगा कि उसे कैसे क्या करना चाहिये।

उसे अधिक समय नहीं लगा।

एक पब्लिक टेलीफोन में घुसकर उसने डाइरेक्टरी में मि० नंदन के नम्बर मालूम किये और फिर नम्बर डायल कर दिये। पूरे एक मिनट तक घन्टी जाती रही तब कहीं जाकर जवाब मिला, नन्दन दिस साइड,

'गुड मोर्निग सर ! मैं मदन बोल रहा हुँ।'

'मदन ! कौन मदन ? भई मैंने पहचाना नहीं

'कोई बात नहीं प्रोफेसर साहब ? मैं तो आपको पहचानता हूं।'

'देखो भाई–मेरे पास टाइप नहीं है। मुझे बाहर जाना है, जो कुछ भी कहना है जल्दी से कह डालो।'

'जाना कहाँ है प्रोफेसर साहब ! ऐयरो ड्रोम ही तो जाना है मंत्री महोदय का स्वागत करने। खैर छोड़िये मुझे कुछ विशेष नहीं कहना है। मैं कल ही अलंकार से लौटा हूं, और चचा सुदर्शन ने आपके लिये एक पत्र दिया है। महामहिम का भी एक पत्र है, कहिये कहाँ पहुंचाऊ ?'

'ओह ! तो तुम वह मदन हो।' प्रोफेसर ने हर्ष मिश्रित स्वर में कहा

'जी–वह कौन सा ?'

'इन्टर नेशनल मदन याने शैतान लड़के हो।'

'जी—जी हूं तो वही।'

'तो देखो भई नॉटी वाय ऐसा करो–अभी तो मैं एयर पोर्ट जा

रहा हूँ तुम दोपहर को या शाम को मेरे निवास स्थान पर आ जावो।

'मुझे भी तो एयर पोर्ट ही जाना है प्रोफेसर साहब—आइये आपको आखिरी चौराहे पर मिलूगा। थोड़ी सी तकलीफ आपको और दूँगा एक हार मेरे लिये भी लेते आइयेगा। हाँ अपनी गाड़ी का नंम्बर भी तो बता दीजिये'

'जिस गाड़ी का रंग तुम्हें सबसे अनोखा दिखाई दे वही मेरी गाड़ी होगी, रोक लेना। वैसे मैं भी ध्यान रखूगा' प्रो मन्दन ने इतना कह कर फोन रख दिया। मदन भी बूथ से बाहर आया और चौराहे की तरफ बढ़ गया।

चौराहे पर फुट पाथ के किनारे खड़े होकर अनोखे रंग वाली गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा। एक-एक करके कई गाड़ियाँ निकल गई लाल काली हरीं छोटीं बड़ी मगर अनोखे रंग वाली गाड़ी नजर नहीं आई।

पूरे दस मिनट तक उसे गाड़ियाँ गिननी पड़ी तब कहीं जाकर उसे वह गाड़ी नजर आई जिसमें वाकई अनोखा पन था। लम्बी किश्ती जैसी चमचमाती गाड़ी थी। जिसका आगे का भाग इंजिन से लेकरड्राइविंग सीट तक लाल और पीछे का पीला था। इसी तरह ऊपरी भाग भी दुरंगा था। दूसरी तरफ भी शायद ऐसी ही रंगत हो तो गाड़ी अवश्य अठरंगी होनी चाहिये।

चौराहे पर अठरंगी की चाल धीमी हो गई। मदन ने देखा कि स्वयं प्रोफेसर ही ड्राइव कर रहे थे। उसने फौरन हाथ उठा कर हिलाया और प्रोफेसर की अपनी उपस्थीति का जान कारी दी। मुस्कुराये प्रोफेसर उसे देखकर और अठरंगी उसके पास आकर रुक गई। मदन ने मुस्कुराते हुए आगे बढ़ कर नमस्कार किया और ड्राइविंग सीट के दूसरी तरफ वाला फाटक खोलने लगा मगर प्रो० नन्दन ने रोक दिया' इधर नहीं भई इधर आओ।'

वे खुद खिसक आये उस सीट पर और मदन को ड्राइव करने बैठना पड़ा मदन के मंजे हुए हाथों में आकर अठरंगी लहराती हुई

आगे बढ़ गई ।

'तो तुम हो मदन ?' प्रो० ने बात छेड़ी ।

जी हां मैं हूँ—मगर मेरा हार लाये आप ?'

'हां भई लाया हूं—पीछे की सीट पर रखे है दोनों हार ।'

'तो तुम अन्तर्राष्ट्रीय ठग हो मदन ?'

'जी हां— आप से क्या छुपा है । चचा ने सब कुछ बता ही दिया होगा ।'

'हां—सुदर्शन बड़ी तारीफ करते हैं तुम्हारी मगर मुझे भरोसा नहीं आया कि तुम ऐसा कर भी शकते हो या नहीं ।'

'कैसा ?'

'सुदर्शन कहते थे कि तुम्हारे हाथ में बड़ी सफाई है ।'

'अजी' काहे की सफाई है प्रोफेसर साहब'

अन्य कारों के साथ मदन ने भी अठरंगी को खड़ा कर दिया तो बात चीत भी रुक गई । दोनों उतरे और हार लेकर अँदर चल दिये । भारतीम वायु सेना का विषेश प्लेन ज्यों ही रन वे पर आकर रुका और मंत्री महोदय उतरने लगे तो सभी उपस्थित व्यक्ति जिनमें अधिकांश भारतीय नागरिक भी थे उनके स्वागतार्थ आगे बढ़े । इसी समय मदन को काम करने का अवसर मिला और उसने प्रो० नदन की जेबों की सफाई कर डाली ।

दूसरा काम किया उसने मंत्री महोदय को हार पहनाने का ।

तीसरा काम ही मुख्य काम था जिसके लिये उसने सब पापड़ बेले थे ।

मंत्री महोदय के साथ सब आगे बड़ गये तो वह जान बूझ कर पीछे रह गया और प्लेन की तरफ चल दिया । चालक कक्ष से दो विमान चालक उतर रहे थे उन्हीं को संबोधित करते हुए उसने बड़ी प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहां सुनो भाई मेरे देश के बहादुर हवा बाजों आप लोगों को खाने का निमन्त्रण दे रहा हूं । आप दोनो साहेबान

मदन लाल हीरा चंद ज्वैलर्स की तरफ से होटल सदर्न स्टार में आमंत्रित हैं। सारा प्रबंध हो चुका हैं और आप लोगों का आधे घन्टे बाद वहाँ पहुँच जाना है। जाना तो शाम को ही होगा ना ?'

एक ने उत्तर दिया 'जी हाँ'

'ठीक हैं भई ठीक है। देखिये मैं मंत्री महोदय से विदा होकर ठीक आधे घंटे में सदर्न स्टार पहुंच जाऊँगा और आप लोगों की इंतजार करूंगा।' मदन ने कहा उन्हें कुछ भी कहने का मौका दिये बिना ही तेजी से लौट पड़ा और सब के साथ हो लिया। पायलेट अपने मेजबान को देखते रहे।

८

प्रो० नंदन को हाथ की सफाई का नमूना दिखा कर अठरंगी उनके हवाले की और मदन टैक्सी से सदंर्न स्टार आ गया। महमानों के खाने का शानदार प्रबंध करने का आर्डर देकर वह अपने कमरें में जा बैठा और अगले मौंके की तैयारी में लग गया।

दोनों महमान समय पर आ गये।

खाने का प्रबंध कमरे से ही किया गया था अतः उन तीनों के अतिरिक्त और कोई नहीं था। चार पाँच हसीन लड़कियाँ सर्विस के लिये हाजिर थीं।

खाने कीं मेज पर महमानों से परिचय प्राप्त किया तो उनमें एक तो स्क्वाड्रन लीडर इनायतुल्ला खाँ निकला और दूसरा फ्लाइट लैफ्टि० सुरेन्द्र मोहन गुप्ता।

मदन की मंजिल एक दम सामने थी ।

पहले एक दौर शराब का चला और पहले ही दौर में मदन चोट कर गया । अपनी अलमारी में से बोतल निकाल तीन प्याले बनाते वक्त ही उसने दोनों के प्यालों में नींद की गोलियां मिला दी ।

खाने से निपट कर जब तीनों सिगरेटें सुलगा कर बैठे तो दोनों की पलकें गिरने लगीं । मदद ने भी उन्हे प्रोत्साहित करते हुए कहा 'आप लोग दस पन्द्रह मिनट आराम कर लिजिये थके हुए होंगे ही. जब तक मैं जरा होटल वालों से दो दो हाथ कर आऊं' और बिना उनका उत्तर सुने ही वह कमरे से निकल भी गया ।

खाने का बिल चुका कर वह जान बूझ कर देर से लौटा और जब कमरें में आया तो दोनों महमान एक ही पलंग पर आराम से खर्राटे भर रहे थे ।

एक दो बार उन्हें हिला डुला कर उसने तसल्ली कर ली और फिर स्वा० लीडर इनायत के कागजात लेकर कमरे से निकल गया । दरवाजे में ताला लगाकर चाबी जेब में डाली और होटल से निकल कर मेन रोड पर आगया ।

वहाँ से टैक्सी पकड़ी तो सीधा मि० चिन के पास और पहुँचते ही सारे ही कागजात उसके सामने रख दिये । गद गद हो गये मि० चिन मगर कार्ड पर मंसूर की जगह इनायत नाम देख कर फुदके । मदन जानता था कि चिड़िया फुदकेगी जरूर ।

फौरन ही उसने बात संभोली मसूर घर का नाम है मि० चिन, आफीस में इनायतुल्ला खाँ के नाम से जाना जाता हूँ ।'

संतुष्ट हो गये मि० चिन, बोले 'बउत अच्छा, बउत अच्छा ।'

कागजों को संभाल कर जेब में रखते हुए मदन ने कहा' रात को लंका छोड़ कर कहीं न कहीं चला जाना पड़ेगा मि० चिन, क्यों कि भारत सरकार का एक खूनी भेड़िया सुबह मुझे यहाँ दिखाई दे गया है ।'

'कूनी बेढ़िया ?' मि० चिन, क्यों की समझमें बात नहीं घुसी।

'मेरा मतलब है भारतीय जासूस'

'कौन हैं ?' मि० चिन ने पूछकर उत्तर की प्रतीक्षा में मुंह फाड़ दिया। पास ही खड़े मदन ने एक हाथ से उनका मुंह बंद करते हुए उत्तर दिया' राज ! कर्नल राज सिंह।'

उसे क्या पता था कि इस नाम का ऐसा बेढ़ब असर पड़ेगा। मि० चिन उचक कर एक दम खड़े हो गये और दांये हाथ का घूसा बांये हाथ की हथेली में मार कर बड़बड़ाये' साला चूहा का औलाद।' फिर मदन से बोले 'फिकर नहीं–फिकर नहीं अम शाम का पलेन से तुम को करांची बेज देगा। लूसी साथ जायेगा तुमारे'

'धनबाद धनवाद मि० चिन–मेरी जान बचाना अब आपके हाथ है।'

'फिकर नहीं–फिकर नहीं' तुम ओटल में रहना, उधर लूसी को बेजेगा फिर तुम लोग पुर्रर' मि० चिन्ह ने अपनी छोटी-छोटी गोलियां सरीखी आंखें मिचका कर हंसते हुए जवाब दिया।

'धनवाद-धनवाद मि० चिन। हिन्दी चीनी भाई-भाई।' मदन ने मस्का मारा 'टीक है टीक है–इन्दो चीनी बाई-बाई'

'बस इतना सा हीं काम करना था उसे जिसे बड़ी सफाई से करके होटल लौट आया और इनायत के कागजात वापिस उसकी जेबों में रखकर उन्हें जगाने में लग गया। गोलियों की अधिक मात्रा उसने दी ही नहीं थी इस लिये दोनों जल्दी होश में आगये और मुंह धोकर तैयार हो गये।

'बड़ी जल्दी नींद आ गई आप लोगों कोतो' मदन ने सिगरेट देते एहु ही कहा,भई आप फौजी लोग भी खूब होते हो। एक दो मिनट में ही गहरी नींद सो लेते हो और एक हम लोग हैं कि दो-दो तीन घन्टे करवटें बदलते हैं तब कहीं जाकर नींद आती है।'

इनायत ने कहा' पैसे की फीकर नींद आने ही कब देती है साहब'

'मगर आप लोगों की नीद तो मौत की फिकर से भीं नहीं रुकतो बाबा। वह भी आप लोगों की तरह शायद फौजी नींद बन गई है।'

ठहाका मार कर हंस पड़े दोनों और मदन को भी साथ साथ हीं हीं करना पड़ा।

महमानों को बिदा करके मदन आराम से पलंग पर पड़ गया और आगामी मोर्चों के बारे में विचार करने लगा।

उसी दिन शाम को लूसी आई और उसे करांची ले उड़ी।

यह दिन था ५ सितम्बर।

६

५ अगस्त से पाकिस्तान ने काश्मीर में घुस पैठियों को भेजना शुरू किया।

ठीक एक महीने बाद...

५ सितंबर को उसने अपने टैंकों और हवाई जहाजों से छम्ब क्षेत्र में हमला कर दिया और दूसरे दिन यानें ६ सितम्बर को जब भारतीय सेना ने अपने हथियार संभाले तो पाकिस्तान ने वाकायदा युद्ध की घोषणा कर दी।

छः सितबर को मदन, मंसूर के नाम से करांची में था लूसी नामकी फूल झड़ी के साथ। वहीं उसने रेडियो पर यह युद्ध कीं घोषणा सुनी थी।

लंका छोडने से पहले वह एक पत्र डाक में छोड़ आया था जो कर्नल राजसिंह को ८ सितम्बर को सुबह की डाक से मिला।

पत्र यूं था— कोलंबो

बड़े भाई ! जै राम जी की । ५ सितम्बर···

अलंकार से लौटे दो तीन दिन ही हुए हैं और फिल हाल पड़ाव कोलंबो में ही था मगर पैर में चक्कर जो है—साला एक जगह टिकने ही नहीं देता ।

यहाँ भी नहीं टिकने दिया उसने और आज शाम को करांची जा रहा हूँ । जान कर ।

तुम्हें खुशी होगी कि इस यात्रा में लूसी नाम को फंटी साथ है और वह मेड इन चाइना है । उसके हिसाब से वह मुझे उड़ा कर लजा रही है और मैं भी लल्लू के पठ्ठे की माफिक उसके साथ उड़ा जा रहा हूँ । देखना है किस डाल पर बसेरा नसीब होता है ।

पता चला है कि अमरीका के धन्ना सेठों की डालरी जूती पाकिस्तानी भड़भूजों की चंदिया पर जोर शोर से बज रही है । उनकी ही देख रेख में इन कुंजड़ों ने बदीन नामक जगह पर एक हवाई अड्डा बनाया है और वहां आधुनिक तम अमरीकी रेडार लगाया गया है । इसका फिटिंग भी अपने एक यार आर्म स्ट्रांग ने किया है या कर रहा है । यही बदीन है मेरी मंजिल ।

यह तो पक्की समझो कि पाकिस्तानी उलझेंगे जरूर । हिन्दुस्तान सीधा सादा है ना बेचारा इस लिये लोगों की हिम्मतें बढ़ी हुई हैं । पहले चीन ने नेफे में हाथ डाल दिया था तो थोड़े दिन बाद पाकी बिरादरों ने कच्छे (कच्छ) में हाथ डाल दिया । इस बार अयूब भाई शायद··· । खैर छोड़ो ।

तो बंदा बदीन जा रहा है और युद्ध छिड़ा तो यह बदीन मेरे देश भारत के लिये सिर दर्द बन जायगा और मैं साले को बेदीन करके रख दूँगा । जानते हो इस वक्त मेरी हैसियत क्या है ? भारतीय वायु सेना का भगोड़ा स्क्वाड्रन लीडर मंसूर जिसे मुसलमान होने के कारण अधिकारियों ने अपने पद से हटा कर रैडार आपरेटर बना दिया था

और वह इंसल्ट न सह पाने के कारण वह भाग कर लंका चला गया और वहां से चीनी राजपूत की मार्फत करांची पहुंच गया है।

अगर रेडार में जगह मिली तो, भारतीय वायु सेना के जहाज करांची की तरफ नाक घुसेड़ेंगे और मैं बदीन में बैठा बैठा रोका करूंगा। अगर वायु सेना में जगह मिली तो बमबारी करने भारतीय सीमा में जरूर आऊंगा। सब से पास ही पड़ता है जोधपुर। सो अगर हो सके तो तुम भी जोधपुर आ टपको। कभी न कभी दोनों यार बात तो कर ही लेंगे।

हीर जी भाई के क्या हाल हैं? जानता हूं कि वह गंडक की पूंछ है फिर भी भुंगली में से निकाल कर देखना कि सीधी हुई यों नहीं?

नीरा भाभी को और कुंवरानी जी को तथा कुमार को एक एक पैकट नमस्कार मदन।

पत्र राज को उस समय मिला था जब कि वे कपड़े पहन कर बाहर जाने की तैयारी कर रहे थे। वैसे अभी रक्षा विभाग ने उन्हें केन्द्रीय जासूस विभाग को लौटाया नहीं था सिर्फ कुछ दिन की छुट्टी देकर दिल्ली भेज दिया था कि वे युद्ध क्षेत्र से दूर रह कर सुरक्षित रहें। जब से वे और हीरासिंह पाकिस्तानी आक्रमण की योजना का भांडा फोड़ करके लौटे थे तब से सैनिक अधिकारियो और स्वयं रक्षा मंत्री की नजरों में उनकी कीमत बहुत बढ़ गई थी और वे इन कीमती हस्तियों को कठिन समय के लिये सुरक्षित रखना चाहते थे।

इन दिनों दोनों एक दम खाली थे।

वाहर जाने की बजाय राज अन्दर गये और अपनी पत्नी नीरा के के पास बा बैठे। उस समय नीरा नहाने की तैयारी कर रही थी सो राज ने उसे खींच कर एक सोफे पर अपने पास बिठा लिया।

'अब क्या है साहब?' उसने इठला कर पूछा।

'एक खुश खबरी सुनाने आया हूं तुम्हें'

'तो फिर सुनाइये मगर पहले हाथ छोड़ दीजिये।'

'हाथ छोड़ देने के लिये नहीं पकड़ा है डीयर'।

'अच्छा बाब। अच्छा मगर ठीक से बैठने तो दो, हाथ तो छोड़ो'

'सच कहता हूं नीरा ! जिस दिन हाथ छोड़ बैठूंगा, चार दिन तक बिस्तर से नहीं उठ सकोगी।' राज ने हाथ छोड़ने का फिर दूसरा मतलब लगा दिया।

'ओ हो ! मुश्किल है आप से बातों में जीतना तो' नीरा ने हार मानली।

'तो फिर किस में जीत सकती हो ?'

'बताऊं ?' उसने लहरा कर गोद में अपना सिर रखते हुए कहा 'देखो मैं रोने में आपसे जीत सकती हूं।'

'मान गये भई, जीत सकती हो।'

'रूठ ने में जीत सकती हुं' नीरा ने गिनना शुरू कर दिया।

'यह भी मान गये।'

मान गये तो अब खुश खबरी उटाइये।'

'खुश खबरी यही है कि मदन की चिट्ठी आई है।' राज ने जेब से पत्र निकाल कर उसे दे दिया और नीरा अपने पति की गोद में लेटे लेटे ही पढ़ने लगी।

'सीधी बैठ कर पढ़ो ना'

'नहीं लेटे लेटे ही पढ़ूंगी'

'तुम्हारी जटा में जो यह दो मन तेल चुपड़ा हुवा है उससे मेरी पैंट चिकना हो जायेगी इसे फिर धुलाना पड़ेगा'

'तो मैं क्या करूं ?' मानिनी नायिका की तरह नीरा ठुनकी।

'तो अपनी जटा के नीचे तौलिया रखो।'

'नहीं रखती--डिस्टर्ब मत करिये चिट्ठी पढ़ने दीजिये। बड़े भाई जी---'

'नीरा सीधे से उठती हो कि नहीं ?'

'तो पहले क्यों लिटाया था ?'

'मैंने तो बैठाया था–मुझे क्या पता था कि तुम लेट ही जाओगी ?'

मदभरी आँखें बनाकर उसने राज को देखा और नाटकीय ढग से कहने लगी 'मेरे स्वामी ! लेटी रहने दीजिये ना'

मरमिटे इस अदा पर राज 'हाये हाये...मर गये...। अच्छा लेटी रहो'

'देखिये मैं फिर जीत गई' उसने शरारतपूर्ण लहजे में कहा।

'होश्त !' अब की बार जासूस महाशय भड़क उठे और नीरा को दोनों कंधों से पकड़ कर सोफे पर बिठा दिया और नीरा भी जैसे उसको बिठाया गया वैसी ही बैठी रह गई और चिट्ठी पढ़ने लगी। एक दो लाइन पढ़कर ही चौंक पड़ी 'पाकिस्तान गये हैं और इस वक्त ?' फिर सीधी तरह बैठ कर पूछने लगी 'अब क्या होगा ?'

'कुछ नहीं होगा—पूरी तो पढ़ लो।'

वह फिर आगे पढ़ने लगी। जहाँ लूसी का जिकर आया उसने मुंह विचका दिया और अपना रिमार्क कसा 'भैया जिंदगी भर नहीं सुधर सकते' पढ़ते पढ़ते जहां नेफा और कच्छ का वर्णन आया उसने चिट्ठी राज की गोद में फैंक दी 'मैं नहीं पढ़ती-बड़ी गन्दी चिट्ठी है।'

'अरे पढ़ो तो सही'

वह फिर पढ़ने लगी। अन्त में हीरा के बारे लिखे गये 'गंडक की पूछ पर' पर तो वह खिलखिला कर हंस पड़ी।

'अब सवाल यह है कि करना क्या चाहिये ?' कर्नल ने गंभीरता पूर्वक पूछा।

नीरा ने चतुर मंत्री की तरह सलाह दी 'मेरी राय में यह कोई केस तो है नहीं और नहीं इस पर आपकी नियुक्ति हुई है। इस समय चूंकि दोनों देशों में युद्ध छिड़ गया है और आप हैं देश की अमानत सो प्राइवेट तौर से भी जाने का सवाल नहीं उठता—न जाने कब आपको याद कर लिया जाये। आप तो एक काम करिये।'

'क्या ?'

'यह पत्र कुमार को दे दीजिये—क्योंकि इसमें राष्ट्र हित की सूचनाएँ हैं। वे उच्च अधिकारियों से मिल कर जैसा भी उचित समझेंगे करते रहेंगे और आप पहुँच जाइये जोधपुर। जैसा कि भैया ने लिखा है—अगर उन्हें प्लेन लेकर आने का मौका मिल जाता हैं तो वे जरूर वहां काम की सूचनाऐं छोड़ कर ही जायेंगे।'

'हुम्—शायद यही एक रास्ता है' कर्नल ने भी नीरा के प्रस्ताव को उचित मानकर स्वीकार किया और बोले 'अच्छा मैं चलता हूँ—तुम कानिया को कहकर मेरे सफर की तैयारी तो करवा हीं देना।'

'अच्छी बात है।'

राज चिट्ठी को जेब में रख कर चले गये।

१०

आठ सितम्बर

शाम को प्लेन से कर्नल जोधपुर पहुँच गये।

वहां के बारे में रक्षा मन्त्रालय तथा आर्मी हैड क्वार्टर से पूरी पूरी जानकारी हासिल करके ही चले थे। उन्हें मालूम हो चुका कि वहाँ संध्या समय से ही ब्लैक आउट कर दिया जाता है क्योंकि वैस्टर्न कमांड के सदर्न सैक्टर में जोधपुर ही एक ऐसा स्थान है जिस पर शत्रु बम वर्षा कर सकता है या जिसकी तरफ आकर्षित हो सकता है।

वैसे यह भी भली भाँति जानते थे कि इस समय जोधपुर सिर्फ नाम मात्र का ही हवाई अड्डा है। वहाँ न वायु सेना के बमवर्षक या लड़ाकू विमान रखे गये हैं और न ही कोई सैनिक केन्द्र है। पायलेटों

के प्रारम्भिक प्रशिक्षण का वह केन्द्र अवश्य है।

वहाँ के अधिकारियों को ये आदेश भी दिये जा चुके थे कि रात के समय सुरक्षा की दृष्टि से हवाई अड्डे को एक दम खाली कर दिया जाये और अत्यन्त आवश्यक कर्मचारियों के अतिरिक्त वहाँ कोई रात के समय न रहे। कुछ देर बाद ही चूंकि ब्लैक आउट का टाइम शुरू होने वाला था सो उन्होंने पोर्ट से दूर रहना ही उचित समझा और वे ग्राण्ट होटल में जा टिके। उस समय किसी अधिकारी से संपर्क स्थापित करना भी उन्होंने ठीक नहीं समझा।

ब्लैक आउट शाम के सात बजे से लागू होने वाला था सो वे जल्दी जल्दी जरूरी कामों से निपटे और फिर चहल कदमी करते हुए मेन रोड पर आ गये। किसी खास जगह जाने या किसी व्यक्ति विशेष से उस समय मिलना ही नहीं था सो आराम से सड़क पर एक तरफ चल दिये और समय काटने लगे।

तभी सात बज गये।

रोड लाइटें तो वैसे भी नहीं जलाई गई थीं और जलाये जाने का सवाल ही नहीं था। दुकानें भी बन्द होने लगी थीं और उनकी रोशनियाँ भीं बन्द की जा रही थीं। एक आध दुकान कहीं खुली भी रह गई तो होम गार्ड वाले लाठियाँ ले लेकर आ धमके और लाइट बन्द करो-लाइट बन्द करो का शोर मचा कर उन्हें भी बंद करवा दिया।

साढ़े सात बजते बजते तो एक दम सन्नाटा हो गया।

चहल पहल वाली सबसे अधिक व्यस्त रहने वाली स्टेशन रोड़ विधवा की मांग की तरह सूनी हो गई। चारों तरफ श्मशान का सा सन्नाटा छा गया।

बस्ती कब्रिस्तान की तरह दिखाई देने लगी।

चारों तरफ घना अंधेरा—खामोशी और सांय सांय।

एकाएक कुत्तों ने रोना शुरू कर दिया। दूर कहीं मोरों के बोलने की भी आवाजें आने लगीं तो कर्नल समझ गये कि मूक पशुओं को

खतरे की गंध मिलने लगी है।

तभी हवाई हमले की सूचना देने वाला सायरन बजने लगा।

रुक रुक कर हांय हांय की आवाज आने लगी तो उस डरावने वातावरण में ऐसा लगने लगा कि जैसे श्मशान में भैंस जितनी बड़ी कोई बिल्ली रो रही हो।

माहौल और भी अधिक डरावना होगया।
कहीं कहीं नजर आने वाले लोग भी सुरक्षित स्थानों की तरफ भाग निकले। कर्नल के लिये तो ये बातें नई नहीं थीं अतः वे नहीं हड़बड़ाये और दृढ़ कदमों से अपने होटल की तरफ लौट पड़े। तेजी से भागते लोगों को देख कर वे मुस्कुरा उठे। गली में घुसे ही थे कि उसी समय होटल का मैनेजर भी कहीं से भागता हुवा आगया और उन्हें बाहर ही खड़े देख कर बोला 'भागिये साहब भागिये। आइये खाइयों में चलें।'

वह रुका नहीं अतः कर्नल तेजी से उसके साथ भाग लिये। एक दो गलियां पार करके वे खुली जगह में निकल आये जो होटल के ठीक पिछवाड़े ही पड़ती थी। घने अंधेरे के कारण विशेष तो कुछ नहीं देख पाये मगर इतना अवश्य देखा कि मकानों के बीच में काफी खुली जगह छूटी हुई है। उसी मैदान में होटल वालों ने खाईयां खुदवा रखी थीं। मैनेजर के साथ वे भी एक खाई में बैठ गये। कई अन्य व्यक्ति भी आ बैठे।

आसमान में तारे चमक रहे थे मगर चूंकि सारा इलाका घने अंधेरे में डूबा हुवा था, उन तारों की चमक काफी तेज लगी।

मुश्किल से दो चार मिनट गुजरे होंगे कि आसमान में गड़गड़ाहट की आवाज गूंज उठी : गड़गड़ाहट प्रति पल करीब होती जा रही थी। कर्नल तो समझ गये कि यह पाकिस्तानी सैबर जैट की ही आवाज हैं—शायद दूसरे लोग भी समझ गये होंगे। यूंही बैठे बैठे राज को दिशा ज्ञान करने का खयाल आगया और उन्होंने पास ही बैठे हुए मैनेजर से पूछ लिया 'मैनेजर साहब! किला किस तरफ़ होगा यहां का?'

तभी पीछे से किसी ने भय मिश्रित स्वर में झिड़का 'अरे चुप भी रहिये जनाब इस वक्त जान पर बनी है और आपको किले की पड़ी है ?'

राज ने जरा भी बुरा नहीं माना इस झिड़की का—जानते थे कि जोधपुर के सारे इतिहास में हवाई हमले की यह पहली ही घटना है अतः लोगों का डरना स्वाभाविक ही है अतः वे चुप होगये मगर पास बैठे मैनेजर ने फुसफुसाकर 'उनके प्रश्न का उत्तर दे दिया' इधर है किला, बाँए हाथ की तरफ।'

एकाएक हवाई जहाज भारी गड़गड़ाहट को आवाज करता हुआ उनके ऊपर से गुजर गया। खाई में बैठे लोगों के तो जैसे प्राण ही खिच गये। जब बम वर्षक कुछ दूर निकल गया तो कोई से मिमियाय 'राम'''राम'''राम' और कर्नल के मन में उस व्यक्ति के ही नहीं उपस्थित सभी व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति जाग उठी।

तभी कहीं दूर एक भयानक चमक उठी और कर्ण वेधी धमाका हुवा।

कुछ ही दूर पर बना कोई टीन का छप्पर कांप उठा खड़ खड़ खड़। पीछे से किसी ने बम विशेषज्ञ की भांति अपनी विद्वता प्रकट की 'गया एरोड्रोम'

कर्नल ने सोचा कि अगर इस व्यक्ति के विचार को समर्थन मिल गया तो बात फैल कर अफवाह का रूप धारण कर लेगी और लोगों में यह सोच कर आतंग फैल जायगा कि दुश्मन के हवाई जहाज ने जोधपुर के ऐरोड्रोम को तबाह कर दिया है। अतः उन्होंने फौरन ही उसकी बात का खण्डन किया नही भाई ! एरोड्रोम से बहुत आगे गिरा है यह बम तो। आवाज सुनी नहीं आपने, आवाज कितनी दूर से आई थी। 'पास ही बैठे मैनेजर को राज ने ठोका लगा कर अपनी बात की पुष्टि के लिये पूछा 'क्योंजी ?'

मैंनजर ने न जाने किस विचार से कह दिया 'हाँ साहब आवाज तो दूर से ही आई थी। ऐरोड्रोम पर गिरता तो आवाज काफी

जोर से आती ।'

तभी दूसरा धमाका हुवा ।

टिनशेड फिर खड़खड़ाया । कोई फिर बोला 'राम...राम...राम ।'

इसके बाद प्लेन की गर्जना मद्धिम होती चली गई और धीरे धीरे सुनाई देनी बंद होगई । लोगों ने संतोष की सांस ली कि चलो पिंड छूटा और अनुमान लगाने लगे कि खतरा टलने का सायरन बजने ही वाला होगा अब तो ।

प्रतीक्षा होती रही मगर सायरन नहीं बजा और आशा के विपरीत वही भयंकर गर्जना फिर सुनाई पड़ने लगी और लोग बोल पड़े—फिर आगया साला बम वर्षक ने फिर वही मार्ग अपनाया याने चक्कर काट कब किले की तरफ आगया और किले पर से ड्राइव लगा कर नीचे आया और खाई में बैठे लोगों के सिरों पर से होता हुवा ऐयरोड्रोम पर पहुँच गया ।

फिर तेज रोशनी के झमाके हुए—बम गिरे और धमाके हुए ।

पूरे पचास मिनट बाद सायरन बजा । खतरा टलने की सूचना मिलते ही लोग खाइयों से निकल कर कर मैदान में आगये ।

यह थी जोधपुर के इतिहास में अपने ढंग की पहली और नई घटना और दिन था ८ सितम्बर । जनता ने नया अनुभव प्राप्त किया उ। दिन ।

एक आद ी जो खाली चड्डी वनियान ही पहने हुए था, शायद आस पास ही किसी मकान में रहने वाला होगा, बोला 'बस, आइज न्है बम मारी ?'

'और नहीं तो क्या ? आप क्या समझ रहे थे' राज ने उत्तर दिया ।

'म्हें तो ई' डरग्या सा' (हम तो यूं ही डर गये साहब)

उसके पास ही खड़ा दूसरा व्यक्ति बोला' अब के आबाद्यों साला ने, मरवा सूं कांई डरणो । अब कं ई कबर में कोनी जावां आपां तो ।'

(अब की बार आने दो साले को, मरने से क्या डरना है। अबकी बार इस क़ब्र में नहीं जायेंगे हम तो)

राज ने उन लोगों में राजस्थानी आत्मा के दर्शन किये। अनुभव किया कि नवीनता होने के कारण लोग डर गये थे मगर अब उनकी सोई हुई राजस्थानी वीरता और निर्भीकता फिर उभर आई है। राज ने अपने राजस्थानी होने पर गर्व का अनुभव किया। आखिर वह भी तो इसी वीर प्रसूता भूमि के ही एक लाल थे।

लोग अपने अपने घरों को जाने का विचार कर ही रहे थे कि फिर सायरन बजने लगा और लोग जाते जाते रुक गये। आपस में कहने लगे फिर आगया' इस बार कोई खाई की तरफ नहीं गया बल्कि एक नीम के नीचे खड़े हो गये। खाई में सिर्फ होटल में ठहरे एक दो यात्री ही गये।

फिर शत्रु का जहाज सिर पर मंडराने लगा और बम गिराने लगा।

बम गिरते रहे, धमाके होते रहे, और राज अन्य व्यक्तियों के साथ पेड़ के नीचे खड़े खड़े मौत का विनाशकारी तांडव नृत्य देखते रहे।

वह रात यूं ही कटी।

दूसरे दिन राज काफी व्यस्त रहे। सैनिक अधिकारियों से और वायु सेना के अधिकारियों से मिलने मिलाने में और अपने लिये आवश्यक प्रबन्ध करने में दोपहर होगई तब कहीं जाकर फुर्सत मिली। खा पीकर उन्होने जो लम्बी तानी तो शांम तक खूब डट कर सोये और फिर शाम की गाड़ी से बाड़मेर के लिये चल दिये।

११

मदन ने कोलम्बो से करांची पहुंचते पहुंचते तक लूसी की सारी मशीनरी चैक कर डाली। उसने लूसी से यह भी उगलवा लिया सि वह क्या है ? उसने बता दिया कि व मि० चिन की लड़की नहीं है बल्कि चीन की तरफ से भेजी गई जासूस लड़की है। चीन सरकार ने कई सुन्दर और जवान लड़कियों को वैश्यावृत्ति तथा जासूसो की शिक्षा देकर प्रवासी चीनियों के पास भेजी हैं जो उच्च अधिकारियों से सम्बन्ध स्थापित करके गुप्त बाते जानने में लगी रहती हैं। उन बातों की जानकारी वे लडकियां अपने संरक्षकों को देती हैं वे उन्हें गुप्त रूप से चीन भेज देते हैं या आने जाने वाले किसी चीनी मिशन को सौंप देते हैं। मदन ने जब लूसी से गह पूछा कि वह ऐसा क्यों करती है तो उसने जो उत्तर दिया उसे सुन कर मदन के हृदय में चीन सरकार के प्रति घृणा भर उठी। लूसी ने बताया कि यह एक गरीब विधवा की बेटी है। वह उससे किसी भी सूरत में अलग नहीं होना चाहती थी मगर उसके सामने ही उसकी मां पर तरह तरह के अत्याचार किये गये। मारा पीटा गया दोनों मां पर तरह तरह के, अत्याचार किये गये। मारा पीटा गया दोनों मां बेटियों को उनको राशन भी अधिकारियों के संकेत पर नहीं मिलता था—भूखे प्यासे रह कर भी गुजारा करती रहीं मगर अन्त में उसके सामने ही एक रात······

'एक रात राष्ट्र द्रोह के इल्जाम में उन्हें पकड़ कर जेल में ठूंस दिया गया। एकान्त कोठरी में रात को सैनिक अधिकारियों ने उससे पूछा कि वह अंतिम निर्णय कर ले कि उसे देश के लिये जासूसी करना मंजूर है या नहीं अन्यथा·········'

'दो गुंडों को कोठरी में भेजा गया ताकि वे मेरी मां के साथ, मेरी आखों के सामने बलात्कार करें उसके बाद मेरे साथ भी ऐसा ही करें।

लूसी ने सिसकते हुए मदन की बाह में मुंह छिपाते हुए कहा, और मैं हार गई मंसूर–मुझे सब कुछ स्वीकार कर लेना पड़ा तब कही जाकर माँ बेटी बच सकी। उसके बाद मेरी ट्रेनिंग शुरू हुई। अपने आपको मिटा कर मैंने माँ को सुरक्षित और सुखी रखने की कोशिश की। जब तक मैं चीन में रही सरकार माँ को सब प्रकार कों सुविधा देती रही मगर अभी कुछ ही दिनों पहले मुझे वहाँ से आने वाली लड़की से पता चला है कि मेरी माँ लम्बी बीमारी भुगत कर मर चुकी हैं। एक बर्ष से ऊपर होने आया मगर मुझे सूचना तक नहीं दी गई है। अब इस संसार में मेरा अपना कोई भीं नहीं रहा। न मेरा कोई अपना है और न मैं किसी की हूं। एक मशीनी पुतली की तरह जी रही हूं।'

लूसी की दास्तान सुन कर मदन भी एक बार तो सिहर उठा।

करांची पहुँचे तो एक चीनी महाशय उनके स्वागत को तैयार मिले वे उन दोनों को अपने निवास स्थान पर ले गये। उनका नाम था चिन-शाई लू। करांची में इंजीनियरिंग माल के एक्सपोर्ट इम्पोर्ट की फर्म खोले बैठे थे ये महाशय।

खाने पीने के बाद मतलब की बात चली।

मि०लू ने ही बात छेड़ी 'तो मि० मंसूर ! तुम स्वाड्रन लीडर था उदर ?'

'जी हाँ मदन ने भी चट से स्वीकार कर किया।

'ईंडियाँ ने तुमारा साथ अचा बरताब नई किया-बुरा बात है।'

'सो तो है ही मि०लु' मदन ने ऐसे लहजे में कहा जैसे कि भूत-काल की उस घटना के कारण उसे अब भी मानसिक कष्ट हो रहा हो 'इसी लिये मैं वहा से भाग भी आया हूँ। लूसी की बड़ी महर बानी है कि उसने मुझे आप तक पहुँचा दिया है—अब अगर आप कीं भी कृपा हों जायेगी तो मुझे अपने अपमान का बदला चुकाने का मौका मिल जायेगा।'

'जरूर जरूर।'

भारत का भगोड़ा स्क्वाड्रन लीडर मंसूर उनके लिये उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं-इसी आशा पर शत्रु के पास रहता हुआ भी मदन सुराक्षित था या उसे सुरक्षित रखा जा रहा था। इस तथ्य से मदन भी परिचित था और जानता था कि कहीं न कहीं उससे सूचनाएँ निचोड़ी जरूरी जायेंगी। जब तक वह सूचनाएँ नहीं देता है तब तक तो वह पाकिस्तान के लिये महत्व पूर्ण ही रहेगा। अपने आप को और भीं महत्व पूर्णं बनाने के लिये उसने मि० लू के सामने एक नई गप्प और छोड़ने का निश्चय किया।

'मुझे कब मौका दिया जायेगा मि० लू?' उसने पूछा।

'बउत जलदी-अम तुम को बादीन बेज देगा-लूसी का साथ। टीक है?'

'यह बादीन क्या बला है?' उसने एक दम अनजान बनकर पूछा।

एयर पोर्ट है—एँदरा बाद का साउथ में।'

'आई सी—मि० लू! हो सके तो उधर मत भेजो।'

'क्यों मि० मंसूर—ईदर क्या है—डरता है?'

'डरता तो मैं जनरल चौधरी से भी नहीं हूं मि० लू मगर जरा गड़बड़ है। अगर मैं बदीन में रहुंगा तो दिखती ही बात है कभी न कभी राजस्थान सैक्टर पर फ्लाई करना पड़ेगा और शायद बोम्बार्डमेंट भी करना पड़े। इधर जैसलमेर और बाड़मेर पड़ते है और इन दोनों ही क्षेत्रों में मेरे बहुत से यार है जो आइल एण्ड नैचुरल गैस की खोज में लगे हुए हैं। वहां के नकशे बनाने में मैंने भी उनकी बहुत मदद की थी सो उन लोगों पर बम गिराते जरा……'

मदन नई गप्प छोड़ बैठा तो लू के दिमाग में नई ही रोशनी हो गई।

कुच नईं-कुच नईं अबी आराम करो-सुबू बात करेगा।' मि० लू ने गिरगिट की तरह रंग बदल लिया और लूसी को आदेश दिया 'मंसूर को अपना रूप में बेजो मिस लूसी।'

मदन को लूसी के साथ जाना ही पड़ा।

लूसी ने उसी एक कमरे में ले जाकर बिठाया 'यह तुमारा कमरा है-आराम करो।'

'हाये हाये मेरी जान ! तुम्हारे विना आराम हराम है-तुम कहां रहोगी ?'

'मिस्टर लू का पास।' उसनें एक दम स्पष्ट बता दिया।

"और इधर यारों के दिल पर मूसल बरसते रहेंगे ?'

'नईं मिस्टर मंसूर-अम आयेगा।' लूसी ने आखें फड़फड़ा कर उसे विश्वास दिलाया और लचक कर लौटने लगी तो मदन ने उसे खींचकर बाहों में समेट लिया और कहा 'जरूर आ जाना लूसी डीयर-आज तो जाओ मगर शादी कर लेने के बाद मैं तुमको कहीं नहीं जाने दूंगा-आंखों के रास्ते दिल में बिठा कर फाटक बन्द कर लूंगा।'

'शादी ! यू मीन मैरेज ?' लूसी ने आंखें फाड़ कर पूछा।

'बस-एक दम मैरेज।'

लूसी चली गई मगर उसके दिल और दिमाग में हलचलें बढ़ गईं।

मदन पलंग पर पड़ा रहा और विचारों में खो गया।

सोचने लगा कि यह साला लू मुझे वदीन क्यों भेजना चाहता है ? अपने अमरीकी प्रवास ने उसने सुना था कि अमेरिका आंखें मींच कर पाकिस्तान को सैनिक सहायता दे रहा हैं ताकि वह गिलगिट में जमा रह सके और उसे रूसी इलाके में ताक झांक करने की सुविधा रहे। दुनिया को यही वताया जा रहा था कि यह सहायता कम्यूनिज्म के खिलाफ दी जा रही है।

आर्म स्ट्रॉग ने उसे यह भी बताया था कि अमेरिका ने पाकिस्तान को भारी संख्या में बम वर्षक और भारी भरकम नवीनतम पैटन टैंक भी दिये हैं। बम वर्षक देने की बात तो मदन की समझ में आगई थी वह यह नहीं समझ सका था कि चीन और पाकिस्तान की पहाड़ी सीमा में टैंक कैसे प्रयोग किये जायगे। जानता ही था कि टैंय मैदानी युद्ध में

ही सफलतापूर्वक प्रयोग किये जा सकते हैं और ऐसा क्षेत्र पड़ता है भारत की सीमा के पास ही सो उसे विश्वास हो गया कि यह सारी सहायता भारत के खिलाफ दी गई है।

अमेरिका की दोगली नीति पर उसे क्रोध आया।

वह बड़बड़ाया 'साले बड़े दोस्त बनते हैं चोर कहीं के।

उसे आज पूर्ण विश्वास हो गया कि ये लौह दुर्ग अवश्य ही भारत के विरुद्ध प्रयोग करने के लिये दिये गये हैं। वह भयभीत हो उठा कि इण्डिया इनका कैसे सामना करेगा ?

टैंकों से फिसल कर उसके विचार टैंक देने वालों पर गया और वह पड़ा पड़ा ही बड़बड़ाया 'साले बड़े हमदर्द बनते हैं-गुण्डों को पाल रहे हैं भारत की पीठ में छुरा भोंकने के लिये।......' उसने अमरीकियों को एक दो भारी भरकम गालियां देकर अपना गुबार निकाला और फिर सोचने में लग गया।

अब तक उसने एयरपोर्ट से लेकर मि० लू के आने तक मार्ग में अमरीकी या अंग्रेज कम देखे थे मगर चीनी काफी नजर आये थे।

आखिर बात क्या है ?

अपने इसीं प्रश्न का हल सोचते सोचते उसे नींद आगई।

न जाने कब तक सोया इसका उस समस अनुमान नहीं हो सका जब उसकी नींद उचटी और उसने अपनी बगल में कुछ हलचल सी महसूस की।

वह लूसी ही थी जो उसे जगा रही थी।

आंख खुलते ही उसने अंधेरे में उसे टटोला और धीरे से पूछा 'डीयर लूसी' 'यैस मंसूर' बड़े रोमान्टिक लहजे में उत्तर मिला।

'क्या टाइम हुवा है ?'

'सुबह का पाँच बज चुका है ?'

'बेड़ा ग़र्क !' उठते हुए उसने माथा ठोंक कर कहा 'याने कि पाकिस्तान में मुर्गों ने अजान लगा दी ?'

मदन को लूसी के साथ जाना ही पड़ा।

लूसी ने उसे एक कमरे में ले जाकर बिठाया 'यह तुमारा कमरा है-आराम करो।'

'हाये हाये मेरी जान ! तुम्हारे विना आराम हराम है-तुम कहां रहोगी ?'

'मिस्टर लू का पास।' उसनें एक दम स्पष्ट बता दिया।

'और इधर यारों के दिल पर मूसल बरसते रहेंगे ?'

'नईं मिस्टर मंसूर-अम आयेगा।' लूसी ने आखें फड़फड़ा कर उसे विश्वास दिलाया और लचक कर लौटने लगी तो मदन ने उसे खींचकर बाहों में समेट लिया और कहा 'जरूर आ जाना लूसी डीयर-आज तो जाओ मगर शादी कर लेने के बाद मैं तुमको कहीं नहीं जाने दूंगा-आंखों के रास्ते दिल में बिठा कर फाटक बन्द कर लूंगा।'

'शादी ! यू मीन मैरेज ?' लूसी ने आंखें फाड़ कर पूछा।

'बस-एक दम मैरेज।'

लूसी चली गई मगर उसके दिल और दिमाग में हलचलें बढ़ गईं।

मदन पलंग पर पड़ रहा और विचारों में खो गया।

सोचने लगा कि यह साला लू मुझे बदीन क्यों भेजना चाहता है ? अपने अमरीकी प्रवास ने उसने सुना था कि अमेरिका आंखें मींच कर पाकिस्तान को सैनिक सहायता दे रहा है ताकि वह गिलगिट में जमा रह सके और उसे रूसी इलाके में ताक झांक करने की सुविधा रहे। दुनिया को यही बताया जा रहा था कि यह सहायता कम्यूनिज्म के खिलाफ दी जा रही है।

आर्म स्ट्रोंग ने उसे यह भी बताया था कि अमेरिका ने पाकिस्तान को भारी संख्या में बम वर्षक और भारी भरकम नवीनतम पैटन टैंक भी दिये हैं। बम वर्षक देने की बात तो मदन की समझ में आगई थी वह यह नहीं समझ सका था कि चीन और पाकिस्तान की पहाड़ी सीमा में टैंक कैसे प्रयोग किये जायगे। जानता ही था कि टैंक मैदानी युद्ध

ही सफलतापूर्बक प्रयोग किये जा सकते हैं और ऐसा क्षेत्र पड़ता है भारत की सीमा के पास ही सो उसे विश्वास हो गया कि यह सारी सहायता भारत के खिलाफ दी गई है।

अमेरिका की दोगली नीति पर उसे क्रोध आया।

वह बड़बड़ाया 'साले बड़े दोस्त बनते हैं चोर कहीं के।

उसे आज पूर्ण विश्वास हो गया कि ये लौह दुर्ग अवश्य ही भारत के विरुद्ध प्रयोग करने के लिये दिये गये हैं। वह भयभीत हो उठा कि इण्डिया इनका कैसे सामना करेगा ?

टैंकों से फिसल कर उसके विचार टैंक देने वालों पर गया और वह पड़ा पड़ा ही बड़बड़ाया 'साले बड़े हमदर्द बनते हैं-गुण्डों को पाल रहे हैं भारत की पीठ में छुरा भोंकने के लिये।......' उसने अमरीकियों को एक दो भारी भरकम गालियाँ देकर अपना गुबार निकाला और फिर सोचने में लग गया।

अब तक उसने एयरपोर्ट से लेकर मि० लू के आने तक मार्ग में अमरीकी या अंग्रेज कम देखे थे मगर चीनी काफी नजर आये थे।

आखिर बात क्या है ?

अपने इसीं प्रश्न का हल सोचते सोचते उसे नींद आगई।

न जाने कब तक सोया इसका उस समस अनुमान नहीं हो सका जब उसकी नींद उचटी और उसने अपनी बगल में कुछ हलचल सी महसूस की।

वह लूसी ही थी जो उसे जगा रही थी।

आँख खुलते ही उसने अंधेरे में उसे टटोला और धीरे से पूछा 'डीयर पूसी' 'यैस मंसूर' बड़े रोमान्टिक लहजे में उत्तर मिला।

'क्या टाइक हुवा है ?'

'सुबू का पाँच बज चुका है ?'

'बेड़ा ग़र्क !' उठते हुए उसने माथा ठोंक कर कहा 'याने कि पाकिस्तान में मुर्गों ने अजान लगा दी ?'

'व्हाट ? कीदर मुर्गा ?'

'तेल लेने गया साला मुर्गा और उसके साथ गया मौलवी। तुम रात भर गायब रह कर अब आई हो साली छिनाल ?'

आश्चर्य से लूसी ने दोहराया' छिनाल ? क्या ओता है ?'

'बताऊंगा मेरी चमक चांदनी, इसका मतलब भी बता दूंगा। अभी तो यह बताओ कि अपने यार से क्या प्रोग्राम बनाया है ?' मंसूर जला जा रहा था।

'छै बजे चल देने का है। तैयार ओ जाओ।' लूसी ने बता दिया।

दोनों तैयारी में लगे और नाश्ता पानी से निपट कर छः बजे मि० लू के सामने पहुंच गये। जाते ही मंसूर ने एक दम सीधा सवाल किया 'बोलो मि० लू किधर जाना है ?'

'अमारा गाड़ी से इस्टेशन जाओ और आगे लूसी तुमको ले जायगा'

'यानी यह गीदड़ पट्टा मेरे गले में रहेगा ?'

'क्या बोला—अम समजा नहीं ?'

'याने लूसी मेरे साथ जायेगी ना ?'

'टीक है टीक हैं—साथ रहेगी'

पारा तो वैसे हीं गरम था और इस गर्मी में लूसी के साथ का मतलब उसने यह समझा कि साला मेरी चौकीदारी के लिये जोंक चिपका रहा है। मन ही मन उसने निश्चय किया कि इस साली लूसी को बेचकर टके न कर लिये तो मेरा भी नाम मदन नही मिस्टर लू।

सफर शुरू होगया—मार्ग दर्शक थी लूसी।

हैदराबाद तक कोई खास बात नहीं हुई और मदन ने अपनी जेब से एक भी कौड़ी खर्च नहीं की उल्टा तरह तरह की फरमाइशें करके लूसी को परेशान कर लिया उसने। मगर उसका हर बार वह बड़ी शान्ति से सहती रही। मुस्कुराती रही और उसके नाज नखरे उठाती रही एक भारतीय पत्नी की तरह।

हैदराबाद में कुछ समय बिताकर बदीन जाने वाली गाड़ी से सफ

शुरू होना था।

वहाँ उतरते ही वे दोनों अपना सामान एक चीनी के हवाले करके शहर की तरफ चल दिये थे। स्टेशन पर ही चीनी उन्हीं के इन्तजार में खड़ा था। लूसी ने ही उससे चीनी में बातचीत की थी जिसे मंसूर क़तई नहीं समझ पाया। जब सामान उसके हवाले करके लूसी उसे लेकर जंकशन से बाहर निकली तो उसने अनुमान लगाया कि मि० लू ने यहाँ किसी को फोन द्वारा सूचना दी होगी और स्वागतार्थ आया हुवा व्यक्ति उसी का कोई आदमी होना चाहिये। मदन इसी परिणाम पर पहुंचा कि ये चीनी उसे और लूसी को पूरी तरह से नजर में रखे हुए हैं और आगे से आगे एक दूसरे को सौंपते जा रहे हैं। एक बार तो उसके जी में आया कि सबको चकमा देकर कहीं गायब हो जाये मगर फिर सोचा कि इस प्रकार न तो वह बदीन पहुँच सकेगा और न ही अपने मित्र आर्म स्ट्रांग से ही मिल पायेगा अतः गड़बड़ करने का विचार उसने त्याग दिया और लूसी के साथ चुपचाप चलता रहा। हैदराबाद में भी उसने चीनियों को अमरीकियों की अपेक्षा अधिक संख्या में ही पाया। यह बात अभी तक उसके दिमाग़ में नही आ पाई थी कि आखिर ऐसा क्यो है ? अभी तक न तो किसी पाकिस्तानी अधिकारी ने ही उससे पूछ ताछ की थी और नही उसे लूसी ने किसी से मिलाया था।

दोनों होटल निगार में खाना खाने पहुंच गये।

वैसे होटल का नाम तो मुसलमानी ही था इंतजाम भी मियाँ भाइयों के ही हाथों में था मगर बेयरे खिचड़ी थे यानें लोकल आदमी भी थे उनमें और चीनी तथा विदेशी बेयरे भी थे। यह प्रबन्ध शायद इस लिये था कि चीनो ग्राहकों को चीनी बेयरे अटैन्ड करें और अमरीकियों या गोरों को विदेशी बेयरे।

डाइनिंग हाल में काफी भीड़भाड़ थी! लूसी भी मंसूर को साथ लेकर एक मेज पर बैठ गई मगर बेयरे बिचारे उलझन में पड़ गये। उनके लिये समस्या यह थी उन्हें चीनी बेयरा अटैंड करे या पाकिस्तानी

बेयरा ? मंसूर ने इस उलझन को सुलझाने के लिये एक पाकिस्तानी बेयरे को इशारे से अपने पास बुलाया। उसने पास आकर बड़े अदब से दोनों को सलाम किया और आर्डर की प्रतीक्षा में खड़ा रहा।

'भई देखो ! दो आदमियों का खाना लाओ—' मदन ने मेजबान बनते हुए आर्डर दिया 'एक हमारे लायक और एक चीनी टाइप'

'जी बहुत बहतर है।'

'यह इकहत्तर बहत्तर की बात छोड़ो मियां-जरा फुर्ती रखो-पेट में खरगोश कलामुन्डी खा रहे है बहुत देर से, जावो जल्दी।'

अदब से सिर झुका कर मुस्कुराता हुवा वह चला गया तो उसने लूसी से बात शुरू की 'लूसी डार्लिंग ! तुम यहीं हो या कहीं चल दी ?'

लूसी न जाने क्या सोच रही थी, चौंकी और बोली 'क्या बोला ?'

'उल्लू' मंसूर ने संजीदगी से जवाब दे दिया।

'उल्लू ? ओटल में उल्लू कैसा बोलेगा मि० मंसूर ?'

उम्मीद पर दुनिया खड़ी रहती है डार्लिंग ! कभी न कभी बोलेगा ही।' ऐसे भोलेपन से उसने जवाब दिया जैसे उल्लू का बोलना बहुत बड़ी बात हो और वह बरसों से अच्छा आदमी है। आमको ऐसा आदमी पसदं है।'

'यारो को कौन पसदं नही करता झुनझुने ? उधर थे तो जिस सड़क से गुजर जाते थे लड़कियाँ बेहोश हो हो कर अपने कमरों की खिड़कियों से निचे सड़क पर आ गिरती थीं और उन्हें सभालने के लिये हमारे पीछे पीछे एंबुलेस चला करती थी'

'ऐसा !'लूसी ने उसकी बातों में दिलचस्पी लेना शुरू किया और फिर पूछना 'फिर इदर ऐसा क्यों नहीं ओवा ?'

'इधर लड़कियाँ है ही कहाँ ?'

देको देको हॉल में इतना लड़की लोग बैटा है।,

'देखा है लूसी डीयर देखा है—ये लड़कियां नही है।'

'क्यों नई है ?'

'क्यों कि इनमें किसी की भी धुकधुकी मशीन काम नहीं करती ।'

'यह क्या ओता है ?'

'इधर होता है।' उसने अपने सीने पर बांई तरफ हाथ रख कर बताया और उंगलियों और अंगूठे को बन्द करके' खोल के समझाया 'ऐसा ऐसा करती है मशीन ।?'

मुस्कुरा उठी लूसी । तभी बेयरे खाना ले आये और मेज पर सजाने लगे। लूसी तो भला क्या समझ पाती कि मंसूर ऐसी ऐसी बातें क्यों कर रहा है मगर मंसूद उस समय तक खाने पर टूट पड़ा था और रह-रह कर पास की मेज पर बैठी तीन लड़कियों को कनखियों से देखता भी जाता था । उसमें से एक लड़की उसकी तरफ विशेष रूप से आकृष्ट हो कर चोरी चोरी उसकी तरफ देख रही थी।

मंसूर भी उसी को आकृष्ट करना चाहता था और मुख्य करण यह था कि उसकी सुराही दार गर्दन में हीरो का जगमगाता हुवा हार पड़ा हुवा था । उसी के कारण तो मँसूर की उंगलियों में खुजली उठी थी और लूसी को उसके पास वाली मेज पर घसीट लाया था । कीमती हार सामने हो और मदन चुप रह जाये यह भी कैसे हो सकता था। उसे बल मौके की इंतजार थी ।

कुछ ही देर में आरकेष्ट्रा की मधुर ध्वनी गूंजने लगीं ।

ज्यों ही लड़कियाँ खाना खत्म करके निपटीं मंसूर ने भी खाना खत्म किया और उठा कर वाश बेसिन की तरफ चल दिया ।

फ्लोर पर कुछ जोड़े थिरकने लगे थे और करीब करीब सभी लोग उधर ही बढ़ते जा रहे थे। तीनों लड़कियाँ भी उधर ही जा रही थी अतः मंसूर मियां भीं लूसी कीं कमर में हाथ डाले उधर ही चल दिये और भीड़ में मिल गये ।

फ्लोर पर चमकती काफी तेज रोशनी एक दम बुझी और लाल रोशनी फैल गई। लाल रोशनी में नाचने वाले नहा उठे । कपड़े लाल, चेहरे लाल सब कुछ लाल ही लाल। मंसूर भी लूसी को लेकर आगे

बढ़ा और उनमें शरीक हो गया ।

वह लड़की एक फौजी-अफसर टाइप आदमी के साथ नाच रही थी ।

लाल रोशनी बुझ कर नीली हो गई ।

चक्कर काटता हुवा मंसूर उस जोड़ी के करीब पहुँच गया । संगीत अब तेज होता जा रहा था नाचने वालियों के कपड़े राउंड लेते वक्त लहरा लहरा कर दूसरों के कपड़ों से टकराने लगे थे । नृत्य में काफी गति आ चुकी थी कि एक झनाका हुवा और हल्की रोशनी गुल हो गई । मंसूर एक बार तो चौंका कि यह क्या हुवा मगर पास ही से हल्की हल्की पुच पुच की आवाजें आने लगी । किसी की सिसकारी सुनाई दे जाती तो किसी की दबी दबी हंसी ।

उपयुक्त अवसर था अतः मंसूर मियां अपना काम कर गये ।

निलो रोशनी फिर जल उठी । एक दूसरे के चेहर कम दिखाई दे रहे थे । नृत्य उसी तीव्र गती से शुरू हो गया जिस गति पर वह रुका था । राउंड लेता हुवा मंसूर भीड से निकल गया । लूसी को लेकर काउंटर पर पहुँचा बिल अदा करके बाहर निकला और टैक्सी करके स्टेशन पहुंच गया ।

आधे घन्टे बाद गाड़ी ने स्टेशन छोड़ दिया ।

उस समय मंसूर ने घड़ी पर नजर डाली—ठीक ग्यारह पेंतीस हो रहे थे ! गाड़ी तेजी से भागी जा रही थी मदन ने सिगरेट का आखरी कश लगा कर बाहर फेंक दी तब लूसी कपड़े बदल कर बथ पर लेट कर उसी को देख रही थी । मंसूर उठा और उसके पास जा बैठा । उसकी पीठ सहलाते हुए उसने कहा 'माई डीयर लूसी'

'हूँ,

'तुमने कहा था ना कि तुम्हें यह सब अपनी मां की वजह से करना पड़ा है ।'

'हां—कहा था मगर किसी को बोलने का नहीं है मंसूर है भ्रम । मारा

जाएगा ।'

'नहीं बोलेगा डीयर—नहीं बोलेगा ।' मंसूर ने आश्वासन देकर कहा तो अब तुम्हारी माँ तो रही नहीं तुम इस चीनी सरकार का पुर्जा बन गई हो ?'

'मजबूरी है मंसूर '

'बढ़िया जेवर पहनने को जी तो करता ही होगा ।'

जुबान से तो उसने कुछ नहीं कहा मगर शर्मा कर उसने मदन की गोद में मुंह छिपा लिया । मदन उसकी जुल्फें सहलाने लगा ।

कुछ देर बाद उसने सिर उठाया तो मंसूर ने बात छेड़ी 'होटल में उस लड़की के गले में हार देखा था हीरो का ?'

,ओह ! कीमती था बउत ।'

तुम पहनोगी ?'

चौंक पड़ी लूसी । उसे ऐसा लगा जैसे भिखारन को किसी ने रानी बनने के लिये कह दिया हो । फौरन उठी और मंसूर से एक दम सट कर बैठ गई 'किदर है ?'

मंसूर ने जेब से हार निकाला और लूसी की आँखों के सामने झुलाने लगा । खुशी के मारे लूसी की आंखें फैली जा रहीं थीं । उसे आश्चर्य भी हो रहा था कि वही हार है मगर मंसूर के पास कैसे आया ? फिर उसने अपनी पीठ मंसूर के सीने से सटा दी और दोनों हाथों से अपने बालों को गर्दन पर से ऊंचा कर दिया ।

हार मंसूर ने उसके गले में पहना दिया ।

खुशी के मारे लिपट गई मंसूर से—उसने अपने आप को समर्पण कर दिया । उसकी गर्दन में थोड़ा सा बोझ पड़ा मगर दिल और दिमाग मंसूर के अहसान से ऐसा दब गया जैसे सौ मन का पत्थर रख दिया गया हो !

'लूसी डार्लिंग ?'

'यस डीयर'

बढ़ा और उनमें शरीक हो गया।

वह लड़की एक फौजी अफसर टाइप आदमी के साथ नाच रही थी।

लाल रोशनी बुझ कर नीली हो गई।

चक्कर काटता हुवा मंसूर उस जोड़ी के करीब पहुँच गया। संगीत अब तेज होता जा रहा था नाचने वालियों के कपड़े राउंड लेते वक्त लहरा लहरा कर दूसरों के कपड़ों से टकराने लगे थे। नृत्य में काफी गति आ चुकी थी कि एक झनाका हुवा और हल्की रोशनी गुल हो गई। मंसूर एक बार तो चौंका कि यह क्या हुवा मगर पास ही से हल्की हल्की पुच पुच की आवाजें आने लगी। किसी की सिसकारी सुनाई दे जाती तो किसी की दबी दबी हंसी।

उपयुक्त अवसर था अतः मंसूर मियां अपना काम कर गये।

निली रोशनी फिर जल उठी। एक दूसरे के चेहरे कम दिखाई दे रहे थे। नृत्य उसी तीव्र गती से शुरू हो गया जिस गति पर वह रुका था। राउंड लेता हुवा मंसूर भीड से निकल गया। लूसी को लेकर काउंटर पर पहुँचा बिल अदा करके बाहर निकला और टैक्सी करके स्टेशन पहुंच गया।

आधे घन्टे बाद गाड़ी ने स्टेशन छोड़ दिया।

उस समय मंसूर ने घड़ी पर नजर डाली—ठीक ग्यारह पेंतीस हो रहे थे ! गाड़ी तेजी से भागी जा रही थी मदन ने सिगरेट का आखरी कश लगा कर बाहर फेंक दी तब लूसी कपड़े बदल कर बर्थ पर लेट कर उसी को देख रही थी। मंसूर उठा और उसके पास जा बैठा। उसकी पीठ सहलाते हुए उसने कहा 'माई डीयर लूसी'

'हूँ,

'तुमने कहा था ना कि तुम्हें यह सब अपनी माँ की वजह से करना पड़ा है।'

'हाँ—कहा था मगर किसी को बोलने का नहीं है मंसूर है अंम। मारा

जाएगा ।'

'नहीं बोलेगा डीयर–नहीं बोलेगा ।' मंसूर ने आश्वासन देकर कहा तो अब तुम्हारी मां तो रही नहीं तुम इस चीनी सरकार का पुर्जा बन गई हो ?'

'मजबूरी है मंसूर '

'बढ़िया जेवर पहनने को जी तो करता ही होगा ।'

जुबान से तो उसने कुछ नहीं कहा मगर शर्मा कर उसने मदन की गोद में मुंह छिपा लिया । मदन उसकीजुल्फें सहलाने लगा ।

कुछ देर बाद उसने सिर उठाया तो मंसूर ने बात छेड़ी 'होटल में उस लड़की के गले में हार देखा था हीरो का ?'

,ओह ! क़ीमती था बउत ।'

तुम पहनोगी ?'

चौंक पड़ी लूसी । उसे ऐसा लगा जैसे भिखारन को किसी ने रानी बनने के लिये कह दिया हो । फौरन उठी और मंसूर से एक दम सट कर बैठ गई 'किदर है ?'

मंसूर ने जेब से हार निकाला और लूसी की आंखों के सामने झुलाने लगा । खुशी के मारे लूसी की आंखें फैली जा रहीं थीं । उसे आश्चर्य भी हो रहा था कि वही हार है मगर मंसूर के पास कैसे आया ? फिर उसने अपनी पीठ मंसूर के सोने से सटा दी और दोनों हाथों से अपने बालों को गर्दन पर से ऊंचा कर दिया ।

हार मंसूर ने उसके गले में पहना दिया ।

खुशी के मारे लिपट गई मसूर से–उसने अपने आप को समर्पण कर दिया । उसकी गर्दन में थोड़ा सा बोझ पड़ा मगर दिल और दिमाग मसूर के अहसान से ऐसा दब गया जैसे सौ मन का पत्थर रख दिया गया हो !

'लूसी डार्लिंग ?'

'यस डीयर'

'एक बात पूछनी है तुम से ?'

पूचो पूचो–क्या पूचने का है डीयर' लूसी चहंकी ।

'मुझे बदीन क्यों ले जारही हो–मैं लाहौर जाना चाहता हूँ ।'

'नई-नई मंसूर–उदर अमरीकी लोग बउत है ।वे लोग नार्थ में ज्यादा इंट्रैस्टेड हैं–उदर हमारा कोई दिल चस्पी नई है ।'

'तो चीन वालों को साउथ में क्या लड्डु मिलने की उम्मीद है ?'

'ऐसा है',सीधी बैठ कर लूसी बताने लगी 'इदर राजस्थान है। अमारा बासको मालूम उवा है कि इदर तेल निकलने वाला है इसलिये वह चाहता है कि जैसालमीर बारमीर जल्दी लिया जाये । पाकिस्तान से अम लोंग इसे लीज पर लेगा–बास मालामाल ओ जायेगा ।'

तुम इदर का इलाका कूब जानता है इसलिये तुम को ईदर रका है ।'

सारी कहानी मदन की समझ में आ गई ।

बदीन में उसकी दिल चस्पी बढ़ने लगी । वैसे भी यहाँ पाकिस्तान में आया ही बदीन एयर पोर्ट पर अपने दस्तखत करने था मगर जब चीनियों की चाल का पता चला तो आश्चर्य चकित रह गया कि कैसा षडयंत्र रचा जा रहा है ।

चीन के स्वार्थी शासक अपने हित के लिये पाकिस्तान की पीठ थपथपा रहे हैं ताकि वह भारत से भिड़ जाये । आदमी वह अपने में खाये और फायदा उठायें चीनी उधर अमेरिका भी हथियारों की दान दक्षिणा दिये जा रहे हैं । उसे तरस आया वहाँ के शासकों की बुद्धि पर जो इन चालों को समझ ही नहीं पा रहे थे ।

१२

रेल यात्रा समाप्त हुई और गाड़ी बदीन पहुँच गई ।

फर्स्ट क्लास के वेटिंग रूम में मदन को ठहरा कर लूसी स्थानीय अधिकारियों से मिलने और मदन के लिये आवश्यक प्रबन्ध करने चल दी । जब वह अकेला रह गया तो फुर्सत से अपनी योजना बनाने बैठा कि आगे तमाशा कैसे देखना चाहिये ।

सब से पहले कर्नल राज का खयाल आया ।

पाकिस्तान यात्रा पर रवाना होने से पहले कर्नल को पत्र डाल ही आया था इसलिये उसे पूर्ण विश्वास था कि कर्नल जोधपुर आयेंगे जरूर । उसने पत्र में लिखा था कि अवसर मिला तो भारत जरूर आऊंगा—सो मदन सोचने लगा कि भारत जाने के लिये क्या तरकीब की जाये ? कर्नल प्रतिक्षा करेंगे सो उसने मन ही मन निश्चय किया कि जोधपुर का चक्कर लगाना ही पड़ेगा ।

यह उसी हालत में सम्भव हो सकता था जब कि या तो उसे स्वतंत्र रूप से कोई बम वर्षक चलाने को मिल जाय या उसे किसी विमान चालक के साथ भेजा जाय । मन ही मन उसने निश्चय किया कि जोधपुर पहुँचने के लिये वह हर उस काम को स्वीकार कर लेगा जो उसे सौंपा जाएगा ।

बैठे-बैठे काफी देर हो गई मगर लूसी नहीं आई ।

सामान क्लाक रूम में रखवा कर वह स्टेशन से बाहर निकला और चहल कदमी करता हुवा बस्ती की त फ चल दिया । स्टेशन से बस्ती अधिक दूर नहीं थी अतः वह थोड़ी ही देर में मुख्य बाजा में पहु च गया । वैसे कुछ खरीददारी करने का विचार तो था नहीं मगर फिर भी एक बुक्सेलर की दुकान पर उसे एक अमेरिकन पाकेट डायरी बहुत पसन्द आई और उसने खरीद लिया ।

एकाएक ही उसे लूसी का खयाल आया वैसी ही एक डायरी उसके लिये भी लेली और उसी बेफिक्री से बाजार का चक्कर काटकर स्टेशन लौट गया।

आधा घन्टा और इन्तजार में गुजारना पड़ा तब कहीं जाकर लौटी। इस बार वह एक फौजी जीप में आई थी अतः मदन देखते ही समझ गया कि मामला ठीक ही निबटता चल रहा है। जीप से उतर कर लूसी मदन के पास आ बैठी—बोली 'सॉरी डीयर! अमको देर ओगया मगर काम सब टीक उवा।'

'क्या ठीक हुआ? उसने निर्विकार भाव से बात से पूछा।

'अम बॉस से मिला। बॉस ने कमांडिंग आफीसर से बात कीया। उसने तुम को मिलने को बुलाया है।'

'याने मैं कमांडर का इन्टरव्यू लूंगा?'

खिलखिला कर हंस पड़ी लूसी और हसती हुई कहने लगी 'तुम नहीं—

कमांडिंग आफीसर तुमारा लेगा।'

'तो समझ लो डार्लिंग साले का बेड़ा ही गर्क हो जायेगा।'

'क्यों?'

'क्यों की ऐसी तैसी—' उसने झिड़क कर दूसरी बात पूछी 'तुम यह बताओ कि अगर हम इन्टरव्यू में फेल हो गया तो? फिर क्या होगा?

इस बात पर तो एक बार लूसी भी फिकर में पड़ गई मगर फौरन ही सभल कर कहने लगी मसूर डीयर—लुनो तुम स्क्वाड्रन लीडर है—तुमको प्लेन चलाना आता है फिर फेल होने का बात कैसा ओयेगा?'

लूसी की बात थी वजनदार ही मगर मंसूर का भेजा तो उससे भी वजन दार था—फौरन ही उसने बिना किसी हिच किचाहट के उत्तर दिया 'अमेरीका ने जो बमबार यहां वालों को दिये हैं वे हिन्दुस्तान

को नहीं दिये इसलिये हम को चलाना सीखना पड़ेगा ना ? उधर इन्डिया में हल्का जहाज है ।'

बात यह भी वजन दार थी अतः लूसी का दिमाग इसके नीचे दब सा गया और उसे एकाएक कोई जवाब नहीं सूझा । वह सोच में पड़ गई ।

मदन ने स्वयं ही मार्ग सुझाया 'इसीलिये हमको पहले बॉस से मिलना पड़ेगा डालिंग वर्ना सब गड़बड़ हो जायगा ।'

'ठीक है ठीक है—चलो अबी '

सामान निकलवा कर जीप में रखा और गाडी दोनों को लेकर चल पड़ी ।

गाड़ी चलती रही । लूसी अपने विचारों में खोई हुई थी और मदन का दिमाग भीं शान्त नही था, कि अनुमान लगा रहा था कि लूसी इस बार किससे भिड़ायेगी । इतना तो खैर वह जानता ही था एयर पोर्ट पर तीन नसल के आदमी मिलेगे जिनमें पाकिस्तानी अफसर ज्यादा होंगे मगर होंगे कठ पुतल टाइप ही याने सब के सब ही चिड़िया के गुलाब होगे । इन कठपुतलियों की डोरियां खींचने वाले होंगे चीनी और इस नाटक के लिये स्टेड तैयार करते होंगे अमरीकी । वह बड़बड़ाया' कहीं की ईट कहीं का रोड़ा भानमती ने कुनबा जोड़ा' मगर प्रत्यक्ष में वह एसा घबराया सा बैठा रहा जैसे नोकरी पाने के लिये इन्टरव्यू लेने वालों के सामन से पहले उम्मीद वार घबराया हुवा रहता है ।

लूसी उसे एक आफिस में ले गई ।

बाहर लगी पलेट पर उसने पढ़ 'एयर बइस मार्शल सरवर खाँ'

दोनों ही जब अन्दर पहुँचे तो मंसूर ने तो ठाट दार सैल्यूट दिया मगर लूसी ने मुस्कुरा कर तारे नजर चलाये और मार्शल फौरन ही उठ कर मुस्कराये और हाथ बढ़ा कर उस नाजनी का हाथ अपने हाथ में ले लिया ।

लूसी तो पुरानी प्रेमिका की तरह सरवर खाँ साहब की बगल वाली कुर्सी पर जम गई और मंसूर को अटेंशन पोजीशन में ही खड़ा रहना पड़ा।

सरवर खाँ ने मंसूर को ऊपर से नीचे तक ग़ौर से देखा और मंसूर ने भी एक नौकरी पाने के उम्मीदवार की तरह झिझकते हुए एकाधबार नजरें उठाईं और अपने आफीसर का जायजा लिया।

मदन ने सरवर खाँ का जो नकशा अपने दिमाग़ में खींचा वह इस प्रकार था। लम्बा कद ऊँठ जैसा, पतला शरीर जैसे दियासलाई, आंखें गोल गोल बटेर जैसी। गिलहरी की तरह दो दांत आगे निकले हुए जिन पर पान की पुट, बाल पीछे की तरफ मुड़े हुए मगर भारत और पाकिस्तान की तरह दो भागों में बंटे हुए।

सरवर खाँ ने लूसी से सामने खड़े व्यक्ति के बारे में पूछा 'यही आदमी है?'

उत्तर में लूसी मुस्कुराई और सिर हिला कर पुष्टि कर दी।

मेज की दराज में से उसने एक पतली सी फाइल निकाल कर मेज पर रखी और खोल कर देखने लगा। मंसूर के आस्चर्य का कोई ठिकाना न रहा जब उसमें अपना एक फोटो लगा हुवा देखा। उसकी समझ में नहीं आ सका कि उसका यह फोटो कब खींच लिया गया? दिमाग़ पर बहुत जोर डाला मगर सही उत्तर नहीं सूझा सो न ही सूझा। मन ही मन मंसूर ने अपने आपको गालियां दी अपनी इस प्रकार की लापरवाही पर खुद अपने आपको लानत भी भेजी मगर जो कुछ बीत गया उसको मिटाने की सामर्थ तो स्वयं उसके पास भी नहीं थी।

'तो मि० मंसूर ! तुम भारत की हवाई फौज में स्वाड्रन लीडर थे?

'यस सर' मंसूर ने स्वीकार किया।

'तुम्हरा हैड क्वार्टर कहां था ?'

उतर देने में जरा भी झिझक हो जाय और सरवर खाँ के मन में

संदेह जाग उठे तो बना बनाया काम बिगड़ सकता था यहां तक कि प्राण भी संकट में पड़ सकते थे मगर मदन करे तो क्या करे ? दिमाग में छुपा बैठा शैतानी का कीड़ा लो कुलबुलाने लगा था। अब उसके लिये यह अत्यन्त आवश्यक हो गया कि या तो खुद हीं रगड़ें खाये या सामने वाले को रगड़े लगाये सो ठग महाशय ने यही तै किया कि सरवर मियाँ की थोड़ी घिसाई अवश्य करनी है। तपाक से बोले 'गंजम पुर'

आश्चर्य से आँखें फाड़कर मार्शल ने दोहराया 'गंजम पुर !'

बड़ी संजीदगी से मदन ने पुष्टि की 'यस सर !'

पांसा सीधा पड़ा और सरवर मियाँ उलझ ही गये। दराज निकालकर एक फाइल और निकाली और पहले ही सामने पड़ी मंसूर की फाइल को एक ओर खिसका कर देखने लगे। पाँच सात कागल पल्टे और एक कागज पर नजरें गड़ा कर वँग गये। नजर के साथ उंगली भी कागज पर ऊपर से नीचे की तरफ खिसकने लगी। टाइप किया हुवा कागज था। मदन समझ गया कि आवश्य ही यह हवाई अड्डों की लिस्ट होनी चाहिये। लूसी भी कागज पर झुक गई और लिस्ट में गंजमपुर ढूंढने लगी और मदन की नजरें उस कागज पर दौड़ने लगी जो पहले वाला फाइल में लगा हुवा था और जिसके कोने पर उसका फोटो भी चिपकी हुवा था।

लूसी और सरवर खाँ की चार आँखें मिलकर गंजमपुर ढूंढ़ रही थीं और ठग महाशय अपनी जन्मपत्री पढ़ रहे थे। लंका में मिस्टर चिन और लूसी से मुलाकात होने से लेकर करांची में मि० लू तक का पूरा विवरण था दोनो चीनियों ने खूब तगड़ी शिफारिश की थी मंसूर को एयरफोर्स में रख लेने के लिये। मदन ने निश्चिन्त होकर कहा कि बेटा सराबोर खां ! तेरा बाप मदन तो अब यहीं रहेगा।

लूसी नजरें दौड़ाती रही अतः फाइल उसे सौंप कर सरवर खाँ ने मंसूर की तरफ देखा और कहा 'ऐसा तो कोई हैड क्वार्टर नहीं है हमारी लिस्ट में'

'हो भी नहीं सकता सर " मदन ने उत्तर दिया और साथ ही आंख से लूसी की तरफ इशारा भी कर दिया जिसका तात्पर्य यह था कि इसके सामने ऐसे प्रश्न मत पूछिये। लड़ाई को तनावपूर्ण स्थिति, शत्रु देश की वायु सेना से आया चीनी युवती की उपस्थिति में कुछ बताने में झिझक रहा है। सरवर खां का दिलो दिमाग भी गड़बड़ा गया। प्रसंग बनाये रखने के लिये मदन ने भी अपना उत्तर पूरा किया 'लिस्ट में तो यह जब होता सर कि किसी का इसके बारे में कुछ पता होता या हमारे मुल्क के जासूस वहां तक पहुँच पाते। दर असल यह एक दम नवा बनाया गया है। चम्बल नदी के घने जंगलों में पहाड़ियां काट काट कर इस हवाई अड्डे को बनाया गया है और भारतीय इंजीनियरों की कारीगरी का कमाल है। वहां काम करने वाले किसी कर्मचारी को भी यह पता नहीं है कि यह अड्डा है कहां ? कोई वहां तक का रास्ता नहीं जानता।'

'अच्छा !'

'यस सर—भारत के बने हुए सबसे खतरनाक प्लेन भी इसी अड्डे पर रखे गये हैं जिनकी रफ्तार आवाज से भी तेज है। सभी बोम्बर हैं, जैट हैं मगर एटेमिक एनर्जी से चलते हैं और एक बार की उड़ान में वहां से करांची तक आकर वहां बम गिरा कर वापिस लौट सकते हैं।'

सरवर खां और लूसी की आंखें कपाल में बढ़ गईं उसकी गप्प सुनकर। मार्शल नहीं चाहता था कि ऐसी राज की बातें लूसी के सामने खुलें इस लिये टालने की खातिर बोला 'खैर मि० मसूर ! अभी तुम सफर से आये हो फिल हाल आराम करो फिर बातें होंगी।'

मदन की इस किस्सा बट्टी का नतीजा यह निकला कि मंसूर मियां का एक महत्वपूर्ण महमान की तरह सजे सजाये बंगले में रखा गया। लूसी भी उसी के साथ रही। शानदार खाना पीना हुवा, शानदार ही नौकर चाकर मिले और शानदार ही ऐश हुए। ठग महाशय दिन भर लम्बी ताने सोते रहे लूसी को बगल में दबाये।

शाम को आठ बजे जाकर नींद खुली। अस्त व्यस्त कपड़ों में लूसी अब भी गहरी नीद में पलंग पर पड़ीं थी। मदन ने देखा कि लूसी की बाईं जांघ एकदम नंगी हो गई है और रोशनी में चमक रही है। पास जाकर उसकी गोरी गोरी जांघ पर उसने हाथ फेरा और फिर सिरहाने की तरफ जाकर उस स्लीपिंग ब्यूटी को चूम लिया। लूसी कसमसाई और करवट बदल कर सो गई।

मदन बाहर निकल गया नहाने धोने।

निपट निपटा कर जिस समय गुसल खाने से निकला टेलीफोन की घन्टी भी बजने लगी। कमरे की तरफ न जाकर वह फोन की तरफ बढ़ा और रिसीवर उठा कर काल रिसीव की 'स्क्वाड्रन लीडर मंसूर स्पीकिंग।'

'मि० मंसूर ! मैं मार्शल सरवर खान बोल रहा हूँ।'

'ओह ! गुड इवनिंग सर'

'गुड इवनिंग —मियां यह तीसरी बार फोन किया है तुम्हें। गजब के सोने वाले हो भई तुम तो। मेरा खयाल है कि अब थकावट मिट चुकी होगी।'

'सर—अपना तो हर काम ही गजब का होता है।

'सुभान अल्लाह ! अच्छा यह बताओ कि अब क्या हो रहा है ?'

'बस साहब—नहा धोकर फारिग हुवा हूँ अब खाने वाने की फिकर करूंगा।

'नहीं मि० मंसूर खाना यहीं खाओगे आज, हमारे साथ। मैं गाड़ी भेज रहा हूं मगर एक बात का ध्यान रखना कि···'

बात काट दी मदन ने 'मुझे पूरा ध्यान है सर—वह अभी सोई पड़ी है।'

'ठीक है फिर तैयार रहो गाड़ी पहुँच रही है।'

और आधे घन्टे बाद······

मंसूर मियां सरवर खाँ के साथ दस्तरखान पर बैठे थे और लूसी

उठकर नौकरों से मंसूर के बारे में पूछताछ कर रही थीं। घर की नौकरानी ने उसे बता ही दिया कि साहब दावत पर गये हैं बड़े साहब के यहां।

नौकरानी को चाय लाने को कह कर लूसी बिस्तर में ही बैठी रही।

सोचने लगी सरवर खां ने मंसूर को क्यों बुलाया अकेले क्या बातें पूछना चाहता है ? कहीं दूसरे मोर्चे पर भेजने का प्लान तो नहीं बना रहा ? खाने पर बुलाने की महरबानी क्यों की गई ? ऐसा तो सरवर खां किसी भी पायलट या एयर आफीसर के साथ महरबान नही रहता ?

उसके मन में एक नई शंका उठी कि पाकिस्तानी इस भारती गद्दार से मिल कर अपनी अलग खिचड़ी पकाने लगे हैं। मदन भी यही चाहता था और इसी लिये चुपचाप खिसक भी आया था कि संदेह पैदा हो और फूट पड़े।

दस्तरखान पर जब खाना खा रहे थे उस वक्त सरवर खां और मदन के अलावा उसकी अंग्रेज बेगम भी मौजूद थी। वह थी तो मुस्लिम निबास में ही, याने चूड़ीदार पजामा और चुस्त घेर दार कुरता पहने, गले में एक दुपट्टा डाले मगर अंग्रेजी बड़े फर्राटे से बोल रही थी। बीच बीच में उर्दू भी बड़ी साफ बोलती थी। गोरी चिट्टी तो थी ही इस लिये खूब जंच रही थी। उसे देख कर मदन की नीयत बिगड़ गई और उसने उसी वक्त मन में फैसला कर लिया कि जाते वक्त इस चिड़िया को ले उड़ना है। कुछ दिन अच्छे गुजरेंगे।

खाने से फारिग़ होकर तीनों कमरे में जा बैठे और वहीं बात चीत शुरू हुई क्योंकि वहां नौकरों के आने जाने का क़तई अंदेशा नहीं था।

सरवर खां ने बात छेड़ी 'तो मिस्टर मंसूर ! कल से तुम्हारी ट्रेनिंग शुरू हो जायगी क्यों कि जो प्लेन हमारे पास हैं वे सैबर जैट हैं जो भारत के पास नहीं है। वैसे कोई खास मुश्किल तुम्हें महसूस नहीं होगी। हमारे पास बी० ५७ बममार हैं जो भारत के कैनबरा की जरा बहतरीन किस्म है।'

'जी हाँ—'

'मेरे खयाल से तुम्हारे लिये एक दिन का वक्त काफी होगा ?'

'बहुत काफी साहब' मदन ने भी स्वीकार किया ।

'मिस्टर मंसूर !' इस बार बेगम सरवर बोलीं 'तुम को भारत के कई फौजी ठिकानों की काफी अच्छी जानकारी होगी ?'

'जी हाँ बेगम साहिबा'

'इस सैक्टर का मेन एयर बेस कौन सा है ?'

'यह वैस्टर्न कमांड में पड़ता है इस लिये पक्के तौर से कुछ नहीं कह सकता क्यों कि मैं इधर रहा नहीं अलबत्ता सैंट्रल कमांड की पूरी जान कारी है ।'

'जैसी कि हमारे जासूसों ने खबर दी है इस सैक्टर में सिर्फ जोधपुर ही सब से बड़ा अड्डा पड़ता है । अगर इधर मोर्चा खुला तो सब से पहले हमें इसी को संभालना पड़ेगा ।' सरवर खाँ बोले ।

'आप बजा फर्माते हैं साहब । वैसे हमारे चीनी दोस्त तो यही चाहते हैं कि यह मोर्चा जरूर खोला जाय ।' मदन ने फूट के बीज बोने शुरू कर दिये ।

सरवर खाँ को आफिस में किया गया मंसूर का इशारा याद आ गया तो फौरन ही पूछा 'हां उस वक्त आफिस में तुम कहना चाह रहे थे ?'

'यही तो कहना चाहता था साहब कि चीनी इस मोर्चे में ज्यादा दिलचस्पी ले रहे हैं । जब मैं हिन्दुस्तान में था उस वक्त मुझे पता चला था कि—जैसलमेर और बाड़मेर एरिया में तेल पाया गया है । वे चाहते हैं कि इस सैक्टर में ज्यादा से ज्यादा इलाका दबा लिया जाय । सीज़ फायर तो आखिर होगा ही । जब तक मामला सुलझेगा नहीं तब तक यह इलाका हमारी सरकार से वे पट्टे पर ले लेंगे और माला माल होने की कोशिश करेंगे । ऐसा मुझे मिस्टर चिन और मि० लू की बातों से लगा है । चीनी नहीं चाहते कि इस इलाके में अमरीकी या पाकी अपने

पैर जमा सकें।'

बेचारे सरवर खां को तो आज पता चला कि असली चक्कर क्या है ?

ठग की बातों का सरवर खां और उसकी बेगम पर अलग अलग प्रभाव पड़ा। मार्शल सोचने लगे कि इस इलाके पर पाकिस्तान का कब्जा कैसे रहे ? बेगम सोचने लगी कि किस तरह चीनियों को उखाड़ कर अंग्रजों को जमाया जाय ?

कुछ देर तक तीनों खामोश रहे फिर इधर उधर की बातें होती रहीं। करीब आधे घन्टे बाद सरवर खां उठे और बोले आओ मंसूर तुम्हें हम अपना बमभार बी ५७ दिखायें उड़ा कर।'

'चलिये

बेगम को वहीं छोड़ कर दोनों एयर पोर्ट पर आगये।

एयर वाइस मार्शल ने हुकुम दनदनाये तो मंसूर को यूनी फार्म दी गई–बी ५७ बोम्बर तैयार किया जाने लगा।

यूनीफार्म पहन कर मंसूर बोला' सर ! अगर आप पांच दस मिनट की छुट्टी दें तो मैं एक बार लूसी से मिल आऊं।'

'क्यों भई !' हंसकर उन्होंने कहा' बहुत याद आ रही है क्या ?'

शर्माने का नाटक किया मि० ठग ने और फिर बोला 'ऐसी बात नहीं है सर—मैं चाहता हूं कि वह एक बार मुझे यूनी फार्म में देख ले ताकि उसे तसल्ली हो जाये कि मैं रख लिया गया हूं। उसका काम भी मुझे यहां रखवाने का था। अपना काम पूरा हुवा जान कर शायद वह लौट जाये और मेरा पीछा छूट जाये।'

सरवर खां भी कुछ कुछ ऐसा ही चाहते थे अतः इजाजत देते हुए कहने लगे 'जरूर मिल आओ मगर दस मिनट से ज्यादा मत रुकना।'

मंसूर गाड़ी लेकर फौरन लूसी से मिलने चल दिया।

घर पहुंचा तो नौकरों से मालूम हुवा कि मेम साहब कहीं बाहर गई हैं। उसे जरा भी ग़म नहीं हुवा। सीधा अपने कमरे में पहुंचा और सूट क़ेस

में से दोनों डायरियां, जो वह शहर से खरीद लाया था, निकाल कर जेब में डाली और बाथ रूम में घुस गया। वहीं उसने एक डायरी में लिखा। बड़े भाई—

भारत माता की जै।

तुम्हारी भी जै।

बंदा वदीन में नाजिल हो चुका है। साली अमरीकन चिड़ियाँ और अमरीकन गिद्ध बहुत हैं इधर। आज पर गिनूंगा और फिर किसी दिन नोंच लूंगा। इधर आया था चीनी टमटम पर मगर आऊंगा तब एक अंगरेजी ऊंटनी पर चढ़ कर सफर करता हुवा आऊंगा।

आपका ही—मदन।

यही इबारत दूसरी डायरी में भी लिखी और पहले पेज पर पता लिखा 'कर्नल राजसिंह, सी आई बी' नीचे हिदायत लिखी—

'जिस किसी भी सैनिक अधिकारी को यह डायरी मिले मेहरबानी करके केन्द्रीय गुप्तचर विभाग के सीनियर जासूस कर्नल राजसिंह को को पहुँचा दे।'

यह काम समाप्त करके वह लौट पड़ा और मैदान में खड़े प्लेन के पास जा पहूंचा। स्वयं मार्शल एक बी० ५७ के पास खड़े खड़े उसकी प्रतिक्षा कर रहे थे। जल्दी जल्दी तैयार होकर दोनों प्लेन में चढ़ गये।

सब्बर खां ने प्लेन फिर भी स्टार्ट नहीं किया। दोनों वहीं एकांत में बातें करने लगे।

१३

काक पिट जैसी एकान्त जगह में दोनों बाते करते रहे।

सरवर खां ने अपने विचार मंसूर के सामने रखते हुए कहा 'मि० मंसूर ! इसका मतलब तो यह हुवा कि आदमी हम अपने मखाऐ और माल बटोरें दूसरें।'

'बिल्कुल वही मसल होगी साहब कि तकलीफ भुगते मुर्गी और अंडे खाये चांद खां। भारत के साथ फौजी लड़ाई हम लड़ेंगे और इंशा अल्ला जीत भी जायेंगे मगर दिमागी लड़ाई में इन विदेशियों से पटकनी खा जायेंगे।

'यह तो बुरी बात होगी भई। हमारी महनत का फल तो हमें ही मिलना चाहिए और अगर हमें नहीं मिल सके तो इन चमारों को भी नहीं मिलना चाहिए।'

'होना तो ऐसा ही चाहिये साहब और मैं ऐसा कर भी सकता हूँ अगर......'

'अगर क्या ? कहते कहते रुक क्यों गये !

हिचकते हुए मंसूर ने अपनी बात कह डाली 'अगर...आ...आप की इजाजत मिले और पूरी मदद भी मिलती रहे।'

'मियाँ इसमें इजाजत की क्या बात है—हम तुम्हारे साथ हैं।'

'तो समझ लीजिए कि यह दोनों झाड़ियां उखड़ ही गई और मैदान हमारे हाथों में ही रहेगा।'

'मगर कैसे ? काम इस ढंग से होना चाहिए मंसूर मियां कि हवा को भी हवा न लगे और यह दौलत मिल्लत के ही दखल में रहे।'

'ऐसा होकर ही रहेगा साहब।' मंसूर ने विश्वास दिलाकर कहा और फिर अपनी योजना समझाने लगा 'सब से पहले तो साहब हमें लूसी

को रफा दफा करना पड़ेगा क्यों कि यह कम्बख्त हमारी जासूसी किये बिना मानेगी नहीं।' हमारी हर बात चीनियों को बताएगी इसे मैं हिन्दुस्तानियों की सरहद में ले जाकर बेच आऊँगा—सीधी सी बात है।'

मंसूर ने तो ऐसी आसानी से कह दिया जैसे हू हू करता हुवा दुश्मन की सरहद में जायेगा और कबड्डी देकर चला आयेगा मगर सरवर खाँ की आंखें फैल गईं, कहने लगा 'तुम इसे आसान काम समझ रहे हो ?

'जी हाँ—बहुत मामूली और निहायत आसान काम है। देखिये जिस तरह हमारे मुजाहिद काश्मीर में घुस रहे है उसी तरह इस इलाके में भी घुसेंगे बस उनके ही साथ मैं भी जा घुसूंगा। अगर फिल हाल ऐसे आर्डर नहीं हैं तो मैं अकेला ही लूसी को लेकर घुसूंगा और साली को बेचबाच कर लौट आऊँगा।'

'समझ में नहीं आता कि ऐसा कैसे हो सकता है और फिर लूसी तुम्हारे साथ जाने को तैयार ही क्यों होगी ?'

'माफ कीजिये साहब, जरा पर्देदारी कीं बात है वैसे यकीन रखिये यह मेरे साथ दुश्मन के इलाके में तो क्या जहन्नुम भी चली चलेगी।'

बात सरवर खाँ के फिर भी समझ में नहीं आ पा रही थी बोला 'भई मेरीं समझ में तो कुछ भीं नहीं आता मगर इतना जरूर कहना है कि काम खतरनाक है और निहायत सफाई से होना चाहिये'

'मुर्गी के नीचे से अंडा गायब हो जायगा और बेचारी मुर्गी को हवा भी नहीं लगने की। यह काम मुझ पर छोड़िये। फिलहाल अभी का काम खत्म कर लेना चाहिये। मेरी राय यह है साब कि आज जोधपुर तक की जासूसी उड़ान क्यों न भरली जाये ताकि मिलिट्री ठिकानों का कुछ तो पता चले।'

'नहीं भाई! बिना आर्डर के दुश्मन की सरहद में इतनी दूर तक घुस जाना बड़ा खतरनाक साबित हो सकता है हमारे लिये।'

इससे पहले कि मंसूर कोई दूसरा दांव गांठता एक आदमी ने आकर दहलीज पर दस्तक दी और सरवर खाँ उससे बात करने लगा—पूछा

'क्या है ?'

पहले उस आदमी ने जो वर्दी में था सैल्यूट किया और फिर अपने आने का कारण बताते हुए बोला 'सर ! पिंडी से इमीजियेट कॉल है आपके लिये ।'

'तुमने पूछा नहीं कि किस का है ?'

'सर–हुजूर एयर मार्शल का है ।'

जाना ही पड़ा । आगे आगे सरवर खां और पीछे पीछे मंसूर फोन पर पहुंचे तो सरवर खां ने रिसीवर कान से लगाया और अपना परिचय दिया 'सरवर खां हियर'

तीन चार मिनट वह आर्डर सुनता रहा और अपनी तरफ से सिर्फ यस सर, यस सर करता ही चला गया इस लिये मंसूर समझ नहीं सका कि क्या आर्डर दिये गये हैं । आखिर उसने फोन बन्द किया और मंसूर के साथ बाहर निकल आया ।

'मंसूर !' सरवर खां कहने लगा 'सब प्रोग्राम गड़बड़ हो गया' पूरे एतबार के साथ मंसूर ने जवाब दिया 'अगर पुर्जे बिखर गये हैं तो नये सिरे से मशीन खड़ी कर लेंगे । आप तो यह फर्माइये कि मामला क्या है ?'

'आर्डर मिले हैं कि जोधपुर पर एयर रेड शुरू कर दिया जाय ।'

'साहब ! आपने भी हद करदी । ये तो पुर्जे अपने आप फिट होने वाली बात है । हम भी तो यही प्रोग्राम बना रहे थे ।'

'खैर–जो होगा देखा जायगा । तुम प्लेन में चलकर बैठो मैं इन्तजाम करता हूं । पहला रेड आज ही करना है ।'

मंसूर प्लेन की तरफ चल दिया और सरवर खां रेड की तैयारियों में लगा घंटे भर बाद··· —

बदीन एयर पोर्ट से तीन प्लेन उड़े। एक में खुद एयर मार्शल सरवर खां मंसूर के साथ,मौजूद थे । उनका प्लेन दूसरे दोनों बाम्बर प्लेनों से अधिक ऊंचाई पर चल रहा था रेडार सेंटर से बराबर सम्बन्ध

बना हुवा था और दोनों हवा बाजो से भी। तीनों ही प्लेन मंथर गति से पूर्व की तरफ बढ़ रहे थे।

अपने देश की वायु सीमा पार करके ज्यों ही भारतीय सीमा में हवाई जहाजो ने प्रवेश किया सरवर खां ने मसूर को बताया 'अब हम भारत की फिजाई सरहद में घुस रहे हैं। उम्मीद तो नहीं है कि कहीं भी हमें रोकने की कोशिश की जाये मगर फिर भी हमें सावधान रहना चाहिये।'

'इस रूट से हम शायद बाड़मेर होते हुए जोधपुर पहुँचेंगे ?'

'तुम ठीक समझे ? इस सैक्टर में हमें जोधपुर से ही भारी खतरा है। हमारे जासूसों ने खबरें दी हैं उनके मुताबिक वहां बड़ा भारी अड्डा बनाया गया है। वैसे तो हमारे कई हवाबाजों ने जोधपुर ट्रेनिंग सेन्टर में ही पार्टीशन से पहले ट्रेनिंग ली थी और वे वहां से अच्छी तरह वाकिफ भी हैं।

'लेकिन तब से लेकर अब तक तो कई रद्दोबदल हो गये होंगे।'

'उनकी जानकारी तो तुम्हें भी होनी चाहियें।'

'जी हां थोड़ी बहुत ही है क्यों कि अर्ज कर चुका हूं कि मैं सेंट्रल कमान्ड में था। इधर आने का मौका मिल नहीं पाया था मगर आने जाने वाले दोस्तों से ही सुना था कि जोधपुर एयर पोर्ट को पोर्टेबल बना दिया गया है।'

चौंक पड़ा सरवर खां, पूछा 'पोर्टेबल ! क्या मतलब ?'

'मेरा मतलब यह कि उस एयरपोर्ट को पन्द्रह बीस मिनट में एक दम खाली किया जा सकता है और इतने ही समय में काम काज फिर शुरू किया जा सकता है। कह नहीं सकता कि यह सब कैसे किया गया होगा ?'

'जरूर सारा इंतजाम अंडर ग्राउंड किया गया होगा। कुछ भी हो हमें बाड़मेर और जोधपुर दोनों को तबाह कर देना है।'

मंसूर के जबाब की उसने प्रतीक्षा नहीं की और वायरलैस सैट पर

झुक गया। उसे म्रान करके नीचे उड़ते जहाजों से संपर्क स्थापित किया 'हलो'''हलो'''रशीद मार्शल कालिंग'''कम इन'

दूसरे प्लेन से प्रावाज म्राई 'यस सर'''रशीद हीयर'''म्रार्डर सर म्रोवर' 'लोकेशन क्या है ?'

बाड़मेर पहुँच रहे हैं सर'

'रेड करो'''म्रोवर'

सरवर खाँ ने म्रपने प्लेन के पायलट को राउण्ड लेते रहने का म्रादेश दिया म्रौर रेड का परिणाम देखने के लिये साइड विंडो से म्रंधकार में देखने लगा। मंसूर भी दूसरी तरफ की विंडो से म्रंधकार में म्रांख फाड़ फाड़ कर देखने लगा। दो तीन मिनट बाद ही नीचे की तरफ तेज प्रकाश के दो झमाके देखे गये।

मंसूर समझ गया नालायकों ने बम गिरा दिये हैं।

उचित म्रवसर जान कर उसने भी म्रपना एक बम गिरा दिया याने जेब से निकाल कर म्रपनी एक डायरी नीचे गिरा दी।

प्लेन म्रागे बढ़ गये। दूसरा टारजैट था जोधपुर का हवाई म्रड्डा।

रशीद तो वहीं से याने बाड़मेर से ही वापिस लौट गया था म्रौर जोधपुर पोर्ट पर सरवर खाँ के प्लेन के साथ सिर्फ एक ही बोम्बर पहुँचा था। मंसूर ने देखा कि शहर में पूरा ब्लैक म्राउट है—सारा शहर एक दम घने म्रंधकार में डूबा हुवा है कहीं भी जीवन के लक्षण तक नजर नहीं म्रा रहे हैं।

सरवर खाँ ने पायलट से सम्बन्ध स्थापित किया 'हलो हमीद''' हलो'

'यस सर हमीद दिस साइड'''म्रार्डर सर'''

'देखो शहर के शुमाल में किला है। राउंड लेकर किले पर पहुंचो। वहाँ से एक दम जुनूब में एक ऊंची चिमनी दिखाई देगी।'

'यस सर'

'चिमनी के ठीक ऊपर से म्रागे बढ़ोगे तो चार पाँच मील पर

हवाई अड्डा मिलेगा । पहुँच सकोगे ना ?'

'यस सर'

'शाबास-रेड'

मंसूर सुनता रहा और मन ही मन ताव खाता रहा। उसकी नजरों के सामने उसकी जानकारी में दुश्मन उसकी मातृ भूमि राजस्थान पर बममारी करने वाला है और वह खामोश बैठा है। रह रह कर उसका जी करता था कि सरवर खां की गरदन पकड़ कर नीचे फेंक दे और इस अमेरिकन चिड़िया को सही सलामत नीचे उतार कर अधिकारियों के हवाले कर दे मगर उसने अपने पर काबू रखा और आगामी भारी काम पूरा करने के लिये खून का घूंट पीकर रह गया।

बम गिराये गये। मंसूर को बड़ी जिज्ञासा थी वह जानने की कि बम कहाँ गिरे और कितना नुकसान हुवा मगर इस समय कोई उपाय नहीं था।

मंसूर ने यहाँ भी मौका पाकर अपनी दूसरी डायरी नीचे गिरा दी। बममारी करके प्लेन लौट गये। यह थी आठ अगस्त की रात।

१४

नौ अगस्त...

दिन में जब नागरिक और सैनिक अधिकारी शत्रु की बममारी से होने वाले नुकसान का अनुमान करने निकले तो पता चला कि सारे के सारे बम ऐयरोड्रोम से तीन तीन चार चार मील आगे दूर दूर तक

गिरे हैं। वैसे रन वे और हेंगर आदि के बारे में तो रात ही पता चल चुका था कि नुकसान क़तई नहीं हुवा है।

दिन में जब रक्षा गार्डों ने एयर फील्ड का राउंड लगाया तो मैदान के एक कोने पर खूबसूरत सी काली डायरी पड़ी मिल गई जिसे मंसूर मियाँ गिरा गये थे। वह डायरी फौरन कन्ट्रोल रूम में पहुँचाई गई और वहां उसे पढ़ा गया।

सभी वायु अधिकारियों को आश्चर्य हुवा कि यह भारत का हितैषी मदन कौन है? चूंकि डायरी में कर्नल राज को लिखे गये गये संदेश में लिखा गया था कि बंदा बदीन में नाज़िल हो गया है इस लिये इतना तो सभी समझ गये कि मदन नाम किसी भारतीय का है और वह पाकिस्तान के बदीन नामक स्थान पर है। साथ ही यह भी अनुमान लगाया गया कि डायरी जरूर ही रात की बमबारी के समय गिराई गई है मगर यह सोच कर सभी उलझन में पड़ गये कि जब मदन भारत का हितैषी है तो उसने जोधपुर पर बम वर्षा क्यों की?

समस्या जब उन लोगों से न सुलझी तो डायरी में लिखी मदन की हिदायत के अनुसार डायरी को कर्नल के पास पहुंचा देना जरूरी समझा गया। इसके अलावा कर्नल स्वयं भी जाते समय यही हिदायतें देते गये थे कि सरकारी आदेशों के अलावा यदि मदन या हीरासिंह नाम के किसी व्यक्ति का संदेश आये तो भी उनके पास बाड़मेर पहुंचा दिया जाये।

उसी दिन, उसी सुबह, ऐसी ही काली डायरी बाड़मेर में भी स्थल सेना के अधिकारियों के पास पहुँची जो रेत के एक टीले के पास पड़ी पाई गई थी। उसमें भी यही संदेश था अतः इसे फौरन कर्नल के पास पहुँचा दिया गया।

यह डायरी जब कर्नल राज के हाथों में पहुँची उस समय वे अपने ही विचारों में खोये हुए थे। रह रह कर उन्हें अपने दोस्त मदन की चिंता सता रही थी। जानते थे कि एकाएक मदन कहीं फंस तो नहीं

सकता मगर दिल मानता ही नहीं था। वैसे भी दिल में अपने प्रिय जनों के लिये बुरी आशंकाऐं ही ज्यादा उठती हैं अतः राज रह रह कर सोचने लग जाते थे कि कमबख्त कहीं पकड़ न लिया जाये? वे जानते थे कि औरत उसकी कमजोरी है कहीं औरत के चक्कर में पड़कर अपना भेद खुद ही न खोल बैठे। तभी मन समझाने को दूसरा खयाल आता कि वह एक अंतर्राष्ट्रीय ठग है अच्छे अच्छों को चरका देने का होसला और दिमाग रखता है वह भला क्या फंसेगा?

ऐसे ही विचारों में उलझे हुए कर्नल राज अकेले बैठे थे।

सामने रखी चाय पड़ीं पड़ी ठंडी हो चुकी थी।

उंगलियों में पकड़ी हुई सिगरेट जल जल कर झड़ती जा रही थी।

तभी मेजर नार्टन ने आकर सैल्यूट किया और बोले 'गुडमार्निंग सर'

विचार शृंखलाटूटी तो राज चौंके और जवाब दिया 'मार्निंग मि० नाटन-आइये-बैठिये राउंड लिया आपने? क्या नुकसान हुआ?'

'कुछ भी नहीं सर! कुर्सी पर बैठते हुए मि० नार्टन बताने लगे' शत्रु के प्लेन बम गिरा गये हैं मगर एक बम आपके लिये भी गिराया गया हैं।'

'चौंके कर्नल' मेरे लिये बम?'

'जी हां—' जेब से डायरी निकाल कर सामने रखते हुए कहा 'यह रहा।'

सिगरेट पांव तले मसल कर राज ने जल्दी जल्दी पन्ने पलटे तो चेहरा खिल उठा—उदासी जाती रही और खुशी की झोंक में ठंडी चाय का प्याला उठाया और एक ही सांस में पी गये और कहने लगे 'मि० मार्टन! तुमने मुझे खुशियां दी हैं मेरे भाई-मैं इसी गये मदन की फिकर में मरा जा रहा था—तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।'

लेकिन कर्नल साहब-ये साहब हैं कौन?'

है भाई यह भी एक नालायक जिसने परेशान कर डाला है मुझे।

इसका शरीर आदमी का है और सिर गधे का है ऐसे दो नमूने हैं मगर दोनों ही ऐसे यार हैं कि बस कुछ पूछो मत। यह मदन उन दोनों में से एक है।

मेजर नार्टन की समझ में गधे की खोपड़ी वाले इंसान की बात क़तई नहीं आई इस लिये कुछ पूछना ही चाहता था कि कर्नल बोले 'इस अजीब इंसान से तुम्हें जरूर मिलाऊंगा मेजर फिलहाल तुम ऐसा करो कि एक प्याली गर्मागरम चाय तो भिजवा दो–मैं तो गल्ती से ठंडी चाय पी गया था।'

'ओ० के० सर मेजर हंसता हुवा चला गया।

राज फिर विचारों में खो गये—सोचने लगे मदन के बारे में।

वह बदीन कैसे पहुंच गया इस बारे मे उन्होने बिल्कुल नहीं सोचा। जानते थे कि अपनी तिकड़म से मदन फील्ड मार्शल अयूब के पास भी पहुंच सकता है। मुख्य सवाल तो यह था कि उसे बदीन से लाया कैसे जाये या उसकी मदद कैसे की जाये? इतना तो वे जानते थे कि बदीन पाकिस्तान का हवाई अड्डा है। इस लिये यही अनुमान लगाया जा सकता था कि जब मदन अलंकार से चलकर वहाँ पहुँचा है तो जरूर कोई न कोई खास बात होनी ही चाहिये और कम से कम हवाई अड्डे कीं तो खैर हो ही नही सकती। मदन शायद उस अड्डे को नष्ट करने के लिये ही पहुंचा होगा।

उस रोज का सारा दिन कर्नल ने अपनी योजना बनाने में खर्च किया। उसी दिन इस बात का भी पता चला कि भारत ने इस क्षेत्र में नया मोर्चा खोलने का निश्चय कर लिया है। सेना को आवश्यक आदेश पहुँच चुके हैं-तैयार रहने को कह दिया गया है। शाम से स्पेशल ट्रेनों से सैनिक और आवश्यक हथियार और अन्य सामान भी पहुंचने लग गया। यह क्रम लगातार चलता रहा।

रात को पाकिस्तानी हवाई जहाजों को जोधपुर की तरफ जाते हुए देखा गया मगर आज उन्होंने बाड़मेर क्षेत्र में गोला बारी नहीं की।

रात भर में तीन चार बार रेड किया गया।

दूसरे दिन सुबह ही भारतीय फौज पाकिस्तानी सीमा लांघने को चल पड़ी। इस विजय वाहिनी की अग्रिम टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे स्वयं मेजर नार्टन। उनके सफल नेतृत्व में भारतीय सेना अन्ततः अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा को लांघकर शत्रु के प्रदेश में दाखिल हो ही गई। आस पास के पाकिस्तानी गांवो में खलबली मच गई, लोग गांव छोड़ छोड़ कर मध्यवर्ती स्थानों की तरफ भागने लगे।

कर्नल राज भी इस सेना के साथ आये थे।

पाकिस्तानी गांव खेमकी पर भारतीय सेना का अधिकार हो गया और वहां किसी प्रकार का प्रतिरोध नहीं किया गया। शायद शत्रु को इस बात का खयाल भी नहीं आया होगा कि भारतीय सेना इस रेगिस्तान को पार करके इतनी तेजी से आगे बढ़ती चली आयेंगी। खेमकी पड़ाव से ही राब ने अपना काम शुरू किया।

कर्नल और मेजर नार्टन मिलकर योजना बनाने लगे–मि० नार्टन !' राज कहने लगे तुम्हारी इस मोर्चाबन्दी का पता तो शत्रु को या तो लग ही चुका होगा या लग जायेगा।'

नहीं कर्नल साहब ! अभी उन्हें पता नहीं लग पाया होगा' मेजर ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा हम एक दम आगे बढ़े हैं किसी को हवा तक नहीं लगी।'

'भूलते हो मेजर यह सीमावर्त्ती इलाका है और पाकिस्तान के हिमायती यहां काफी संख्या में मौजूद मिलेंगे। उन लोगों ने सब कुछ देखा हैं और मेरा खयाल हैं कि सूचना शत्रु को मिल भी चुकी होगी।'

'टोह लेने के लिये आदमी भेजकर देख लिया जाये ?'

'यह आपका काम हैं भाई—मुझे मेरी घुस पैठ के लिये थोड़ी सी सुविधा चाहिये आपकी तरफ से। उसके बाद मैं अपने रास्ते लगूंगा आप अपना काम देखते रहना।'

'फरमाइये-आपका क्या प्लान है ? आप कैसे बढ़ना चाहते हैं ?'

'देखो, गांव खेमकी हमारे पीछे की तरफ रह गया है और गांव का कोई भी आदमी पाकिस्तान की तरफ नहीं जा पाया है फ़िर भी दुश्मनों को हमारे बारे में पता तो चलेगा ही। उनके जासूस आगे आकर देख भाल जरूर करेंगे।'

'जी हां'

'फिर यह खबर मैं ही दुश्मनों को दे दूं तो कोई नुकसान है क्या?'

'मगर फायदा भी क्या होगा ?'

'तुम भी मेजर बनिया ही रहे। अरे भई फौजी आदमी और जासूसों को नफे नुकसान के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिये। वैसे विश्वास रखो फायदे बोंरी भर के होंगे और मेरी कई मुश्किलें आसान हो जायेंगी।

'तब मुझे भला क्या एतराज हो सकता है ?'

'शाबाश ! अब ऐसा काम करो कि मोर्चे पर तो नकली पड़ाव बनवा दो याने एक एक चद्दर डालकर नकली तंबू खड़े करवा दो ताकि दुश्मन के जासूस अंधेरे में आकर देखें तो लंबा चौड़ा पड़ाव नजर आये अपने सैनिकों को रखो सुरक्षित स्थानों पर और गांव में से मेरे लिये कपड़े मंगवा दो जैसे कि यहां के मुसलमान पहना करते है।'

'राइट सर' मुस्कुराता हुवा मेजर चला गया और राज अपनी तैयारी में व्यस्त हो गये क्यों कि कपड़ो के आते ही उन्हें अपना काम शुरू कर देना था

आधा घंटा इन्तजार में गुजारना पड़ा।

जब मेजर नार्टन उनके लिये कपड़े लेकर आये तो अपनी चीजों की पोटली उनके हवाले करके राज ने कपड़े पहनने शुरू कर दिये। ढीली-ढाली सलवार' लम्बा कुर्त्ता और ऊपर जाकट। सिर के बाल बिखेर लिये और फेंटा लपेटते हुए कहने लगे' मेरे जाने के बाद' ठीक तीन घंटे बाद एक काम और करना।'

'वह क्या ?'

गांव से कुछ गधे खरीद लेना और हर गधे पर दो दो टार्चें मज-

वृति से बांध देना। सब टार्चों को एक साथ ही जलाकर गधों को पाकिस्तान की तरफ हकाल देना और पीछे हट जाना। कोशिश करूंगा कि तुम्हें एक दिलचस्प तमाशा देखने को मिल जाय और काम भी आसान हो जाय।

झाड़ी की एक लंबी सी लक्ड़ी हाथ में लेकर कर्नल निहत्थे ही दुश्मन की तरफ बढ़ने को तैयार हो गये। मेजर उनके अदम्य साहस को देखकर चकित रह गया। उनके प्रति मेजर के हृदय में श्रृद्धा उमड़ पड़ी। औपचारिकता छोड़ कर दोनों एक बार गले मिले और अन्ततः कर्नल पैदल ही चल पड़े।

अंधेरी रात में दूर दूर तक बालू फैली हुई थी।

भारत माता का एक लाल अपने दृढ कदमों से आगे बढ़ रहा था और दूसरा सजल नेत्रों से उसे मौत के मुंह में जाते हुए देख रहा था।

न नाता न रिश्ता फिर भी अपनत्व की भावना जागृत हो उठी।

कर्नल दो कदम रखते मगर फासला एक कदम का ही तै हो पाता था। बालू में धंसकर पांव पीछे की तरफ खिसके जा रहे थे।

मेजर उस वक्त तक खड़े खड़े कर्नल को जाते देखते रहे जब तक कि वे धीरे धीरे काले धब्बे में परिवर्तित होकर अंधकार में विलीन नहीं हो गये।

कर्नल ने बड़ा दुस्साहसिक कदम उठाया था।

शत्रु की सीमा में रेगिस्तान का सफर और वह भी बिल्कुल अकेले। न रास्तों की जानकारी और न साथ में कोई हथियार मगर भला कर्त्तव्य के प्रति जागरुक व्यक्तियों का मार्ग भी कभी रुका है?

कर्नल अत्यंत सावधानी से आगे बढ़ते रहे।

आधी रात तक बिना रुके वे बराबर चलते ही रहे। थक कर चूर हो गये। कमर में से मशक खोल कर कभी कभी दो घूंट पानी पी लेते कुछ क्षण ठहर कर विश्राम कर लेते और फिर चल पड़ते।

रास्ते में एक छोटा सा गांव मिला मगर एक दम सूना और विरान। कर्नल ने एक मकान के सामने चबूतरी पर बैठ कर विश्राम कर लेने का विचार किया। गांव की वीरानी से उन्होंने अनुमान लगाया कि गांव अवश्य ही शत्रु की फोजो ने खाली करा लिया होगा और इसका मतलब यह हुवा कि फौजों का पड़ाव आस पास ही होना चाहिये। इस लिये कर्नल मन ही मन अधिक सतर्क हो गये।

सुरक्षा के लिये उन्होंने एक काम किया। अपने साफे का पल्ला फाड़ कर उन्होंने अपनी लकड़ी पर बांध लिया ताकि सैनिक सफेद झंडा देखकर गोली न चला दें। मित्रता का सूचक सफेद झंडा लेकर कर्नल उठे और फिर आगे बढ़े।

गांव से बाहर निकलते ही उन्हें एक ऊंचे टीले पर चढ़ना पड़ा। काफी ऊंचा टिला था इस लिये उस पर चढ़ने में कर्नल की जीभ निकल आई। पांच छै कदम ऊपर चढ़ते तो आठ दस कदम फिसल कर निचे आ जाते। चार पांच बार प्रयत्न किया मगर परिणाम वही रहा। वे रहे वहीं के जहां से चढ़ना शुरू करते थे। इसी लुढ़का लुढ़की में मशक का मुंह खुल गया और सारा पानी बह निकला जिसे प्यासी बालू क्षण भर में ही सोख गई। रेगिस्तान के सफर में पानी का खतम हो जाना क्या प्रभाव डालता है यात्रियों पर इसका कर्नल को आज ही प्रत्यक्ष ज्ञान हुवा। उन्हें ऐसा जान पड़ने लगा मानों मौत की ठंडी बांहें उनकी तरफ बढ़ती चली आ रही हैं मगर फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और टीले पर चढ़ने का प्रयत्न करना ही उचित समझा।

इस बार उन्होंने खड़े-खड़े चढ़ने का विचार त्याग दिया। वे ढलान पर औंधे पड़ गये चारों हाथ पैर फैला कर। दांये हाथ की लकड़ी हाथ बढ़ा कर बालू की दीवार में जोर लगाकर गाड़ दी। और उसी के सहारे से ऊपर खिसके। इस प्रयत्न से सफलता तो मिली मगर ज्यों ही लकड़ी को खींच कर बाहर निकाला फिसल कर फिर नीचे आगये।

अंत में उन्होंने लकड़ी के दो टुकड़े करके दोनों हाथों में ले लिये और पहले की तरह औंधे लेट कर चढ़ने लगे। इस बार अच्छी सफलता मिली। दिल में जोश उमड़ आया और परिणाम यह हुवा कि आधे घन्टे की कशमकश के बाद वे टीले पर चढ़ कर चोटी पर पहुँच ही गये।

कुछ देर वहीं पड़े-पड़े विश्राम किया और फिर आगे का मार्ग देखने का प्रयत्न करने लगे तो उन्हें अपनी मंजिल एक दम सामने ही दिखाई दी। उसी टीले से करीब सौ गज आगे शत्रु सेना का पड़ाव नजर आया।

मंजिल भी हो सकता था यह पड़ाव और मौत भी।

अपनी योजना मन ही मन स्थिर करके वे उठे और दोनों हाथों को मुंह के पास भोंपू नुमा बना कर सैनिकों का ध्यान आकर्षण के लिये चीखें 'हो ऽ हो ऽऽ'

हांक लगा कर तेजी से ढलान पर बढ़े और कला मुंडियां खाते खाते टीले के नीचे पहुँच गये। रुकते ही उन्होंने संधिका सूचक सफेद झंडा सिर से ऊपर उठा लिया और तेजी से पड़ाव की तरफ भागे। उनकी आवाज सुनते ही पहरे पर तैनात सैनिकों की बन्दूकें तन गई थी और जब कोई व्यक्ति उन्हें उधर ही आता दिखाई दिया तो सबने निशाना साध लिया।

अब कर्नल को शानदार अभिनय करना था।

ज्यों ही सैनिकों ने उन्हें लल कारा वे चीखे 'दुश्मन—दुश्मन आ रहा हैं और साथ ही बेहोश होकर ढेर हो गये।

सांस धोंकनी की तरह चल रही थी मगर कर्नल आँखें मूंदे कान खोले एक दम निश्चल पड़े थे जैसे थकान के मारे बेहोश हो गयें हों।

पड़े पड़े सुनते रहे। कई व्यक्तियों के भाग कर आने की आवाज आई जो उनके पास आकर रूक गई। एक ने कहा 'बेहोश हो गया है।'

दूसरी आवाज सुनाई दी 'बेहोश होने से पहले दुश्मन के बारे में कुछ कह रहा था'

तीसरी आवाज आई 'कैप्टीन साहब के पास ले चलो इसे'

कई हाथो ने मिलकर उन्हें अधर उठा लिया और ले चले और फिर कहीं लेजा कर रख दिया। बात चीत फिर सुनाई देने लगी।

'कौन हैं ?' किसी अफसर की आवाज थी।

'सरहद की तरफ से आया था सांब' उत्तर था।

'बेहोश होंने से पहले इसने चीख कर कहा था' दुश्मन आ रहा है।'

'गरीब खबर पहुंचाने न जाने कहाँ से भागा चला आया है।'

'इसका चेहरा साफ करके पानी डालो-होश में लाओं इसे।'

चेहरा पोंछ कर पानी छींटा गया और फिर कसमसा कर कर्नल ने धीरे से करवट ली और उठ बैठे। धीरे-धीरे आँखें खोली और अपने चारों तरफ कई सैनिकों को खड़े देखा तो एकाएक ही चिल्ला उठे 'नहीं ...नहीं-नहीं...'

'घबराओ नहीं —'कैप्टेन ने तसल्ली दी 'तुम दोस्तों में हो।'

'आ...आ...आप मेरे मुल्क के ही हैं ना ?'

'हाँ भई हां-हम पाकिस्तान की फौज के आदमी हैं।'

संतुष्ट होकर कर्नल सीधे बैठ गये और ओठों पर जीभ फेरते हुए एक हाथ मुंह के पास करके पानी पिलाने का इशारा किया तो फौरन पानी पिलाया गया। स्वस्थ होकर कर्नल कहने लगे 'मेरे मुहाफिजों! खेमकी से भागा चला आ रहा हूं।

गांव पर दुश्मन ने कब्जा कर लिया है। हम लुट गये हुजूर—सब पकड़े गये।'

हक्के बक्के रह गये सब सुनने वाले। पूछा गया' खेमकी कितनी दूर है ?'

'ढाई कोस'

'कितनी फौज हैं दुश्मन की ?

'बहुत है हुजूर'''आये ही चले जा रहे हैं।'

'तुम थोड़ा देर आराम कर लो।' उस अफसर ने कहा 'और अपने आदमियों से कहने लगा' हमें अभी कूच करना पड़ेगा। आगे वाला गांव डीमली खाली करवा लिया गया है आप लोगों के लिए हमें वहीं पहुंच कर मोर्चा जमाना है। रशीद दो होशियार आदमियों को आगे भेजो ताकि दुश्मन का अदाजा लगाये।'

घड़ाघड़ तैयारियां होने लगी।

आधे घंटे में ही सैनिक मार्च करते हुए चल दिये और इस पड़ाव को बेस कैम्प बना दिया गया। हथियार गोला बारूद यहीं छोड़ा गया तथा रखवाली के लिए छोड़ दिये गये कुल तीन चार आदमी।

कर्नल को जहां लिटाया गया था वहीं पड़े पड़े वे गहरी नींद में सो गये।

१५

बेस कैम्प में सन्नाटा छा गया।

पहरे पर छोड़ गये सैनिक घूम घूम कर पहरा देने लगे। राउंड करते हुए वे उस स्थान पर भी आये जहां कर्नल रेत में ही पड़े सो रहे थे। नाक बज रही थी और खर्राटे गूंज रहे थे अतः उन्हें किसी ने भी जगाने की आवश्यकता नहीं समझी। बस देख कर चले गये। अपने ही आदमी से भला खतरा हो भी क्या सकता था ?

सैनिक के जाते ही कर्नल ने आंखें खोलीं और आस पास के स्थान का निरीक्षण करने लगे। चारों तरफ बड़े बड़े खोखों को जमा कर दीवारें खड़ी की गई थीं और शायद उन पर ही त्रिपाल डाल कर तंबू

बनाया हुवा था। तंबू में साधारण सा सामान था जिस में एक छोटी सी मेज थी। पड़े पड़े वे यह तो नहीं देख सके कि मेज पर क्या क्या सामान है मगर रेडियम डायल की एक टाईम पीस अवश्य दिखाई दे रही थी जो तीन बज कर आठ या दस मिनट का टाइम बता रही थी। मन ही मन उन्होंने हिसाब लगाया कि उन्हे भारतीय कैम्प छोड़े छः घंटे हो चुके हैं वे उठ कर उस तंबू का निरीक्षण करने का विचार कर ही रहे थे कि सिर पर से भयंकर गड़गड़ाहट की कान फाड़ू आवाज करते हुए कुछ हवाई जहाज गुजर गये तंबू के अंदर होने के कारण वे यह नहीं देख पाये कि प्लेन किधर से आये और किधर गये हैं ? अपने हैं या दुश्मन के। सोचने लगे कि पहरे वाले भी इनकी आवाज से प्रभावित हुए होंगे और इस समय इन्हीं के बारे में सोच रहे होंगे। इधर आने का उन्हें खयाल भी नहीं आयेगा—वे चुपचाप उठे और तंबू का निरीक्षण करने लगे।

खोलों में गोला बारूद और हथियार भरे थे।

मेज पर रखे कागजों को देखने का न मौका था और न ही उचित समय था उनका मोह छोड़ कर राज ने एक स्टेनगन ली और उसकी गोलियां तथा कुछ हैंड ग्रेनेड केन वास के थैले में भर कर लटका लिया। मेज के पास ही एक चमड़े का केस भी पड़ा मिला। उसे खोलने की कोशिश की मगर उसमें ताला लगा हुवा था। अतः खींच खांच करनी पड़ी जिसके परिणाम स्वरूप ताला तो उसीमें लगा रह गया मगर चमड़ा फट गया और केस खुल गया। कर्नल ने टटोल कर देखा तो उसमें नोट भरे हुए मिले। बड़े बड़े नोटों के तीन चार बंडल भी निकाल कर रख लिए और निकल पड़ने की तैयारी करने लगा।

कदम उठाया ही था कि पूर्व दिशा में धमाकों की आवाजें होने लगी। कर्नल समझ गये की हवाई जहाजों ने बममारी शुरू कर दी है। उनके होठों पर हंसी आगई मगर हंसने और खुश होने का समय नहीं था, न जाने कब मौत कहीं से गोली के रूप में आ जाये; चुपचाप रेंगकर उस तंबू से बाहर निकल गये। रात काफी ठंडी हो चली थी अतः निकलते

वक्त एक कम्बल भी खींच कर लेते आये। रास्ता किधर है और किधर जाना चाहिए यह प्रश्न सामने आया जिसका उनके पास कोई उत्तर नहीं था। इस लिए भारतीय मेजर नार्टन के पास देखे गये नक्शे के अनुसार अनुमान लगाना शुरू किया।

पाक सीमा में घुसते ही भारतीय सीमा सीधी पश्चिम में न बढ़ कर पहले दक्षिण पश्चिम में बढ़ी थी काफी चल लेने के बाद एक दम पश्चिम का रूख किया गया था याने रेल्वे लाईन के दक्षिण में रह कर उसके समानान्तर बढ़ना था। उन्होंने भी यही निश्चय किया कि एक दम पश्चिम में ही बढ़ना चाहिए शायद भाग्य उमर कोट पहुँचा दे जहां भाटी राजपूतों की काफी बस्ती है।

इसी निश्चय के अनुसार वो चल भी पड़े।

मगर बच निकलना इतना आसान भी तो नहीं था मुश्किल से दस कदम बढ़े होंगे कि एक सिपाही ने टोका 'ठहरो —कौन है ?'

'मैं हूं बिरादर' बेझिझक उत्तर दिया गया।

'कहां जा रहे हो !'

'पेशाब करने जा रहा हूं जरा।'

'अच्छा जाओ'

जान बची और लाखों पाये वाली बात हुई। वैसे कर्नल मानवता वादी व्यक्ति अवश्य थे मगर इस समय परिस्थितियां ही कुछ ऐसी थी कि किसी भी समय वे गोली चलाने को तैयार थे मगर फिर भी इस कार्य से वे बचना चाहते थे। उना व्यक्तिगत विचार यही था कि पाकिस्तानी जनता या सैनिकों से कोई दुश्मनी नहीं है बल्कि असल दोषी तो पाकिस्-तानीं शासक हैं जो मिथ्या प्रचार द्वारा साम्प्रदायिकता का जहर फैला रहे हैं। इस समय भीं यदि सैनिक उलझने की कोशिश करता तो वे बे खटके गोली मार देने को तैयार थे मगर परिस्थिति टल गई।

तंबू से कुछ दूर चलकर वे एक जगह बैठ गये। उन्हें वाक़ई पेशाब करता जान कर संतरी भी आगे निकल गये। उनके हटते हीं

कर्नल छोटी मोटी कंटीली झाड़ियों के बीच में सीने के बल लेट कर रेंगने लगे।

आसानी से निकलने का मौका मिल गया।

काफी दूर निकल जाने पर एक दम पश्चिम का मार्ग पकड़ा और अपनी चाल भी तेज कर दी। कम से कम समय में वे ज्यादा से ज्यादा दूर निकल जाना चाहते थे। चार पांच मील तो आसानी से निकल गये और कोई घटना भी नहीं घटी मगर ज्यों ही एक गांव के करीब पहुंचे उन्हें गोलियां चलने की आवाज साफ सुनाई पड़ने लगी। आवाजें गांव के दूसरी तरफ से आ रही थीं।

न जाने क्या बात हो और कैसी परिस्थिति बने, कर्नल ने इस झंझट से बचकर निकल जाना ही उचित समझा और गांव के बीच में से निकलने की बजाय उन्होंने बाहर निकल जाना ठीक समझा। इसी ढंग से काम भी किया।

गांव के दूसरी ओर पहुँचे तो अजीब ही नजारा देखा।

थोड़ी सी खुली जगह में कुछ लोग खड़े थे जो दो अलग अलग दलों में बंटे हुए थे एक दल की उनकी तरफ पीठ थी और दूसरा ठीक सामने पड़ता था। जो दल पीठ किये खड़ा था उसमें मर्द और औरतें पहनावे से ही पहचानी जा सकती थी मगर आश्चर्य की बात यह थी कि बीच बीच में औरतों के रोने की आवाजें भी कभी कभी सुनाई पड़ जाती थी।

सामने वाले दल के किसी व्यक्ति ने टार्च जलाई और आगे बढ़ आया। एक दूसरा आदमी बंदूक ताने उसके साथ रहा। औरतें चीख पड़ी।

टोर्च के तेज प्रकाश में उस आदमी ने, जो वर्दी धारी सैनिक दिखाई दिया था, औरतों में से एक का हाथ पकड़ा और खींच खांच कर झुंड से अलग कर दिया। कर्नल को संमझते देर न लगी कि पाकी सैनिक गांव वालों की लड़कियों और औरतों को उठा ले जाने की फिकर में हैं।

कर्नल को पाकिस्तानी सैनिकों की इस कमीनी हरकत पर आश्चर्य

हुआ कि अयूब शाही में यह कैसा अंधेर है कि रक्षक ही भक्षक बने जा रहे हैं। यह कैसा देश है जहां के सैनिक वहां की जनता की बहू बेटियों की इज्जत लूटने पर आमादा हैं ? इन विचारों के साथ ही साथ स्त्रियों पर होते इन अत्याचारों से उनका राजपूती खून भी गरम होने लगा और उन्होंने अपनी स्टेन गन संभाल ली।

दूसरे ही क्षण गोलियों की बौछार हुई और लुटेरे सैनिक लुढ़कने लगे। उन लोगों को न तो ऐसे प्रतिरोध की उम्मीद ही थी और न ही उन्हें संभलने तथा पोजीशन लेने का समय मिला। परिणाम यह हुआ कि एक भी आततायी जीता न निकल सका। जब सारे ही सैनिक मारे गये तो कर्नल उस ऊंची जगह से उतर आये और सबके सामने आगये।

गाँव वाले पुरुष और स्त्रियां जिनमें हिन्दू भी थे और मुसलमान भी आश्चर्य से उन्हें देखने लगे। उनके नेत्रों में कर्नल के प्रति आदर के भाव थे। कइयों ने उन्हें हाथ जोड़े। स्त्रियां सहम कर एक ओर हट गईं।

'इन सिपाहियों के हथियार उतार लो—अपनी इज्जत की हिफाजत करने में आप लोगों के काम आयेंगे।' कर्नल ने आदेश दिया।

उपस्थित व्यक्तियों के ओसान लौटे और वे फौरन उनके आदेश का पालन करने में जुट गये तो कर्नल ने स्त्रियों को कहा 'आप अपने घर जाइये-जल्दी'

स्त्रियां अपने अपने घरों को भाग निकलीं।

सभी हथियार उतार लिये गये। गाँव वाले कर्नल के पास आ खड़े हुए जैसे वे उनके सेनापति हों और उनके आदेश की प्रतीक्षा की जा रही हो। उन लोगों का आशय समझ कर कर्नल कहने लगे सिर्फ इन लोगों के हथियार उतार लेने से ही काम नहीं चलेगा। इनको ढूंढते हुए दूसरे लोग भी आ सकते हैं इस लिये जल्दी से जल्दी खड़े खोद कर इन्हें गाड़ दीजिये ताकि कोई निशान ही बाकी न रहें।

बिना चीं चपड़ के लोग फिर काम में जुट गये और एक वृद्ध

व्यक्ति कर्नल को साथ लेकर गांव में चल दिया। अंधेरा अभी भी काफी घना था।

वृद्ध ने उन्हें अपनी मेढ़ी (खपरैलों का कच्चा मकान) में ले जाकर बिठाया और फौरन ही हुक्का बना कर पेश किया।'

'माफी चाहता हूं बाबा—मैं हुक्का नहीं पीता।'

'तो क्या सेवा करूं हुजूर—आपने हम लोगों की लाज रखी है मगर हम ग़रीब लोग आपकी क्या सेवा करें ?'

'ऐसी कोई बात नहीं बाबा—मैंने कई खास बात नहीं की सिर्फ वही किया है जो एक इंसान को ऐसे मौके पर करना चाहिये। आप हिन्दू हैं ना ?'

'हां हुजूर—हम राजपूत हैं—भाटी राजपूत।' वृद्ध ने बताया।

'क्या सारे गांव में राजपूतों के ही घर हैं ?'

'नहीं हुजूर मेघवाल भी हैं–भील भी हैं।

इसी समय वृद्ध ने पूछा 'आप कौन दूष हैं हुजूर ?'

'मैं भी राजपूत हूँ बाबा—राठौड़।'

'धन्न भाग, (धन्य भाग) 'वृद्ध ने एक दम खुश होकर कहा और साथ ही उसने पास वाली दूसरी मेड़ी की तरफ मुंह करके आवाज दी 'बेटी सुगन ! ठाकुर साहब के लिये दूध ला बेटी।'

'रहने दो बाबा—क्यों तकलीफ करते हो वैसे भी समय कम है मैं अधिक देर ठहर नहीं सकूंगा मुझे जल्दी ही जाना है।' कर्नल ने औपचारिकता निभाई।

तभी एक नवयुवक कंधे पर रायफल भटकाये वहां आ गया। उसने जब कर्नल को अपने ही घर में बैठे देखा तो उसे आश्चर्य और खुशी दोनों हुए। मगर वृद्ध ने परिचय कराया 'हेमा ! ठाकुर साहब को जुहार कर बेटा, ये राठौड़ हैं।'

बेचारे हेम सिंह ने तो सोचा भी नहीं था कि लाज बचाने वाला वह फरिश्ता उसका स्वजातीय ही निकलेगा। बड़े आदर से उसने दोनों

हाथ जोड़े। अपने पास बैठा कर कर्नल उसे समझाने लगे 'देखो कुंअर ! तुम तो जवान हो मगर ठाकुर साहब का बुढ़ापा है घर में औरतें भी हैं। अपनी आंखों के सामने अपनी बहन बेटी की बेइज्जती हो तो राजपूत कैसे देख सकेगा ? इस पाकिस्तान में किसी की इज्जत सुरक्षित नहीं लगती मुझे तो। मेरा कहना मानो तो जितना जल्दी हो सके हिन्दुस्तान चले जाओ।'

'बाबा को मैं कई दिन से समझा रहा हूं मगर...'

'नहीं रे हेमा ! अब मैं ज़िद नहीं करूंगा बेटा।' वृद्ध बोला 'आज रात ही हम चल देंगे यह गांव छोड़कर। तैयारी कर ले।'

'सामान का मोह मत करना हेम सिंह ! जान है तो जहां है।'

तभी षोढ़शी सुगन दूध का गिलास लिये आ गई और शर्माते हुए कर्नल की तरफ बढ़ा दिया। गिलास के अत: बेझिझक पी गये।

अच्छा हेम सिंह !' गिलास लौटते हुए राज ने कहा 'मुझे तुम ऐसा रास्ता बता दो जिसमें रेल्वे स्टेशन तक पहुंच जाऊं।'

'मैं आपको छोड़ आऊंगा टेसन तक, मेरी सांडनी हवा में उड़ती है।'

आढे घन्टे बाद कर्नल को सांडनी पर पीछे की सीट पर बिठा कर हेम सिंह ने उत्तर का मार्ग पकड़ा। रास्ते में ज्यों ही उसने सांडनी की चाल बढ़ायी राज को मानना ही पड़ा कि वाकई वह हवा में उड़ती है।

रेल्वे स्टेशन से आधे मील के फासिले पर राज ने सांडनी रुकवाई और वहीं उतर पड़े। अपनी गन हेम सिंह को दी जिसे काठी के नीचे छिपा लिया गया। हेम को बिदा करके राज पैदल ही रेल्वे स्टेशन की तरफ बढ़ गये।

१६

दूसरे दिन ट्रेनिंग शुरू हुई ।

पहली उड़ान तो स्वयं सरवर खाँ ने उसे साथ लेकर भरी और बहुत सी बातें समझाईं । भिन्न-भिन्न यन्त्रों की कार्य प्रणाली से उसे अवगत कराया ।

बाद को दो तीन उड़ानों में एक अन्य हवा बान मुख्तार उसके साथ रहा । इतनी ही ट्रेनिंग मदन जैसे इजीनियर के लिये काफी थी सो अंतिम उड़ान उसने अकेले ही भरने का निश्चय किया । सरवर खाँ ने भी उसकी हिम्मत बढ़ाने के लिये इजाजत दे दी ।

मदन पाक पलेन में पाकिस्तानी आसमान में उड़ चला ।

कंट्रोल रूम के आदेशों के अनुसार उसने ऐयर पोर्ट के कई चक्कर काटे और फिर विस्तार बढ़ाता गया । उसकी सफल उड़ान से खुश होकर मार्शल ने कंट्रोल रूम में आकर वारयलैस पर बधाई दी ।

'तुम्हारी उड़ान कामयाब रही मि० मंसूर '

'थैंक्यू सर ० कामयाब तो रहनी ही थी सर—कौम की खिदमत जो करनी है । वैसे कोई खास फर्क नहीं है ।, मदन ने जवाब दिया ।

'बिल्कुल नहीं—वैसे तुम्हारा हाथ काफी साफ लगता है ।'

हाथ की सफ़ाई दिखाने का मौका तो अभी मिला ही कहां है साहब !'

'मिलेगा भई जरूर मिलेगा ।'

अपनी उड़ान खतम करके मदन सरवर खाँ के साथ पोर्ट से उसकी गाड़ी में उसके साथ ही निकला । रास्ते में उसने बात छेड़ी 'कमबखतों

ने अगर रेडार पर न बिठा दिया होता तो हाथ में और भी ज्यादा सफाई होती साहब ।'

'कोई बात नहीं—इसी बहाने रेडार कंट्रोल का काम तो सीखने को मिला ।'

'जी हाँ सो तो है ही ।'

'देखो मंसूर !' सरवर खाँ सरगोशी के लहजे में कहने लगा 'ये काम तो खैर होते ही रहेंगे—तुम्हें पहले वह काम पूरा करना है ।'

'कौन सा काम ?' मदन ने ऐसे आश्चर्य से पूछा कि जैसे पहले तै की गई बातों को एक दम ही भूल गया हो ।

'वह लूसी वाला मामला...'

'हाँ ऽऽऽ—याद आया । तो पहले इस काम से ही निपट लिया जाये ।'

'बेशक ! हमारा फायदा इसी में है ।'

'जैसा आपका हुक्म'

मदन जब अपने निवास स्थान पर पहुंचा तो नौकर से पता चला कि मेम साहब बाहर गई हुई हैं, दो बार उसका फोन आ चुका है ।

अपने कमरे में पहुंच कर मदन कुछ देर एकांत में सोचना चाहता था कि इस लूसी से कैसे पीछा छुडाया जाये मगर उसे ऐसा अवसर नहीं मिला । टेलीफोन की घन्टी बजी और अटेंड किया तो लूसी की आवाज आई 'हल्लो मंसूर डीयर'

'हलो...' अपने स्वर को अत्यन्त रोमांटिक बना कर मदन ने जवाब दिया 'लूसी...माईस्वीटी ! तुम किधर से रिंक रही हो ?'

'तुम इदर आ जाओ ना—काना इदर ही काना है ।' सुशील पत्नी की तरह लूसी ने खाने के बारे में निर्देश किया ।

'किधर आ जाऊं मेरी जान ? फोन में जगह बहुत कम है इसमें होकर आना तो बहुत मुश्किल है ।'

उधर से हल्की सी हसने की आवाज आई और फिर लूसी कहने

लगी 'तुम उदर टैरो–मैं आती हूं।'

मदन फोन रख कर कुर्सी में बड़ी वेफिकरी से फंस कर बैठ गया और मन ही मन सोचने लगा कि मैं अपना जोड़ तोड़ लगाता फिर रहा हूं और यह साली लूसी अपनी तुक तान अलग ही लगाती फिर रही है। न जाने किस खसम के यहां बैठी है ?

लूसी के बारे में सोचना छोड़कर वह अपने काम के बारे में सोचने लगा। उसके सामने वैसे तो कई काम थे जिनमें मुख्य काम तो यही था, लूसी से पीछा छुड़ाना और फिर रेडार स्टेशन पर आर्म स्ट्रांग से मुलाकात करना। अपने मित्र आर्मस्ट्रांग का खयाल आते ही वह उठा और टेलीफोन उठाकर इन्क्वारी का नम्बर मांगा। ज्यों ही स्थापित हुवा मदन ने कहा 'विंग कमांडर मंसूर बोल रहा हूं भाई, जरा रेडार कंट्रोल का नम्बर बताइये वहां अमरीकी इंजीनियर मि० आर्मस्ट्रांग से बात चीत करनी है और उनका अलग से कोई नम्बर हो तो वह बता दीजिये।'

'यह सर–उनका रेजिडेंस नम्बर टू थ्री है।'

'शुक्रिया'

फिर टू थ्रीं से सम्बन्ध स्थापित होते ही उधर से आवाज आई 'आर्म स्ट्रोंग'

मदन एक दम चहंका 'हलो माई डीयर मजबूत हाथ !'

'हल्लो हल्लो…मिस्टर…!

'मिस्टर मंसूर, मदन ने फौरन नाम बताया ताकि वह असली नाम न ले बैठे।

'यह क्या चक्कर है बेटा ?' आर्म स्ट्रोंग नाम सुन कर चक्कर में पड़ गया।

'चक्कर नहीं मेरी जान यह चक्र है।'

'व्हाट ! तुम साले अभी इधर आओ यारों के पास।'

'मगर तुम हो कहां ?'

'और तुम कहाँ हो इस वक्त ?'

'सब गड़बड़ है यार—पता ठिकाना मालूम नहीं। ऐसा करो—पोर्ट के कैंटीन में तुम भी आ जाओ और मैं भी पहुँच जाता हूँ।'

'ठीक है—मैं पहुंच रहा हूँ।'

मदन का निवास स्थान वैसे भी पोर्ट के पास ही था अतः वह फौरन जीप लेकर चल पड़ा। ज्यों ही वह निकला लूसी की कार बंगले के फाटक पर आकर रुकी और धड़ धड़ाती हुई लूसी कमरे में घुसी मगर मंसूर कहीं नहीं दिखाई दिया तो उसने बाथरूम तक तलाश कर डाला मगर मंसूर का पता नहीं चला। परेशान होकर उसने नौकर को पुकारा 'रहमान'

भागा आया रहमान; 'हुकुम मैम साब'

'मंसूर साब किदर है ?'

'बाहर गये हैं साब'

'कब गये ?'

'आपके आने से सिर्फ पाँच मिनट पहले।'

'किदर गया ?'

पता नहीं साब' रहमान ने उत्तर दिया और कनपटी खुजाने लगा। लूसी इन लोगों की हरकतों से अच्छी तरह परिचित थी अतः पर्स खोलकर उसने एक दस का नोट निकाल कर उसकी तरफ बढ़ा दिया 'बोलो अबी'

नोट देखते ही रहमान के होंठ फैल गये और दांत बाहर निकल आये। नोट ले कर जेब में रखते हुए बोला 'हें हें...इसकी क्या जरूरत थी मेम साब'

'बोलो बोलो—मतलब का बात बोलो।'

'मंसूर साब इंजीनियर साब से मिलने कैंटीन गये हैं।'

'कौन इंजीनियर ?'

'वह अमरीकी इंजीनियर साहब जिसने रेडार मशीन लगाया है

साब ।'

'ओह !' लूसी ने एक नोट और देकर कहा 'और बात बताना हमको'

रहमान ने स्वीकार किया और लूसी बाहर की ओर लपकी। अपनी गाड़ी स्टार्ट की और तेज रफ्तार से कैंटीन की तरफ चल दी।

कैंटीन से जब हाथ में हाथ डाले मदन और आर्म स्ट्रोंग बाहर निकल रहे थे ठीक उसी वक्त लूसी की गाड़ी वहां पहुंची। गाड़ी रोक कर लूसी बाहर निकली। उके देख कर मदन भी रुक गया। होठों से मुस्कराहट बिखेरतीं लूसी उन दोनों की तरफ बढ़ी तो मदन ने आर्म स्ट्रोंग को उसका परिचय देते हुए धीरे से कहा हमारी चीनो बेगम है प्यारे—लूसी। कहो बेटा है ना हाई वोल्ट जनरेटर ?'

'है यार है।'

'हलो' लूसी ने पास पहुंच कर कहा।

'डीयर लूसी तुम इधर काहे को आ गया ? मदन ने प्रश्न किया।

'तुम किदर जाता है मि० मंसूर ?'

'मैं तो चर्च में जा रहा हूं।' मदन ने उत्तर दिया।

'चर्च ?' आश्चर्य से दोहराया लूसी ने। उसकी समझ में नहीं आया कि यह चर्च जाने का कौन सा समय है। पूछा 'क्यों ?'

'कमाल करती हो—अरे मेरी पूसी ! मैं शादी कर रहा हूं इनसे।' मदन ने बताया और आर्म स्टोंग की तरफ इशारा कर दिया।

चकरा गई लूसी कि यह आदमी के साथ आदमी की शादी कैसी मगर उसे क्या पता था कि उसके सामने अंतर्राष्ट्रीय ठग मदन खड़ा है। आदमी के साथ शादी ?'

'होश्त ! यह तुमको नर लगती हैं ? अरे यह तो मादा है।'

बेचारी लूसी आंखें फैलाये देखती ही रह गई।

'चलो डार्लिंग' मदन ने आर्म स्ट्रोंग को कहा और दोनों चल भी

पड़े। इस अवसर पर आर्मस्ट्रांग ने भी कमाल दिखाया अपना। ठुमकता हुआ कूल्हे मटकाता हुवा मदन की बांह में बांह डाले गाड़ी तक गया और फिर दोनों अंदर बैठ गये।

फर्राटे भरती हुई कार निकल गई और लूसी को ऐसा लगा जैसे हाथ से बाजी ही निकल गई हो—सारी महनत पर पानी फिर गया हो।

कार में आर्म ने पूछा 'बोल बेटा ठग—किधर चलें।?'

'एक दम वीराने में चलो प्यारे' मदन ने बताया।

'क्यों?'

'रहा ना साले ऊंट का ऊंट ही। अबे मियाँ बीबी को एकांत में ही बातें करनी चाहिये। यहाँ के लोग सुन लेगें तो सालो को नशा होनें लग जायगा ना?'

झिड़का आर्म ने भी 'ठीक है' ठीक हैं काटता क्यों हैं।'

मदन ने सिगरेट निकाल कर जलाई और एक सिगरेट आर्म के होठों में भी फसा कर लाइटर सामने कर दिया।

गाड़ी धुंआ छोड़ती रही और ये दोनों भी धुंआ उड़ाते चले।

बदीन से पाँच छः मील दक्षिण में जाकर काररू की ओर दोनों दोस्त बाहर निकल आये। चहल कदमी करते हुए दोनों मैदान में बढ़ने लगे।

'तो प्यारे मजनून हाथ तुम यहाँ बदीन में बेदीन हो रहे हो?' मदन ने बात शुरू करते हुए कहा, मगर यह बताओ कि कैसीं गुजर रही है?'

'गुजरेगी क्या खाक—साली लाइफ एक दम डल हो गई है इधर।'

'याने नो एडवेंचर—रोमांस!'

'नहीं यार—बिल्कुल नहीं। साला रद्दी कंट्री है। किसी का कोई ईमान ही नही है मदन! छोटे से लेकर बड़ तक सब अपना फायदा

साचते हैं।'

'सोचने दे यार ! अपने बाप का क्या जाता है खैर यह बता कि तुमने जो यह पाकिस्तान की खोपड़ी में अमरीकी आंख फिट की है इसका क्या हाल है ?'

'काम कभी का पूरा हो चुका है।'

'इस आंख से दिखता भी है ?'

'अवे दिखेगा कैसे नहीं ?'

'मेरा मतलब यह है कि कहां तक दिखता है ?

'बहुत दूर-दूर तक दिखाई देता है।'

इन्डिया में कहाँ-कहाँ तक तू ताक झांक कर सकता है ?'

'बंबई, जाम नगर, जोधपुर, आगरा, बीकानेर वगैरह।'

ईमान से !' आश्चर्य हुवा मदन को।

'सच यार ! रात भी ऐसा ही हुवा , आगरे से चार बाम्बर आये थे मैंने देख लिया उनको और फिर इधर वालों को वैल कम करने को भेज दिया था।'

'फिर क्या हुवा ?'

'होना क्या था—भगा दिया गया उनको।'

'वेड़ा गर्क—मरवा दिया ना साले ऊँट तुमने ?'

'क्या मतलब ?'

'अबे मतलब यह बेटा मजबून हाथ कि मैं इस साली अमेरिकन आंख को फोड़ डालूंगा जो इन्डिया शरीफ पर नजर डालती है।'

निर्विकार भाव से आर्म ने उत्तर दिया 'तो फोड़ डाल भाई—मेरे बाप का क्या जाता है ?

'देख आर्म !' मदन आत्मीयता के लहजे में उसे समझाने लगा 'हम दोनों ही इण्टरनेशनल हैं मगर फिर भी तेरे दिल में इँगलैंड के लिये दर्द है उसी तरह मेरे दिल में भी भारत के प्रति दर्द है क्यो कि मैं वहीं के खेत में उगा था।'

खेत में उगने की बात सुनकर आर्म ठहाका लगाकर हंस पड़ा।

'मुंह मत फाड़ यार बात सुन पहले' मदन ने उसे रोकते हुए कहना जारी रखा 'यह तो तू जानता ही है कि पाकिस्तानी पीपनी अमरीकी फूंक से बज रही है। आज कल चीनी फूंक भी काम कर रही है मगर इससे हमें कोई शिकवा शिकायत नहीं। हमारी तरफ से चाहे पाकी लोग अपनी बीबियां भी उनके हवाले करदें मगर शिकायत यह है कि पाकिस्तान अपनी पीपनी का मुंह इंडिया की तरफ करके बजाता है भई इस चींचीं से हमारे याने इंडिया के आराम में खलल होता है।'

'बात तो ठीक है।'

'तो प्यारे! मैं चाहता हूँ कि यह पीपनी बद हो जाये।'

'फिर!'

'इस फिर के लिये यह जरूरी है कि इंडियाई चीलें करांचीं पर मंडरायें।'

'चीलें?' आश्चर्य हुवा आर्म को।

'रहा ढींच का ढींच ही यार। अरे भाई मेरे—मेरा मतलब यह है कि इंडियन प्लेन्स करांची तक आये और फूंक बन्द करने की कोशिश करें।'

'आई सी'

'मगर यह साली रेडार नाम की आंख फिट की है ना यह सब गड़बड़ कर रही है—मैं इसे फोड़ कर रहूँगा।'

'तो ऐसा करें यार!' आर्म ने सुझाव रखा 'मैं कल परसो में चार्ज दे देता हूं और वदीन भी छोड़ देता हूं फिर तू निपट लेना।

'एक दम मंजूर'

'मगर मदन यह सब तू करेगा कैसे?'

'अबे तू फिकर में दुबला क्यों हो रहा है? सब कर लूंगा—बस तू यहां से अपना काला मुंह कर ले ताकि कल को तुझ पर किसी तरह

का शक न हो।'

'ठीक है। इसके बाद क्या प्रोग्राम रहेगा ?' आर्म ने पूछा।

इसके बाद दोनों यार इण्डिया चलेंगे। घूमेंगे फिरेंगे याने आवारागर्दी।

तू कर्नल राज के बारे में कहा करता था ना ? उधर मिलेगा कर्नल ?'

'ओह यैस—बड़े भाई भी मिलेंगे और तुझे उस नमूने से मिलाऊंगा जिसे हीरा सिंह कहते हैं और जिसका जन्म उस वक्त हुवा था जिस वक्त कि......'

'ठीक है, ठीक है—मैं यहाँ से सीलोंन जाऊंगा और वहां से बम्बई पहुँचूंगा। तुम मुझसे वहीं आकर मिलना।'

नहीं, बम्बई में कहां ढूढ़ता फिरूंगा तुम कोलम्बो ही ठहरना मैं तुझे ढ़ूढ़ लूंगा।'

'ओ० के०'

दो अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तियों में बिना लिखा पढ़ी का समझौता हो गया और फिर दोनों कार में बैठ कर बदीन लौट आये।

१७

कर्नल हैदराबाद उतर गये और नाम रखा रहमत खां।

वे सरो सामान जब जंकशन से बाहर निकले तो थर्ड क्लास गेट के बाहर ही एक आदमी पर उनकी नजर पड़ी जो बाहर निकलने वाले हर मुसाफिर को बड़े गौर से देख रहा था। कर्नल को सन्देह हुवा कि

यह व्यक्ति यहां की सरकार का जासूस न हो और उन पर सन्देह न कर बैठे।

बीमारी पैदा होने से पहले ही उसकी रोक थाम कर लेना बुद्धिमानी है सो इससे पहले कि वह कर्नल से ही कुछ पूछ ताछ करने लगता वे स्वयं ही सीधे उसके सामने जा खड़े हुए और बाले 'अस्सलाम वाले कुम'

'वालए कुम……

'क्यों साहब ! ठेकेदार नवाब बशीर खान साहब का बंगला कहां है ?'

कर्नल ने सोचा था कि यह अभी अपनी अनभिज्ञता प्रकट करके टाल देगा क्यों कि इतनी बड़ी जगह में कौन किसको जानता होगा और फिर इस नाम के ठेकेदार को छोड़ कर किसी नवाब से भी वे परिचित नहीं थे मगर बात ही गड़बड़ होगई और ऊंट उल्टी करवट बैठ गया।

कर्नल एक तो खुद ही कई मुसाफिरों के निकल जाने के बाद ही आये थे अतः वह व्यक्ति भी फुरसत में ही था इस लिये उसने फौरन ही जवाब दिया 'चलिये आपको उनके बंगले तक पहुँचा देता हूं।'

बात तो फंस ही गई मगर इस पर भी घबराने और हिम्मत हारने से तो और भी मुसीबतें खड़ी हो सकती थीं अतः वे झिझक बोले 'बड़ी महरबानी आपकी–सवारी का इन्तजाम करवा दें तो भी पहुंच जाऊंगा। आपका वक्त··'

'वक्त की भी आपने एक ही कही–रास्ते में ही पड़ता है उनका बंगला और मैं भी उधर से ही निकलूंगा। आप जरा दो एक मिनट रुकिये।'

'बहुत बहतर हैं जनाब–मैं सामने वाले होटल में बैठता हूं।'

उसकी हाँ ना सुने बिना ही वे होटल की तरफ बढ़ गये। सड़क के दूसरी तरफ ही था होटल। नाम तो मुहम्मदी होटल था मगर

हकीकत में थी चाय की दुकान ही। बाहर से ही सिगड़ियों पर चढ़ी हुई चाय की बरनियाँ और कीलों पर लटकते हुए कप नजर आ रहे थे। दरवाजे के एक तरफ पान की दुकान थी और दूसरी तरफ एक केबिन में एक आदमी बैठा बैठा बीड़ियाँ बांध रहा था। राज होटल में घुसकर एक मेज पर जा बैठे।

राज सोचने लगे कि यह अच्छी मुसीबत गले पड़ी।

बड़ी आसानी से चकमा देकर निकल तो सकते थे मगर अनजानी जगह और शत्रु देश में अपने को संदिग्ध बनाना उन्हें सर्वथा अनुचित लगा इस लिये शांतिपूर्वक बैठे रहे और उस व्यक्ति के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

वे पूरी सिगरेट भी खत्म नहीं कर पाये थे कि वही व्यक्ति होटल में आया और सीधा उनके पास आकर बैठते हुए कहा 'चलिये साहब—चलें ?'

'पहले जरा मशीन को तेल पानी दे लें जनाब, फिर चलते हैं।' राज ने उत्तर दिया और होटल के लड़के को पास बुलाया। आते ही लड़के ने अपने कंधे पर से कपड़ा उतार कर मेज साफ करते हुए पूछा 'हाँ साहब कितनी चाय ?'

'चाय तो खैर दो ही ला बेटा मगर पहले यह बता कि साथ में क्या लायेगा ?'

'डबल रोटी है, पाव है, नमकीन बिस्कुट भी हैं।'

'मक्खन वगैरह नहीं है ?' राज ने पूछा।

'नहीं सा'ब।'

राज ने उस व्यक्ति से पूछा कहिये साहब क्या लीजियेगा—मक्खन वक्खन तो यहाँ नहीं है। नमकीन बिस्कुट चलेगा ?'

'हाँ ऽऽऽ—चलेगा साहब।'

चाय पान के साथ साथ बात चली। राज ने ही पूछा 'आपका इस्मे मुबारिक ?'

'ना चीज को जान मुहम्मद कहते हैं जनाब और आप ?'

'लोग रहमत खां के नाम से बदनाम किये हुए हैं भाई।' राज ने अपना नाम बताया जान मोहम्मद हीं हीं करके हँस दिया। गनीमत यही हुई कि उसने अपना मुंह दूसरी तरफ कर लिया वर्ना मुंह में भरी हुई चाय रहमत पर ही गिरती। अपना हंसना बन्द करके बांए हाथ से मुंह पोंछते हुए उसने कहा 'आप भी कमाल के आदमी हैं।'

'नहीं भाई—कमाल वमाल कुछ नहीं। अपनी ठेकेदारी के सिलसिले में रात दिन भटकते रहना पड़ता है सो अगर गुमसुम रहूं तो दम घोंटू का रोग न हो जाये ?'

'तो आप ठेकेदार हैं ?'

'क्यों भाई कोई इतराज है क्या ?

'नहीं साहब नहीं, कतई नहीं है। वैसे क्या यहाँ पहली ही बार तशरीफ लाये हैं ?'

'जनाब—दर असल सौदे तै करना तो अब्बा हुजूर के जिम्मे है और काम काज मैं ही देखता हूँ मगर इस बार उनकी तबियत खराब होने से यह जिम्मेदारी भी मुझ पर आ पड़ी है। कमबख्त एक मुंशी था, हम चार सौ रुपये तनख्वाह भी देते थे मगर भाई को न जाने क्या सूझी कि नौकरी ही छोड़ गया और मुझ पर बोझ बढ़ गया।'

मुंशी की तनख्वाह और चार सौ रुपये, जान मुहम्मद की रगों में खून तेजी से दौड़ने लगा और खोपड़ी में टक्कर मारने लगा। मन ही मन उसने अपनी तुलना उस मुंशी से की और बोला 'निहायत बेवकूफ रहा होगा वह इंसान'

चाय खतम हुई और दोनों उठे। पैसे चुका कर बाहर आ गये तो रहमत ने धीरे से पूछा 'और हमारे जान मुहम्मद साहब क्या करते हैं ?'

बेचारा न जाने कहाँ खोया हुवा था, चौंका और कहने लगा 'करते क्या हैं साहब बस जिंदगी को घसीट रहे हैं। पुलिस में मामूली सा आदमी हूं।

'च च च'''अमां यह मासूम जवानी और पुलिस की नौकरी ? अगर पैसा''''''—

'अच्छा जनाब, मैं चलता हूँ। इंशा अल्ला फिर मुलाकात होगी।' एकाएक ही खान ने कहा और फौरन ही सड़क पार करके दूसरी तरफ निकल गया और एक गली में जा घुसा। रहमत खां पूछ भी न पाये कि भई आखिर हुआ क्या ?

आसानी से पीछा छूट गया तो रहमत खां ने भी एक तांगा रोका और बैठते ही उसे आर्डर दिया 'बाजार चलो भाई कपड़ा बाजार।'

'दो रुपये होंगे जनाब' तांगे वाले ने पहले ही चेतावनी दे दी।

'अगर जल्दी पहुँचा दोगे तो तीन मिल जायेंगे वर्ना जुर्माने में अठन्नी काट ली जायेगी। काम ज्यादा है और वक्त कम है।

तांगे की चाल एक रुपया अधिक पाने के लोभ में काफी अच्छी रखी तांगे वाले ने और पन्द्रह ही मिनट में कपड़ा बाजार में ले जाकर खड़ा कर दिया।

चौराहे पर ही इनायत रेडी मेड स्टोर का बोर्ड नजर आया तो तांगे वाले को वहीं ठहरने को कह कर रहमत साहब स्टोर में जा घुसे और पन्द्रह बीस मिनट बाद ही कुछ कपड़े खरीद कर लौट आये। फिर तांगे में सवार हुये और आर्डर दिया 'चलो भाई—'

'कहाँ चलूं हुजूर ?'

'किसी बढ़िया हम्माम पर चलो।'

तांगा बढ़ गया और एक हेयर कटिंग सैलून के सामने रुका जिस पर हम्माम का भी बोर्ड लगा हुआ था। तांगे वाले को पूरे तीन रुपये देकर रहमत खां सैलून में जा घुसे।

वहां से जो रहमत खां साहब का नया एडीसन निकला तो बाकायदा रेशमी-लुंगी, बारीक कुर्ता पहने और कुर्ते पर कसीदे की जाकिट डाटे।

वहां से बस स्टैंड और वहां से बस द्वारा हजरत बदीन आ धमके दिन के तीन बज रहे थे।

...

सबसे पहले रहमत खां ने पेट पूजा कर लेना जरूरी समझा इस लिये स्टेशन के बाहर के ढ़ाबो में सब से अच्छा ढ़ाबा तालाश किया और उसमें जा घुसे।

वहीं, उसी ढ़ावे में मुलाकात हुई एक नवयुवक ट्रक ड्राइवर जुल्फकार से। रहमत खां ने बहुत जल्दी ही अपनी शाह खर्ची से उससे दोस्ती गांठ ली और यह भी मालूम कर लिया कि जुल्फकार यहां शरणार्थी है और यहां एक ठेकेदार की ट्रक चलाता है जो एयर पोर्ट केंटीन और किचन को माल सप्लाई करता है और बिल्कुल अकेला है।

उसके खाने का बिल भी रहमत ने ही चुकाया और ढ़ावे से बाहर निकले। सब से जरूरी रहमत खां को एक रिस्ट वाच की खरीद दारी लगी इस लिए जुल्फकार को ले कर एक घड़ी की दुकान पर पहुँचे और रेडियम डायल की बढ़िया घड़ी खरीद कर बांधा और फिर जुल्फकार के मकान पर आगये।

'तो मियाँ जुल्फकार—तुम भी मेरी तरह खाना बदोश ही हो।' राज ने उसके छोटे से कमरे में बोरी के टाट पर बैठते हुए बात छेड़ी।

'हां यार हूँ तो कुछ ऐसा ही मगर जिन्दगी सूनी सूनी लगती है।,

'क्यूं भई–ऐसी भी क्या बात है ?'

'किस्मत यहां ले तो आई मगर दोस्त यहां मजा नहीं। आजादी नहीं।'

तो फिर मजा कहां रह गया ?

ठंडी सांस भरी जुल्फकार ने और कहने लगा 'मजे तो उसी दिन खत्म हो गये उस्ताद जिस दिन वतन छोड़ने का गुनाह किया था।'

'अरे भई! अपने वतन की तो बात ही छोड़ो–'रहमत ने भी हमदर्दी जाहिर करते हुए कहा' जला वतन इन्सान भी कभी आराम से रह पाये हैं ?'

'यार जी चाहता है वापिस लौट जाऊं अपने वतन में।'

'कौन सा है तुम्हारा वतन ?'

'जैसलमेर'

'मैं बीकानेर से हूं मेरे भाई। जब भी वहां के कोटगेट की, वहां की चमचम की याद आजाती है तो क़सम ख़ुदा की छाती पर मूसल बरसने लगते हैं मगर क्या करें आ फंसे तो आ ही फसे।'

'नहीं दोस्त ! देखना—कभी न कभी, मौका मिलते ही मैं जैसलमेर चला ही जाऊंगा। बेड़ा गर्क हो उस पीर पगारो का जो मुझे बेघर बार का करके रख दिया।'

अपने वतन से दूर पड़े एक नौजवान को अपने वतन की याद आई तो—रहमत ने उसे और ताव दिलाया 'अब यह नामुमकिन है जुल्फकार—वतन लौटने के लिए जिंदगी को दांव पर लगाना पड़े तब ही ऐसा हो सकता है वर्ना नहीं।

'तो यह जुआ भीं खेल लूंगा रहमत मियां।' जुल्फकार ने निर्णयात्मक स्वर में अपना फैसला सुना दिया और शाम होने तक रहमत मियां उस पर धार रखते रहे। जब कमरे में काफी अंधेरा हो गया तो रहमत खां बोले' भले आदमी अब तो रोशनी कर।'

'मरना है क्या ! आज कल रोशनी सूरज और चांद की होती हैं बाकी सब बंद कर दी गई हैं एहतियात के तौर पर हिफाजत के लिये।'

'अंधेरे में हिफाजत कैसी भाई ?'

'हिन्दुस्तानी हवाई हमले के डर से ऐसा ही किया हुवा है।'

'मगर खतरे का सायरन तो अभी बजा ही कहां है।'

'बजे या न बजे इधर तो ऐसा ही अंधेरा रहता है।'

घंटा भर इधर उधर की बातों में गुजार कर दोनों मित्र सोने की तैयारी कर ही रहे थे कि हवाई हमले की सूचना देने वाला सायरन बज उठा और दोनों कमरे से बाहर निकल गये। मकान के बाहर ही सड़क के दूसरी तरफ एक पेड़ के नीचे तक जुल्फकार रहमत को ले गया और फिर वहीं दोनों एक खंदक में उतर गये। रहमत ने देखा कि उन दोनों के अलावा वहां दो तीन लड़कियां भी छिप बैठी हैं।

'अरे जा रही हो या आई हो ?' जुल्फकार ने ऐसे लहजे में पूछा

जैसे उनके आने जाने के बारे में अच्छी तरह जानता हो।

'ज़ा रही थीं' एक लड़की की बारीक आवाज आई।

तभी खंदक पर से दिल दहलाने वाली गड़गड़ाहट की आवाज करता हुवा एक प्लेन गुजर गया—फिर दूसरा—फिर तीसरा भी। कुल पांच प्लेन पूर्व दिशा की तरफ चले गये। रहमत खां अनुमान लगाता रहा कि भारतीय बाम्बर आये होंगे—रेडार ने चैक किया होगा और अपने हवा बाजों को सतर्क किया होगा। उनको रोकने के लिए ही शायद ये पांचों प्लेन गये हैं। दूसरे शब्दों में मतलब यह हुवा कि हवाई हमले की कोशिश इस रेडार ने एकएक दम बेकार कर दी। इस समय राज को मदन का बदीन आना समझ में आया। कि वह क्यों बदीन में टिका हुआ है।

—समाप्त—

ट्रांजिस्टर रेडियो (सचित्र)

विगत कुछ वर्षों में ट्रांजिस्टर रेडियो बहुतायत से प्रयोग में आने लगे हैं। इस महत्वपूर्ण विषय पर हिन्दी में यह प्रथम पुस्तक है। इस पुस्तक में ट्रांजिस्टर के सिद्धान्त, रचना, ट्रांजिस्टर रेडियो के सर्किट एवं उनकी सर्विसिंग का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक ट्रांजिस्टर एवं ट्रांजिस्टर में रुचि रखने वाले व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। मूल्य ५.५० डाक-खर्च सहित।

गर्ग एन्ड कंपनी, खारी बावली, दिल्ली-६

अचार, चटनी, मुरब्बा बनाना

इस किताब में अचार, चटनी, मुरब्बे इत्यादि बनाने का विस्तार से वर्णन किया गया है आम, नीबू, मिर्च, शलजम आदि का अचार कई तरह से डालने का ढंग. आम आंवला, सेव, हरड़, बेलगिरी, गुलकन्द आदि सभी प्रकार के मुरब्बे बनाना और आम, नाशपाती, गोभी आदि अनेक प्रकार की चटनी बनाना इसमें सरलता से लिखा गया है। कीमत ३) डाक व्यय अलग।

उर्दू हिन्दी मास्टर

अगर आप बिना मास्टर के उर्दू हिन्दी पढ़ना चाहते हैं, तो इस पुस्तक की बदौलत हिन्दी जानने वाला उर्दू और उर्दू जानने वाला हिन्दी थोड़े दिनों में ही सीख सकता है। पुस्तक बहुत ही लाजवाब है आज ही मंगा कर हिन्दी से उर्दू और उर्दू से हिन्दी पढ़ें। कीमत ३-०-० डाक महसूल सहित।

अभिनेत्रियों की प्रेम कहानियां

पुस्तक में ऐसी कहानियों का संग्रह किया गया है जिसमें फिल्म अभिनेत्रियों का गोपनीय प्रेम-घटनाओं का वर्णन है। मूल्य २॥) डाक खर्च अलग।

केवल विवाहित लोगों के लिये

नंगी तस्वीरें २.०० नंगी जवानियां २.५० कामशास्त्र ४.०० प्रेम-शास्त्र ४.०० प्रेम भरे पत्र ३.०० जीजा/साली हंसी-मजाक ४.०० मुकलावा बहार ४.०० बर्थ कन्ट्रोल ४.०० फिल्मी परियां ४.०० योगासन ४.०० सुहाग रात ४.०० विवाहित आनन्द ४.०० पत्नी पथ-प्रदर्शक ४.०० रति विज्ञान काम कला ४.०० तीन पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ।

गर्ग एण्ड कम्पनी, खारी बावली, दिल्ली-६

राजेश और तारा के प्रेम पत्र

हिन्दी में पहला अपनी तरह का उपन्यास जो पत्रों में लिखा गया है। राजेश और तारा दोंनों ही पात्र आपके परिचित हैं। विवाह पूर्व दोनों का पत्र व्यवहार, जो भारतीय मर्यादा और संस्कृति की सीमा के बाहर नहीं है। प्रत्येक गृहस्थी के साथ पढ़ा जा सकता है। शीघ्र विवाह होंने वाले युवक और युवतियों के लिए विशेष रूप से लिखा गया है। मू० ३) तीन रुपये डाक खर्च १ एक रुपया अलग।

प्रेम के बन्धन

हिन्दी साहित्य के तरुण और प्रतिभाशाली लेखक श्री ओमप्रकाश शर्मा का अनूठा उपन्यास जो समाज की कुरीतियों पर तीखी चोट और करारा व्यंग करता है, जिसे पढ़ने से आप अपना सब कुछ भूल जायेंगे। मूल्य ३) तीन रुपये डाक खर्च १) एक रुपया अलग।

डायरी के पन्ने [लेखक—ओमप्रकाश]

इसमें है प्रेम और सोसायटी की दर्दीली डायरियाँ। जिन्हें पढ़कर मन में टीस उठती है, और पात्रों के साथ ऐसी सहानुभूति हृदय में उत्पन्न होती है मानो वह अपने घर के ही हों। डायरी के रूप में एक श्रेष्ठ उपन्यास। पुस्तक हिन्दी तथा उर्दू दोनों ही भाषा में काफी लोकप्रिय है। मू० ३) तीन रुपये डाक खर्च १) एक रुपया अलग।

दो लड़कियाँ [लेखक—ताइर समर]

सोसायटी के नाम पर होने वाले गन्दे अनाचार का जिसमें भण्डा फोड़ा गया है। इसमें आपकी करतूतों और भावों पर पड़ा परदा खींच लिया गया है। मखमल में छिपे हुए उन काले घावों और सड़े हुए नासूरों को बेनकाब किया गया है, जो सोसाइटी के भीतर ही भीतर उसे सड़ाये दे रहे हैं और फिर समाज के ठेकेदार बने हुए हैं। इसमें ऐसे ही ऊँचे परिवार की लड़कियों की कहानी हैं। मूल्य ३) तीन रुपये डाक खर्च १) एक रुपया अलग।

गर्ग एण्ड को०, खारी बावली, दिल्ली-६

सचित्र फिल्मी अप्सरायें

भारत की प्रसिद्ध ऐक्ट्रेसों के हालात, किस-किस ऐक्ट्रेस ने किस-किस फ़िल्म में काम किया ? किस खानदान की है, कहाँ तक पढ़ी है, कौन-कौन सी ऐक्ट्रेस शादीशुदा है और उनके पतियों के नाम, उनके जीवन परिचय और सब एक्ट्रेसों के दर्जनों फोटो बढ़िया विलायती कागज पर दिये हैं। सचित्र किताब सुन्दर जिल्द में तैयार है। कीमत १) रु० डाक खर्च सहित।

सचित्र सुहाग रात

यह नव-दम्पतियों के लिये एक अपूर्व पुस्तक है जिसमें नव-दम्पतियों के जानने योग्य सभी विषयों पर तथा सम्भोग रहस्य, सुहाग रात का आनन्द गुप्त रोग और उनका इलाज इत्यादि का समावेश किया है। प्रभा के तीन पत्र अपनी सखी के नाम ने तो सोने में सुहागे का काम किया है। आज ही पढ़िये और जीवन का सच्चा आनन्द उठाइए। कीमत ३.०० डाकखर्च अलग।

रति रहस्य

इस पुस्तक में स्त्री व पुरुषों के भेद, स्त्रियों को वश में करने के तरीके, गर्भ धारण करने की शास्त्रोक्त विधि, गर्भ रक्षा के उपाय, स्त्री प्रेम करती है या नहीं, उसकी पहचान व स्त्रियों के अधरपान, आलिंगन के तरीके दिए गये हैं। ४ रंगीन चित्रों सहित सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४) मय पोस्टेज।

आज की धर्मपत्नियाँ

इसमें पति-पत्नी के दाम्पत्य जीवन में छूटने वाली फुलझड़ियों की चकाचौंध की जगमगाहट में जब व्यंग्तों के तीर छूटते है तो कामदेव के तीर भी ठण्डे पड़ जाते हैं। अपनी शैली की पहली पुस्तक जिसके पढ़ने में नवरस का आनन्द आता हैं। मूल्य ३·०० डाक खर्च सहित।

गर्ग एण्ड कम्पनी (F. P.) खारी बावली दिल्ली-६

बांसुरी गाइड

बांसुरी पर उंगली का चलाना और धुन निकाल कर सुरीली आवाज सुनना, जिसे सुन कर राधा भी कृष्ण के पास दौड़ी चली आती थीं। आप भी बांसुरी की मधुर धुन बजा कर तानसेन बन जायें। मूल्य ३·०० डाक खर्च सहित।

वशीकरण मंत्र

इस पुस्तक की सहायता से चाहे जिस स्त्री पुरुष को अपने वशीभूत कर मनचाहा काम ले सकते हैं। आकर्षण सुरमा बनाने की क्रिया राजदरबार में विजय पाना, लड़ाई में शत्रुओं को नीचा दिखाना, अपने ईष्ट-मित्र को मंत्रवश पर दूर देश से बुलाना, मुर्दों से बात-चीत करना आदि बातों का वर्णन है। मूल्य तीन रुपया डाक खर्च सहित।

आसाम बंगाल का जादू

इस पुस्तक से चाहे जो मनुष्य ऐसे-ऐसे अश्चर्यजनक खेल जैसे मनुष्य को गुप्त करना, मनुष्य को कुत्ता, बन्दर, मेंढा और बकरी आदि बनाना, डिब्बी में रुपया छुपाना, लोहे की गर्म जंजीर हाथ में पकड़ना, शरीर की शक्ल बदलना जादू की परी बनाना, मुंह से आग निकालना, दहकते हुए अंगारों पर नंगे पैरों चलना, कटे हुए सर का बोलना, अन्य प्रकार के जादू के खेल आसानी से कर सकते हैं। कीमत २·५०।

तेल साबुन बनाना सीखो

इसमें साबुन बनाने के अनेक तरीके लिखे गये हैं। आप नहाने और कपड़ा धोने दोनों का मन पसन्द साबुन अपने हाथ से घर पर ही बन सकते हैं। सिर में डालने के खुशबूदार तेल भी तैयार करने की विधियां दी गई हैं। मूल्म ४.०० डाक खर्च सहित।

गर्ग एन्ड कम्पनी खारी बावली दिल्ली-६

हायर सैकन्ड्री व बी० ए० पास करिये

छः रुपये में हायर सैकन्ड्री पास

इस पुस्तक की सहायता से आप घर बैठे ए० बी० सी० डी० से लेकर ग्रामर, ट्रांसलेशन, ऐस्से राइटिंग, लैटर राइटिंग सीखकर केवल एक घण्टा रोजाना पढ़कर तीन मास में हायर सेकन्ड्री परीक्षा पास कर सकते हैं। हजारों विद्यार्थी इस अकेली पुस्तक की मदद से हायर सैकन्ड्री परीक्षा पास कर चुके हैं। मूल्य ६.०० मय डाक खर्च।

बर्थ कन्ट्रोल

पत्नी की जवानी और सुन्दरता को सुरक्षित रखना पति के हाथ में है। यदि सन्तान कम और परिवार नियोजन के अनुसार होती है तो औरत कभी अधेड़ नहीं हो सकती और उसकी जवानी गदराने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इसके लिए पति-पत्नी को क्या करना चाहिए इस पुस्तक में पढ़ें। एक लाख नब्बे हजार प्रतियां अब तक बिक चुकी हैं। मूल्य ४.०० डाक-खर्च सहित।

फिल्म-स्टार एलबम

इस सजिल्द एलबम में चिकने विलायती कागज पर चमकदार छपाई में फिल्म-स्टार्स की तस्वीरें छापी गई हैं, जो देखने में असली फोटो जैसी लगती हैं। ये सब तस्वीरें पूरे साईज में हैं। इतने फिल्म-स्टारों की तस्वीरें आपको अन्य किसी एलबम में नहीं मिलेंगी। मूल्य ३.०० डाक खर्च सहित।

गर्ग एण्ड को० बुकसेलर, खारी बावली, देहली-६

9315
[illegible] दिल्ली एमण रेड्डी
कल्याणी रेड्डी स्मारक
[illegible]

मोटर मैकैनिक टीचर

हिन्दी भाषा में यह अमूल्य पुस्तक जिसकी वर्षों से प्रतीक्षा की
ा रही थी, छप कर तैयार है इस पुस्तक में वर्तमान समय की फोर्ड,
वरलेट, फियेट, हिन्दुस्तान, एम्बेसेडर आदि सभी मोटरकारों के इंजनों
बजली तथा वायरिंग हर एक पुर्जे के नाम, काम व उसकी मरम्मत
रना, चित्रों से युक्त यह पुस्तक इतने सरल ढंग से लिखी गई है कि
ठिन से कठिन बात भी बड़ी आसानी से समझ में आ जाती है। इस
नये काम सीखनेवाले तथा पुराने दोनों प्रकार के कारीगर लाभ उठा
केंगे और सभी वर्कशापों में काम सीखनेवाले ड्राइवर तथा उम्मीदवार
इंजन के इन्जीनियर, मोटर मालिक, मैकेनिक का काम सीखने के
म्मीदवारों की जानकारी के लिये पर्याप्त है। अगर आप के पास कार
तो इस पुस्तक को आप जरूर पढ़ें। इसके बाद आप कार के बिगड़े
र तुरन्त ठीक कर लिया करेंगे। मूल्य ६.०० डाक-खर्च सहित।

इलेक्ट्रिक वायरिंग

इन्जीनियरों, इलैक्ट्रिशयनों, विद्यार्थियों और सब मनुष्यों के लिए
ोकि बिजली के बारे में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हों, इलैक्ट्रिक
ायरिंग नाम की पुस्तक अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगी जिसमें
ायरिंग के विषय में जगह-जगह चित्र, नक्शे तथा टेबुल औरफोटो
ाक द्वारा पूरी-पूरी जानकारी कराई गई है, जिसमें हाऊस-वायरिंग,
ोवर-हैड वायरिंग, पावर वायरिंग, अंडर वायरिंग, डायरेक्ट करेंट
ोटर वायरिंग, आल्टरनेटिव करेंट मोटर वायरिंग, रेफ्रीजरेटर वायरिंग,
फ्लोरसेंट ट्यूब आदि-आदि का समस्त वर्णन किया गया है
ी सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५.०० डाक-खर्च सहित है।

तेल साबुन बनाना सीखे

इसमें साबुन बनाने के अनेक तरीके लिखे गये हैं
पड़ा धोने दोनों तरह का मन-पसन्द साबुन आप
ा सकते हैं। सिर में डालने के खुशबूदार तेल
ुस्खियां दी गई हैं। मूल्य ४.०० डाक खर्च स

गर्ग एण्ड को० खारी बाव

Regd with the registrar of news paper for
Under R. N. 10484/62

Rajesh Tara

Price Rs 1-0

A. H. W.

सचित्र चौदह विद्या चौसठ कला

१—वैद्य विद्या—सब प्रकार के रोगों के लक्षण की औषधि। २—कोक विद्या—स्त्री पुरुष के समस्त गुप्त विषयों का वर्णन। ३—शकुन विद्या—पक्षियों की बोली शकुन विचार। ४—योग विद्या—मृतक आत्माओं से बात चीत करना। ५—यन्त्र योग—बाल रक्षा, स्तम्भन, वशीकरण आदि यन्त्र। ६=यन्त्र विद्या—मोहन, उच्चाटन रोग हरण मन्त्रों की विधि। ७—तन्त्र विद्या इन्द्रजाल की माया व जादू के अद्भुत खेल। ८—ज्योतिषियों के कर्मफल व भविष्य जानने की विधि। ९ शिल्प विद्या हींग, इत्र नमक सुलेमानी बाल उड़ाने का साबुन, केश भूषण तेल, तम्बाकू, अर्क कपूर, खिजाब मोहर, स्याही आदि अनेक चीज बनाने की विधि। १०—राजनीति विद्या न्यायपूर्ण राज करने के नियमों का वर्णन तथा मालगुजारी कोर्टफीस आदि के नियम। ११ वस्तु विद्या गृह निर्माण सम्बन्धी ...न। १२—संगीत विद्या—दादरा. कव्वाली आदि बनाना ...ना। १३—रसायन विद्या—नकली सोना, चांदी और लोहा, तांबा आदि ... कृषि विद्या—खेती करने ... लाओं का बड़ा ही ... पेज केवल २॥) डाक ... पुस्तकालय ...

फोटो जैसी लगती हैं। ये सब ... स्टारों की तस्वीरें आपको अन्य ... १.०० डाक खर्च सहित।

गर्ग एण्ड को० बुकसेलर,

...शि...
...ल्याणी...